सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

शिक्षक संदर्शिका
कक्षा IX और X

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
प्रीत विहार

कक्षा IX और X का विद्यालय आधारित मूल्यांकन संबंधी शिक्षक नियम-पुस्तिका

मूल्य : रुपए

प्रथम संस्करण 2009 सर्वाधिकार सुरक्षित केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भारत

प्रतियां : 10,000

प्रकाशक : सचिव, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, शिक्षा केंद्र, 2, सामुदायिक केंद्र, प्रीत विहार, दिल्ली-110092

डिजाइन, विन्यास और चित्रांकनकर्ता : मल्टी ग्राफिक, 5745, रेगर पुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-110005,
दूरभाष : 25783846

मुद्रक : तारा आर्ट प्रिंटर प्रा. लिमिटेड, बी-4, हंस भवन, बी.एस. जफ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002,
दूरभाष : 23379686, 23378626, 23379491, मोबाइल : 9810186800

आभार

सलाहकार

श्री विनीत जोशी, अध्यक्ष एवं सचिव, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

प्रो. डी.वी. शर्मा, महासचिव, सी.ओ.बी.एस.ई.

प्रो. एच.एस. श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष, मापन और मूल्यांकन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

अनुवीक्षण समिति

- डॉ साधना पराशर, शिक्षा अधिकारी, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
- डॉ. आर. पी. शर्मा, परामर्शदाता, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

सामग्री उत्पादन समूह

- सुश्री अमीता मुल्ला वट्टल, प्रधानाचार्य, स्प्रिंगडेल्स स्कूल, पूसा रोड, नई दिल्ली।
- डॉ संगीता भाटिया, प्रधानाचार्य, न्यू स्टेट अकादमी, नई दिल्ली।
- सुश्री लता वैद्यनाथन, प्रधानाचार्य, मॉडर्न स्कूल, बाराखंबा रोड, नई दिल्ली।
- सुश्री ऋचा अग्निहोत्री, स्टेप बाई स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश।
- सुश्री नेहा शर्मा, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वसुंधरा।
- सुश्री अनिता लूथरा, स्प्रिंगडेल्स स्कूल, पूसा रोड, नई दिल्ली।
- सुश्री शुची बजाज, स्प्रिंगडेल्स स्कूल, पूसा रोड, नई दिल्ली।

संपादन

- डॉ साधना पराशर, शिक्षा अधिकारी, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
- डॉ. आर. पी. शर्मा, परामर्शदाता, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक (संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य) बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में, व्यक्ति की गरिमा और (राष्ट्र की एकता और अखण्डता) सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. को एतद्‌द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग क

मूल कर्त्तव्य

संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य के स्थान पर प्रतिस्थापित।

51क. मूल कर्त्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ.) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परीक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीवन हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई उंचाइयों को छू ले।

मानव संसाधन विकास मंत्री,
भारत सरकार, नई दिल्ली

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अपने सभी संबद्ध विद्यालयों में चालू शिक्षा सत्र से कक्षा IX में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की योजना कार्यान्वित कर रहा है। इससे पहले शिक्षा संबंधी बहुत-से राष्ट्रीय आयोगों द्वारा इस प्रकार की योजना की सिफारिश की गई थी पर स्कूलों में इसके क्रियान्वयन में बहुत देर हो गई।

परीक्षा-सुधारों के व्यापक लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इस योजना में यह परिकल्पना की गई है कि प्रत्येक विद्यार्थी का मूल्यांकन शिक्षा पाठ्यक्रम के समाप्त होने पर तीन घंटे की एकमुश्त, बाह्य परीक्षा द्वारा किए जाने की बजाय शिक्षा-प्राप्ति की समूची अवधि में किया जाना है। इसके अतिरिक्त, मूल्यांकन की प्रक्रिया में किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के सभी भागों को भी शामिल किया जाना चाहिए और उन सब पर विचार किया जाना चाहिए।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की ऐसी योजना न केवल शिक्षा के प्राप्त स्तरों और शिक्षा के क्षेत्रों में शिक्षा-प्राप्ति में बढ़ोतरी के लिए वांछनीय अतिरिक्त निविष्टियों के बारे में आवश्यक फीडबैक मुहैया करती है, बल्कि आवश्यक जीवन-कौशल, अभिवृत्तियों और मूल्य प्राप्त करने में, विद्यार्थियों की निपुणता पर और बहिरंग सह-पाठ्यक्रमों में, जिनमें खेल-कूद भी शामिल है, विद्यार्थियों की रुचि और उनकी उपलब्धियों पर भी समान रूप से ज़ोर देती है।

आशा है कि व्यक्तित्व की आवश्यक विशेषताओं और अन्य सह-शैक्षिक क्षेत्रों के विकास और उसके साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्रों में उपलब्धियों के वांछनीय स्तरों पर समुचित रूप से जोर दिए जाने से युवा विद्यार्थियों को बेहतर व्यक्तियों के रूप में विकसित होने में निश्चित रूप से सहायता मिलेगी और इससे वे सामाजिक आवश्यकताओं और राष्ट्रीय अपेक्षाओं में सार्थक रूप से योगदान देने में समर्थ होंगे। किसी व्यक्ति के संपूर्णवादी विकास में मन और मस्तिष्क दोनों को समान भूमिका निभानी होती है।

मैं केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और विशेष रूप से उसके अध्यक्ष और अन्य सभी व्यक्तियों और समूहों के प्रयासों की सराहना करता हूं, जिन्होंने इस दस्तावेज को तैयार करने में बहुमूल्य योगदान दिया है। आशा है कि

विद्यालय संबंधित क्रियाकलापों को हाथ में लेने और इस योजना को पूरी गंभीरता के साथ कार्यान्वित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएंगे।

शुभकामनाओं सहित

कपिल सिब्बल
मानव संसाधन विकास मंत्री

प्राक्कथन

मूल्यांकन का प्रयोजन यह देखना है कि क्या निर्धारित कार्यक्रम भली प्रकार चल रहा है, क्या कोई संस्था अपने लिए निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार सफल है, और क्या मूल आशय को सफलतापूर्वक पूरा किया जा रहा है। इसका कार्य किसी प्रक्रिया, उत्पाद अथवा कार्यक्रम की सामाजिक उपयोगिता, वांछनीयता अथवा प्रभावकारिता निर्धारित करना है और इनमें कुछ कार्रवाई की सिफारिश करना भी शामिल है। मूल्यांकन का अर्थ केवल शिक्षा-प्राप्ति के परिणामों के स्तर को मापना नहीं है, बल्कि यह प्रणाली में और अधिक सुधार करने की एक पद्धति भी है। विद्यार्थियों को सुधारात्मक सहायता प्रदान करने के लिय जरूरी है कि मूल्यांकन का स्वरूप नैदानिक और रचनात्मक प्रकार का हो।

बाह्य परीक्षाएं 21वीं शताब्दी के ज्ञान-समाज में और नवाचारी समस्या समाधानकर्ताओं की आवश्यकता के लिए अधिकांशतः अनुपयुक्त होती हैं। यदि प्रश्न अच्छी तरह से तैयार न किए गए हों, तो उनके लिए केवल रटने और याद करने की आवश्यकता होती है और वे विवेचन और विश्लेषण, पार्श्विक मनन, सृजनात्मकता और मूल्यांकन जैसे उच्च स्तर के कौशलों को जांचने में असफल रहते हैं। बाह्य परीक्षाएं भिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों को शिक्षा-प्राप्ति के भिन्न प्रकार के वातावरण के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़तीं और वे चिंता और दबाव का एक असाधारण स्तर उत्पन्न करती हैं।'' इसलिए स्कूल-आधारित मूल्यांकन के लिए एक कार्यात्मक और विश्वसनीय प्रणाली की आवश्यकता है।

(एन.सी.एफ. परीक्षा सुधारों के बारे में स्थिति पत्र)

हमें शिक्षार्थी के संपूर्णतावादी मूल्यांकन की ओर देखने की आवश्यकता है, जिसमें जीवन-कौशलों, अभिवृत्तियों और मूल्यों जैसे गुणों, खेलों तथा सह-पाठ्यक्रम क्रियाकलापों के विशेष संदर्भ में शिक्षार्थी की संवृद्धि के शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्र शामिल हैं। सी.सी.ई. योजना का लक्ष्य इसकी ओर संपूर्णतावादी तरीके से ध्यान देना है। इससे पहले बहुत-सी राष्ट्रीय समितियों और आयोगों ने निरंतर बाह्य परीक्षाओं पर दिए जाने वाले ज़ोर को घटाने और विद्यालय-आधारित सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा आंतरिक निर्धारण को प्रोत्साहित करने के बारे में सिफारिशें दी हैं।

सभी शिक्षाविदों द्वारा यह भी स्वीकार किया गया है कि मूल्यांकन को *'सीखने और सिखाने'* की प्रक्रिया में सुधार करने के एक सकारात्मक निवेश के रूप में कार्य करना चाहिए, एक निवारक के रूप में नहीं। मूल्यांकन के 'रिपोर्ट कार्ड' को शिक्षार्थी के न केवल शैक्षिक पहलुओं को, बल्कि जीवन-कौशलों की प्राप्ति, व्यक्तित्व की विशेषताओं, व्यवहार, रुचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों एवं आन्तरिक और बाहरी पाठ्यसहगामी क्रियाओं में प्रवीणता को भी दर्शाना चाहिए। इसे अंतर्निहित प्रतिभा को सामने लाने में भी सहायता देनी चाहिए तथा एक युवा शिक्षार्थी की संवृद्धि और रूपरेखा का सही चित्र प्रस्तुत करना चाहिए।

बोर्ड ने पहले वर्ष 2000 में संबद्ध विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर विद्यालय-आधारित मूल्यांकन योजना शुरू की थी। शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थी की उपलब्धियों को दर्शाने वाला एक उपलब्धि कार्ड तैयार किया गया था तथा उपयोग किए जाने के लिए इसे प्रत्येक विद्यालय को उपलब्ध कराया था। प्राथमिक स्तर के लिए एक अलग मूल्यांकन कार्ड तैयार किया गया था और विद्यालयों को विद्यार्थियों के व्यापक मूल्यांकन के लिए कार्ड का उपयोग करने की सलाह दी गई थी। लेकिन मूल्यांकन कार्ड में स्थानीय वातावरण के अनुकूल आवश्यक परिवर्तन करने के लिए आवश्यक छूट दी गई थी। उक्त दस्तावेज का उद्देश्य कोई नकारात्मक टिप्पणी किए बिना शिक्षार्थी की संपूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत करना था। शिक्षार्थी की सफलता की रूपरेखा दर्शाने के लिए एक पांच-सूत्री 'ग्रेडिंग' की सिफारिश की गई थी। विद्यार्थियों को दिनांक 12 जून, 2004 के परिपत्र संख्या 25/04 के जरिए केवल वर्ष के अंत में ली जाने वाली एकल परीक्षा के आधार पर विद्यार्थी को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण घोषित करने से बचने की सलाह भी दी गई थी।

बोर्ड ने कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रमाणपत्र का एक 'फार्मेट' भी तैयार किया था, जिसमें स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल अंतर्निहित लचीलेपन की व्यवस्था की गई थी। प्रत्यक्ष ग्रेडिंग पर आधारित एक पांच सूत्री 'ग्रेडिंग' पैमाने का सुझाव भी दिया गया था। यह अपेक्षा की गई थी कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की भावना से विद्यालयों को शैक्षिक और इसके अलावा सह-शैक्षिक अध्यवसायों में अधिक सिहरन लाने के लिए अपने क्रियाकलापों का विस्तार करने में सहायता मिलेगी। यह आशा की गई थी कि इससे विद्यार्थियों को अपनी रुचियों का विस्तार करने और विविधीकरण करने के अधिक अवसर प्राप्त होंगे और उनके लिए अपनी प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने के मार्ग खुलेंगे। चूंकि विद्यार्थी अपने जीवन के इन कुछ वर्षों के दौरान किशोरावस्था के पहले दौर में प्रवेश करते हैं, इसलिए यह उनकी ऊर्जा को सही दिशा में प्रवाहित करने का सर्वाधिक उपयुक्त समय होता है। यह जरूरी है कि विद्यालय विद्यार्थियों को वांछनीय जीवन-कौशलों का निर्माण करने के अधिक अवसर मुहैया करने की जिम्मेदारी लें और उन्हें सोच-समझकर स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाएं।

शिक्षकों की इस संदर्शिका में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की योजना, सह-शैक्षिक क्षेत्रों में मूल्यांकन के मूलभूत तत्त्वों, विद्यालय-आधारित मूल्यांकन के अत्यावश्यक आयामों, शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में मूल्यांकन के साधनों

और उसकी तकनीकों, प्रस्तावित विद्यालय-आधारित उपलब्धि रिकार्ड कार्ड के बारे में विस्तृत जानकारी और विद्यालयों में इस योजना के प्रभावकारी कार्यान्वयन के बारे में विस्तृत मार्गनिर्देश शामिल हैं। आवश्यक सैद्धांतिक प्रारूप और क्रियान्वयन की वांछित प्रक्रिया को शामिल करने का ध्यान रखा गया है। इस दस्तावेज में शिक्षार्थी की संवृद्धि के विभिन्न पहलुओं के बारे में आंकड़ों (डाटा) को सुनियोजित रूप से अभिलेखबद्ध करने, उनका विश्लेषण करने, उनकी व्याख्या करने और उनका उपयोग करने की आवश्यकता पर उपयुक्त रूप से बल दिया गया है ताकि निदान, उपचार और अधिगम का विकास किया जा सके।

विद्यालय-आधारित मूल्यांकन के प्रस्तावित प्रमाणपत्र को तीन भागों में विभाजित किया गया है। भाग 1 में शैक्षिक-क्षेत्र शामिल हैं। 9वीं और 10वीं कक्षा के विद्यार्थी के शैक्षिक कार्य-निष्पादन को ग्रेड और शतमांक श्रेणी (रैंक) के रूप में दर्शाया जाएगा। कक्षा 9 और कक्षा 10 के लिए वर्ष के दौरान दो अवधियों (टर्म्स) का सुझाव दिया गया है, पहली अवधि **अप्रैल से सितंबर** तक और दूसरी अवधि **अक्तूबर से मार्च** तक की होगी। प्रत्येक अवधि के लिए दो रचनात्मक और एक सारांशात्मक मूल्यांकन होंगे। शैक्षिक क्षेत्र का ग्रेडिंग पैमाना प्रत्यक्ष ग्रेडिंग पर आधारित एक नौ-सूत्री पैमाना है। भाग 2 में सह-शैक्षिक क्षेत्र शामिल हैं, जिनमें जीवन-कौशल, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों के मूल्यांकन के लिए एक तीन-सूत्री पैमाने का प्रस्ताव है। भाग 3 में सह-शैक्षिक क्रियाकलाप शामिल हैं, जिनमें साहित्यिक, वैज्ञानिक, सौंदर्यात्मक और क्लब क्रियाकलापों में भाग लेना सम्मिलित है। इस शीर्ष के अंतर्गत दूसरे उप-खंड में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा शामिल है। इन सभी क्षेत्रों में विद्यार्थियों का मूल्यांकन एक तीन-सूत्री पैमाने के अनुसार किए जाने का प्रस्ताव है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन दस्तावेज को शिक्षार्थी की रूपरेखा गतिकी (प्रोफाइल डाइनेमिक्स) के सकारात्मक अर्थ-निर्णय के रूप में देखा जाना चाहिए। यह जरूरी है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन योजना की मुख्य विशेषताओं के बारे में अध्यापकों के साथ चर्चा की जाए और उन्हें इस बात से संतुष्ट किया जाए कि बच्चों का मूल्यांकन करना कोई अतिरिक्त क्रियाकलाप नहीं है और न ही यह कोई अतिरिक्त बोझ है, जिसके लिए किसी अतिरिक्त प्रयास अथवा समय की आवश्यकता हो। विद्यालयों को बच्चों के माता-पिता को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ और उसके अर्थ से सुपरिचित कराने के लिए उनके साथ बातचीत भी करनी चाहिए, ताकि वे अपने बच्चों की क्षमता को समझने में सक्रिय भागीदार बनें। बोर्ड को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन योजना के बारे में विद्यालयों को मार्गनिर्देश जारी करते हुए प्रसन्नता हो रही है, जिसमें उनके तत्काल संदर्भ के लिए मूल्यांकन का तत्त्व-ज्ञान, उत्पत्ति, तकनीकें, साधन और अन्य ब्यौरा शामिल है।

समापन करने से पहले, मेरे लिए नैतिक रूप से यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण होगा कि प्रस्तावित दस्तावेज अध्यापकों, शिक्षाविदों, शिक्षा-प्रशासकों तथा मूल्यांकन विशेषज्ञों के साथ और इसके अलावा निस्संदेह रूप से

अकादमिक यूनिट के संकाय के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श की लंबी प्रक्रिया का परिणाम है। इस संबंध में दस्तावेज़ को उसका वर्तमान स्वरूप देने तथा उसका पुनरीक्षण करने के लिए किए गए अथक प्रयासों का, विशेष रूप से इस योजना की संकल्पना तैयार करने में और अकादमिक यूनिट के अधिकारियों, डॉ. साधना पराशर, शिक्षा अधिकारी और श्री आर.पी. शर्मा, परामर्शदाता के साथ इस दस्तावेज़ को अंतिम रूप देने में, विशेष रूप से प्रोफेसर एच.एस. श्रीवास्तव का उनके विशेषज्ञतापूर्ण मार्गदर्शन के लिए विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। श्रीमती अमीता मुल्ला वट्टल, डॉ. संगीता भाटिया और श्रीमती लता वैद्यनाथन अपने अध्यापकों सहित विशेष रूप से धन्यवाद की पात्र हैं।

मुझे आशा है कि विद्यालय, विद्यालय-आधारित मूल्यांकन की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन योजना का पालन सही भावना और अकादमिक ईमानदारी के साथ अपने विद्यार्थियों के समूचे हित के लिए करेंगे। मैं यह भी आशा करता हूं कि माता-पिता संपूर्ण मूल्यांकन की आवश्यकता को महसूस करेंगे और अपने बच्चों को सभी क्षेत्रों में कौशलों को विकास करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

(विनीत जोशी)

अध्यक्ष और सचिव

इसलिए शिक्षा को हमारे बच्चों में, जहां तक संभव हो, उतनी अधिक क्षमताओं और कौशलों को बढ़ावा देना चाहिए और उनका पोषण करना चाहिए। ऐसे कौशलों की परिधि में प्रदर्शन और अभिनय कलाएं (संगीत, नाटक आदि), चित्रकला और शिल्प और साहित्यिक योग्यताएं (कथा-लेखन, जीवन के विभिन्न पहलुओं के चित्रांकन के लिए भाषा का उपयोग, अलंकारिक और काव्यात्मक अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति आदि) शामिल हैं। इसके अलावा, बच्चों के अत्यंत विविध कौशलों का, जैसे कुछ बच्चों का प्रकृति के साथ, जैसे पेड़ों, पक्षियों और पशुओं के साथ जुड़ने की विशेष क्षमता का पोषण किया जाना जरूरी है।

शिक्षा के लक्ष्यों के बारे में स्थिति पत्र,
एन.सी.एफ. 2005, एन.सी.ई.आर.टी.

विषय-सूची

			पृष्ठ संख्या
	अध्याय-1	सतत् और व्यापक मूल्यांकन	1-15
	अध्याय-2	विद्यालय-आधारित सतत् और व्यापक मूल्यांकन	16-21
	अध्याय-3	माध्यमिक कक्षाओं में सतत् और व्यापक मूल्यांकन	22-51
	अध्याय-4	सह-शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन	52-74
	अध्याय-5	मूल्यांकन की तकनीकें और साधन	75-102
	अध्याय-6	विद्यालयों के लिए निहितार्थ	103-115
1.	अनुलग्नक	IX–X कक्षा के लिए सतत् और व्यापक मूल्यांकन की रूपरेखा	116-122
2.	अनुलग्नक	सतत् और व्यापक मूल्यांकन में मूल्यांकन के साधन	123-129
3.	अनुलग्नक	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परिपत्र	130-149
4.	अनुलग्नक	शब्दावली	150-173

वैयक्तिक स्तर पर छोटे पैमाने पर अथवा संस्थात्मक स्तर पर बड़े पैमाने पर एक योजनाबद्ध प्रयास के रूप में, शिक्षा का लक्ष्य बच्चों को समाज के सक्रिय, जिम्मेदार, उत्पादक और ध्यान रखने वाले सदस्य बनने के योग्य बनाना है। उन्हें कौशल और विचार प्रदान करके समाज की विभिन्न रीतियों से सुपरिचित कराया जाता है। आदर्श रूप में, शिक्षा से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों को अपने अनुभवों का विश्लेषण करने, उनका मूल्यांकन करने, संदेह करने, प्रश्न पूछने और अन्वेषण करने के लिए - दूसरे शब्दों में, उन्हें जिज्ञासु बनने और स्वतंत्र रूप से सोच-विचार करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

शिक्षा के लक्ष्यों के बारे में स्थिति पत्र,
एन.सी.एफ. 2005, एन.सी.ई.आर.टी.

अध्याय 1

सतत् और व्यापक मूल्यांकन

शिक्षा का लक्ष्य बच्चों को समाज के ज़िम्मेदार, उत्पादक और उपयोगी सदस्य बनने में समर्थ बनाना है। ज्ञान, कौशलों और अभिवृत्तियों का निर्माण अनुभवों से सीखने और विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए सृजित किए गए अवसरों से होता है। कक्षाओं में ही विद्यार्थी अपने अनुभवों का विश्लेषण और मूल्यांकन कर सकते हैं, संदेह करना, प्रश्न पूछना, छानबीन करना और स्वतंत्र रूप से सोच-विचार करना सीख सकते हैं।

समाज के प्रत्येक क्षेत्र में जो वैश्वीकरण हो रहा है, उसका शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है। हम देख रहे हैं कि शिक्षा का व्यापक रूप से वाणिज्यीकरण हो रहा है। हमें विद्यालयों को जिन्स बनाने के लिए पड़ रहे दबावों और विद्यालयों तथा विद्यालयों की गुणवत्ता पर बाज़ार से संबंधित संकल्पनाओं को लागू करने के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है। उत्तरोत्तर बढ़ती हुई प्रतियोगिता वाले वातावरण, जिसमें विद्यालयों को खींचा जा रहा है, और माता-पिता की आकांक्षाओं से बच्चों पर, जिनमें बहुत छोटे बच्चे भी शामिल हैं, तनाव और चिंता का बहुत भारी बोझ पड़ रहा है, जो वैयक्तिक संवृद्धि और विकास के लिए हानिकारक है और इस प्रकार सीखने अथवा शिक्षा-प्राप्ति के आनंद में बाधा डालता है।

इसके साथ-साथ शिक्षा के लक्ष्य समाज की मौजूदा आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, इसके शाश्वत मूल्यों, समुदाय के तात्कालिक सरोकारों तथा व्यापक मानव आदर्शों को दर्शाते हैं। किसी भी समय और किसी भी स्थान पर उन्हें व्यापक और चिरस्थायी मानवीय आकांक्षाओं और मूल्यों की समसामयिक और प्रासंगिक अभिव्यक्ति कहा जा सकता है।

शिक्षार्थियों, शैक्षिक लक्ष्यों, ज्ञान के स्वरूप और सामाजिक स्थान के रूप में विद्यालय के स्वरूप की जानकारी हमें कक्षा की कार्य पद्धति का मार्गनिर्देश करने वाले सिद्धांतों पर पहुंचने में सहायता देती है। इस प्रकार, संकल्पनात्मक विकास संबंधों को गहरा और समृद्ध बनाने तथा अर्थों की नई तहों तक पहुंचने की एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसके साथ-साथ, उन सिद्धांतों का विकास होता है, जो बच्चे दूसरों के संबंध में प्राकृतिक और सामाजिक संसारों के बारे में प्राप्त करते हैं और जो उन्हें इस बात का स्पष्टीकरण देते हैं कि वस्तुएं वैसी क्यों हैं जैसी कि वे हैं, कार्य-कारण के बी क्या संबंध है, और निर्णयों और कार्य का आधार क्या है। इस प्रकार, अभिवृत्तियों, भाव और मूल्य संज्ञानात्मक विकास के अभिन्न अंग हैं, और भाषा, मानसिक प्रस्तुतीकरण, संकल्पनाओं और विवेचन के विकास के अभिन्न अंग हैं, और भाषा, मानसिक प्रस्तुतीकरण, संकल्पनाओं और विवेचन के विकास के साथ जुड़े हुए हैं।

जब बच्चों की बहु-संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होता है तो वे स्वयं अपने विश्वासों से अधिक सुपरिचित हो जाते हैं और अपनी शिक्षा-प्राप्ति को विनियमित करने में सक्षम हो जाते हैं।

हम सूचना में डूब रहे हैं और ज्ञान की भूख से तड़प रहे हैं
- रूथरफोर्ड डी रोज़र्स

सीखने की विशेषताएं

- सभी बच्चे स्वाभावित रूप से सीखने के लिए प्रेरित होते हैं और सीखने में सक्षम होते हैं।

- अर्थ निकालना और गूढ़ चिंतन, चिंतन और कार्य करने की क्षमता विकसित करना शिक्षा प्राप्ति के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है।

- बच्चे अनेक प्रकार के तरीकों से सीखते हैं - अनुभव के जरिए, चीज़ें बनाकर और कार्य कार्य करके, प्रयोग करके, पढ़कर, चर्चा करके, पूछकर, सुनकर, विचार और चिंतन करके, वाणी, गतिविधि और लेखन के ज़रिए अपने आपको अभिव्यक्त करके - वैयक्तिक रूप से तथा दूसरों के साथ दोनों तरीकों से। उन्हें अपने विकास के दौरान इन सभी किस्मों के अवसरों की आवश्यकता होती है।

- संज्ञानात्मक रूप से तैयार होने से पहले बच्चों को कुछ सीखाना, उन्हें वास्तविक सिखाने से दूर होता है। बच्चे बहुत से तथ्यों को 'याद' कर सकते हैं, लेकिन संभवतः उन्हें समझ नहीं सकते अथवा वे उन्हें अपने चारों ओर के जगत के साथ जोड़ने में सक्षम नहीं हो सकते।

- बच्चा स्कूल के अंदर और बाहर दोनों स्थानों पर सीखता है। यदि दोनों क्षेत्रों में परस्पर अन्तःक्रिया होती है, तो सीखने अथवा शिक्षा-प्राप्ति में समृद्धि आती है। कला और कार्य उस संपूर्णतावादी शिक्षा-प्राप्ति के लिए अवसर मुहैया करते हैं, जो विपुल उपलक्षित और सौंदर्यपरक संघटक होते हैं। यह बहुत जरूरी है कि ऐसे अनुभव प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से सीखे जाएं, और जीवन के साथ उनका एकीकरण किया जाए।

- सीखने की गति इस प्रकार होनी चाहिए कि सीखने वाले संकल्पनाओं को आत्मसात कर सकें और उन्हें गहराई से समझ सकें, बजाय इसके कि वे उन्हें केवल याद कर लें और परीक्षा होने के बाद भूल जाएं। इसके साथ-साथ, सीखने में विविधता होनी चाहिए और उसे चुनौतियां प्रस्तुत करनी चाहिएं। सीखना रोचक और चित्ताकर्षक होना चाहिए। नीरसता इस बात का संकेत है कि कार्य बच्चे के लिए यांत्रिक रूप से बार-बार दोहराए जाने वाला कार्य बन गया है और उसका कोई संज्ञानात्मक मूल्य नहीं है।

- 'सीखना' मध्यस्थता के साथ अथवा उसके बिना हो सकता है। उत्तरोक्त के मामले में, सामाजिक संदर्भ और अन्योन्यक्रिया, विशेष रूप से उन लोगों के साथ जो सक्षम हों, सीखने वालों को उनके स्तर से उच्च संज्ञानात्मक स्तर पर कार्य करने की दिशा प्रदान करती है।

परीक्षाएं शिक्षा की प्रक्रिया के अपरिहार्य भाग हैं, क्योंकि अध्यापन और सीखने की प्रक्रियाओं की प्रभावकारिता का पता लगाने के लिए किसी न किसी प्रकार का मूल्यांकन करना आवश्यक है। विभिन्न आयोगों और समितियों ने परीक्षा-सुधारों की आवश्यकता महसूस की है। हंटर आयोग (1882), कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग अथवा सेडलर आयोग (1917-1919), हारटोग समिति रिपोर्ट (1929), केंद्रीय सलाहकार बोर्ड/सार्जेंट योजना (1944), माध्यमिक शिक्षा आयोग/मुदलियर आयोग (1952-53) इन सबने बाह्य परीक्षाओं पर दिए जाने वाले ज़ोर को घटाने और सतत तथा व्यापक मूल्यांकन के जरिए आंतरिक मूल्यांकन को प्रोत्साहन देने के बारे में सिफारिशें दी हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 में इस पहलू को पूरी तरह से ध्यान में रखा गया है; इसमें यह कहा गया है, ''सतत् और व्यापक मूल्यांकन, जिसमें मूल्यांकन के शैक्षिक और गैर-शैक्षिक दोनों पहलू शामिल हों, और जो शिक्षा की संपूर्ण अवधि के लिए हो'' {8.24(iii)}।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 1986 (एन.पी.ई.) की समीक्षा करने वाली समिति की रिपोर्ट, - भारत सरकार द्वारा 1991 में प्रकाशित सिफ़ारिश में ''सतत् व्यापक आंतरिक मूल्यांकन के मापदंड तय किए गए हैं और इस मूल्यांकन प्रणाली के दुरुपयोग को रोकने के सुरक्षोपायों के सुझाव दिए गए हैं'' {268(iv)}।

सी.ए.बी.ई. की नीति संबंधी रिपोर्ट में, जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जनवरी, 1992 में प्रकाशित की गई थी, मूल्यांकन प्रक्रिया और परीक्षा सुधारों के बारे में **एन.पी.ई.** के उपबंधों का उल्लेख किया गया है और ''विद्यार्थियों की शैक्षिक और गैर-शैक्षिक उपलब्धियों के सतत् और व्यापक आंतरिक मूल्यांकन'' का सुझाव भी दिया गया है (16.8)।

पिछले कुछ दशकों में सतत् और व्यापक विद्यालय-आधारित मूल्यांकन की आवश्यकता को बार-बार दोहराया गया है। कोठारी आयोग (1966) की रिपोर्ट में यह कहा गया था 'निम्न अथवा उच्च माध्यमिक स्तर (स्टेज) के अंत में, पाठ्यक्रम के पूरा होने पर, विद्यार्थी को विद्यालय से भी एक प्रमाणपत्र मिलना चाहिए, जिसमें उसके आंतरिक मूल्यांकन का रिकार्ड दिया गया हो, जैसाकि उसके संचित रिकार्ड में शामिल हो यह प्रमाणपत्र बाह्य परीक्षा के बारे में बोर्ड द्वारा दिए गए प्रमाणपत्र के साथ संलग्न किया जा सकता है....'' (9.81)। इसमें यह भी कहा गया है कि ''विद्यालयों द्वारा किया गया यह आंतरिक निर्धारण अथवा मूल्यांकन अधिक महत्वपूर्ण है और उसे अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए, यह व्यापक होना चाहिए और इसमें विद्यार्थियों की संवृद्धि के सभी पहलुओं का मूल्यांकन किया जाना चाहिए, जिन्हें बाह्य परीक्षा द्वारा मापा जाता है, और इसमें उस वैयक्तिक विशेषताओं, रुचियों और अभिवृत्तियों का उल्लेख भी होना चाहिए, जिनका निर्धारण इसके द्वारा नहीं किया जा सकता'' (9.84)।

माध्यमिक शिक्षा बोर्डों की भूमिका और स्थिति के बारे में कार्य बल की रिपोर्ट (1997) में यह कहा गया थाः ''हमारे सोच-विचार के अनुसार, स्कूल बोर्डों से विद्यालय प्रणाली के शैक्षिक, नवीकरण में केंद्रीय भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है। दूसरे शब्दों में, नेतृत्व बोर्ड से मिलना चाहिए।'' जब एक बार बोर्ड शिक्षा की इस अति महत्त्वपूर्ण और पूरक प्रणाली के बारे में प्रतिबद्ध हो जाएंगे और इसे ज़ोर से आगे बढ़ाएंगे तो इस नवीनता को अधिक से अधिक विद्यालय स्वीकार करना शुरू कर देंगे।

स्कूल शिक्षा बोर्डों को नया रूप देना (रीमाडलिंग) - माध्यमिक शिक्षा बोर्डों की भूमिका और स्थिति के बारे में कार्य बल की रिपोर्ट (1997) में सतत् और व्यापक मूल्यांकन **(सी.सी.ई.)** के तत्त्व-ज्ञान अथवा विचारधारा की व्याख्या की गई है (4.39)। इसमें यह कहा गया है कि ''बोर्डों से भिन्न किसी अन्य अभिकरण को सतत् और व्यापक मूल्यांकन को बढ़ावा नहीं देना चाहिए और इसीलिए उसने इस बात पर बल देने का प्रयास किया है कि बोर्डों को इस बारे में एक पथप्रदर्शक की भूमिका निभानी है'' (4.40)।

''बोझ के बिना सीखना'' - भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग द्वारा नियुक्त की गई राष्ट्रीय सलाहकार समिति की रिपोर्ट में यह कहा गया है किः

''कक्षा 9 और 10 के अंत में होने वाली बोर्ड परीक्षाएं कठोर, दफ्तरशाहीयुक्त और मूल रूप से गैर-शिक्षाप्रद बनी हुई हैं.............''

तद्नुसार, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा-2005 **(एन.सी.एफ.-05)** में परीक्षा सुधारों को प्रस्तुत करते समय यह कहा गया था - ''वास्तव में, बोर्डों को वैकल्पिक बनाने पर विचार करना चाहिए और इस प्रकार उसी विद्यालय में बने रहने वाले छात्रों को (और जिन्हें बोर्ड प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं है) इसके बजाय एक आंतरिक विद्यालय परीक्षा देने की अनुमति दे देनी चाहिए''।

उक्त के परिणामस्वरूप, **एन.सी.ई.आर.टी.** द्वारा तैयार किए गए 'परीक्षा सुधार' संबंधी स्थिति पत्र, 2006 में यह कहा गया है,

''वास्तव में, हमारा मत यह है कि दसवीं ग्रेड परीक्षा को अभी से वैकल्पिक बना दिया जाना चाहिए। दसवीं कक्षा के उन विद्यार्थियों को, जिनका इरादा उसी स्कूल में ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ाई जारी रखने का हो और जिन्हें किसी तात्कालिक प्रयोजन के लिए बोर्ड के प्रमाणपत्र की आवश्यकता न हो, बोर्ड की परीक्षा के स्थान पर विद्यालय द्वारा ली जाने वाली परीक्षा देने की छूट होनी चाहिए।''

मूल्यांकन की दिशा एक लक्ष्य की ओर होती है और शैक्षिक परिणामों की परख लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में की जाती है। इसलिए, विद्यालय में सीखने के जो अनुभव मुहैया किए जाते हैं, उन्हें वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने में योगदान देना चाहिए। अध्यापक को, संबंधित सीखने के अनुभवों के बारे में फैसला करते समय, शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों परिणामों को उस कार्यक्रम के वांछीय आचरणात्मक परिणामों के रूप में देखना चाहिए।

विद्यालयों में मूल्यांकन के दायरे का विस्तार शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लगभग सभी क्षेत्रों तक होता है। इसे शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों में शामिल करना चाहिए। यह शिक्षा के लक्ष्यों के अनुरूप है। मूल्यांकन सतत् होता है और शिक्षार्थियों की शक्तियों और कमज़ोरियों को बार-बार प्रकट करता है, ताकि शिक्षार्थियों को अपने आपको समझने और सुधार करने के बेहतर अवसर प्राप्त हों। इससे अध्यापकों को अपने अध्यापन कार्यनीति में फेर-बदल करने के लिए 'फीडबैक' भी प्राप्त होता है।

स्पष्टतः, सी.सी.ई. को कार्यान्वित करने में नेतृत्व प्रदान करने और एक पथप्रदर्शक की भूमिका निभाने के लिए

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रयास एक प्रमुख कदम है। इसके द्वारा शिक्षार्थी उपलब्धि स्तर के मूल्यांकन में विद्यालयों की स्थिति को बोर्ड के बराबर के भागीदारों के रूप में ऊंचा उठाने की कोशिश की गई है।

पाठ्यचर्या में मूल्यांकन का स्थान

पाठ्यचर्या एक संपूर्ण शिक्षण-अधिगम कार्यक्रम होता है, जिसमें समूचे लक्ष्य, पाठ्यक्रम, सामग्री, तरीके और मूल्यांकन शामिल होते हैं। संक्षेप में, यह ज्ञान और क्षमताओं का एक ढांचा (फ्रेमवर्क) मुहैया करता है, जो एक विशेष स्तर पर उपयुक्त समझा जाता है। पाठ्यचर्या प्रयोजन, साधनों और मानदंडों का एक विवरण उपलब्ध कराती है, जिसके अनुसार कार्यक्रम की प्रभावकारिता और शिक्षार्थियों द्वारा की गई प्रगति की जांच की जाती है। मूल्यांकन न केवल शिक्षार्थियों की प्रगति और उपलब्धियों को मापता है, बल्कि अध्यापन सामग्री और अध्यापन के लिए इस्तेमाल किए गए तरीकों की प्रभावकारिता को भी आंकता है। इसलिए, मूल्यांकन को, प्रभावकारी सुपुर्दगी और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में और सुधार करने के दोहरे प्रयोजन से, पाठ्यचर्या के एक संघटक के रूप में देखा जाना चाहिए।

उपयुक्त रूप से समझे जाने पर, मूल्यांकन अथवा निर्धारण को सीखने की अवधि के समाप्त होने पर अध्यापकों द्वारा ली जाने वाली और शिक्षार्थियों द्वारा दी जाने वाली किसी चीज़ के रूप में नहीं समझा जाएगा। जब मूल्यांकन को शिक्षा-प्राप्ति के प्रयास की समाप्ति के रूप में देखा जाएगा, तो अध्यापक और शिक्षार्थी दोनों में इसे अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया के बाहर रखने की प्रवृत्ति होगी, जिससे मूल्यांकन मोटे रूप में पाठ्यचर्या के लिए अप्रासंगिक और पराया हो जाएगा। इसके अलावा, ऐसा बोध मूल्यांकन को विद्यार्थी के लिए चिंता और दबाव के साथ जोड़ देता है। इसके विपरीत, यदि मूल्यांकन को अध्यापन-शिक्षाप्राप्ति की प्रक्रिया के एक अभिन्न अंग के रूप में देखा जाएगा, तो यह अध्यापन और शिक्षाप्राप्ति दोनों की तरह सतत् बन जाएगा। जब मूल्यांकन को अध्यापन और शिक्षा-प्राप्ति के अंदर सम्मिलित कर लिया जाएगा, तो शिक्षार्थी परीक्षणों और परीक्षा को भय के साथ नहीं देखेगा। **सतत् और व्यापक मूल्यांकन शिक्षा-प्राप्ति के निदान, उपचार और उसकी वृद्धि की ओर ले जाएगा।**

मूल्यांकन के परिणाम : प्रभावकारी अध्यापन और अधिगम के मूल तत्त्व

शिक्षा में सफलता का निर्धारण इस बात से किया जाता है कि शिक्षा-प्राप्ति के लक्ष्य किस हद तक प्राप्त किए गए हैं। लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर हुई प्रगति का निर्धारण और मूल्यांकन किया जाना जरूरी है, अन्यथा हम यह नहीं जान पाएंगे कि हम कहां जा रहे हैं।

विद्यालय के स्तर पर मूल्यांकन का एक मुख्य लक्ष्य शिक्षार्थियों को शैक्षिक क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों में सुधार करने और जीवन के बृहद् प्रसंग और जीवन-पटल के संदर्भ में जीवन-कौशल और अभिवृत्तियों का विकास करने में सहायता देना है।

इसके अतिरिक्त, **एन.पी.ई.** (1986) में इस बात पर बल दिया गया है कि स्कूल स्तर पर मूल्यांकन का स्वरूप रचनात्मक और विकासात्मक होना चाहिए, क्योंकि इस अवस्था में बच्चा सीखने के रचनात्मक दौर में होता है और इसलिए ज़ोर शिक्षा-प्राप्ति में सुधार करने पर दिया जाना चाहिए।

'सतत्' और 'व्यापक' मूल्यांकन क्या होता है?

सतत् और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का आशय विद्यार्थियों के विद्यालय-आधारित मूल्यांकन की उस प्रणाली के बारे में है, जिसमें विद्यार्थियों के विकास के सभी पहलुओं की ओर ध्यान दिया जाता है।

यह निर्धारण की विकासात्मक प्रक्रिया है, जो दोहरे उद्देश्यों पर बल देती है। ये लक्ष्य हैं, व्यापक आधार वाली शिक्षा-प्राप्ति का मूल्यांकन और निर्धारण और दूसरी ओर आचरणात्मक परिणामों का मूल्यांकन और निर्धारण।

इस योजना में, 'सतत्' शब्द का उद्देश्य इस बात पर बल देना है कि बच्चों की 'संवृद्धि और विकास' के अभिज्ञात पहलुओं का मूल्यांकन एक घटना होने की बजाय एक सतत प्रक्रिया है, जो अध्यापन - शिक्षा-प्राप्ति की संपूर्ण प्रक्रिया के अंदर निर्मित है और शैक्षिक सत्र की समूची अवधि में फैली होती है। इसका अर्थ है निर्धारण की नियमितता, यूनिट परीक्षण की आवृत्ति, शिक्षा-प्राप्ति की कमियों का निदान, सुधारात्मक उपायों का उपयोग, पुनः परीक्षण और अध्यापकों और छात्रों के स्व-मूल्यांकन के लिए उन्हें घटनाओं के प्रमाण का फीडबैक।

दूसरे शब्द 'व्यापक' का अर्थ है कि यह योजना विद्यार्थियों की संवृद्धि और विकास के शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को समाहित करने का प्रयास करती है। चूंकि योग्यताएं, अभिवृत्तियां और अभिरुचियां अपने आपको लिखित शब्दों से भिन्न अन्य रूपों में प्रकट करती हैं, इसलिए इस शब्द में विभिन्न प्रकार के साधनों और तकनीकों (परीक्षण और गैर-परीक्षण दोनों) के उपयोग और शिक्षा-प्राप्ति के क्षेत्रों में शिक्षार्थियों के विकास को आंकने के लक्ष्यों का उल्लेख किया गया है, जैसेः

- ज्ञान
- समझना/बोध
- अनुप्रयोग
- विश्लेषण
- मूल्यांकन
- सृजन

इस प्रकार, यह योजना एक पाठ्यचर्या संबंधी पहल है, जिसमें परीक्षण के स्थान पर संपूर्णवादी शिक्षा-प्राप्ति पर ज़ोर दिए जाने का प्रयास किया गया है। इसका लक्ष्य अच्छे स्वास्थ्य, उपयुक्त कौशलों और वांछनीय गुणवत्ता वाले और इसके अलावा शैक्षिक उत्कृष्टता वाले अच्छे नागरिकों का निर्माण करना है। आशा की जाती है कि यह विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का सामना विश्वास और सफलतापूर्वक करने के लिए सुसज्जित करेगी।

योजना के ये उद्देश्य हैं :

- संज्ञानात्मक, मनोप्रेरक (साइकोमोटर) और प्रभावकारी कौशलों का विकास करने में सहायता देना।
- चिंतन की प्रक्रिया पर जोर देना और कंठस्थ करने पर बल न देना।
- मूल्यांकन को अध्यापन-शिक्षाप्राप्ति की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना।
- मूल्यांकन का उपयोग नियमित निदान और उसके बाद उपचारात्मक अनुदेश के आधार पर विद्यार्थियों की उपलब्धियों और अध्यापन-शिक्षाप्राप्ति की कार्यनीतियों में सुधार करने के लिए करना।
- कार्य-निष्पादन का वांछित स्तर बनाए रखने के लिए मूल्यांकन का उपयोग एक गुणवत्ता नियंत्रण साधन के रूप में करना।
- किसी कार्यक्रम की सामाजिक उपयोगिता, वांछनीयता अथवा प्रभावकारिता निर्धारित करना और शिक्षार्थी, शिक्षा-प्राप्ति की प्रक्रिया और शिक्षा-प्राप्ति के वातावरण के बारे में उपयुक्त निर्णय लेना।
- अध्यापन और शिक्षा-प्राप्ति की प्रक्रिया को शिक्षार्थी-केंद्रित क्रियाकलाप बनाना।

किस बात का मूल्यांकन किया जाना चाहिए?

चूंकि शिक्षा का संबंध बच्चे के सर्वांगीण विकास (शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक, बौद्धिक, आदि) से है, इसलिए बच्चे के विकास के सभी पहुलओं को आंके जाने की आवश्यकता है। इस समय हम समूचे बच्चे को नहीं आंकते, बल्कि विशिष्ट क्षेत्रों में केवल उसकी शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हैं। हम शिक्षार्थी का मूल्यांकन बुनियादी रूप से उसके परीक्षा परिणामों के आधार पर करते हैं, हम सीखने के लिए किए गए प्रयास, कार्य-निष्पादन, अभिवृत्तियों का और जो कुछ सीखा गया है, उसका उपयोग विभिन्न स्थितियों में करने की योग्यता का मूल्यांकन नहीं करते, और न ही हम उनका मूल्यांकन इस आधार पर करते हैं कि वे तकनीकें कितने प्रभावकारी रूप से करती हैं अथवा विभिन्न सिद्धांतों का मूल्यांकन कितने विवेचनात्मक ढंग से करते हैं।

इस प्रक्रिया के स्वरूप को अधिक व्यापक बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे की शिक्षा-प्राप्ति का निर्धारण कक्षा के अंदर और बाहर की हर प्रकार की स्थितियों और वातावरण में किया जाए। यह ज़रूरी है कि निर्धारण अथवा मूल्यांकन की प्रक्रिया सूचना प्रदान करने के तरीके और इस फीडबैक का भाग हो कि स्कूल और अध्यापक शिक्षा के प्रत्याशित परिणाम प्राप्त करने में किस हद तक सफल हुए हैं।

बच्चे की शिक्षा-प्राप्ति का एक पूरा चित्र प्राप्त करने के लिए, मूल्यांकन का ध्यान इस बात पर केंद्रित होना चाहिए कि निम्नलिखित बातों के लिए शिक्षार्थी में कितनी योग्यता है :

- विभिन्न विषय क्षेत्रों के संबंध में वांछित कौशल सीखना और प्राप्त करना।
- विभिन्न विषय क्षेत्रों में अपेक्षित मात्रा में सफलता का स्तर प्राप्त करना
- बच्चे के वैयक्तिक कौशलों, रुचियों, अभिवृत्तियों और अभिप्रेरण का विकास।
- एक स्वस्थ और उत्पादक जीवन का अर्थ समझना और वैसा जीवन बिताना।
- समय-समय पर बच्चे के ज्ञान, आचरण और प्रगति में होने वाले परिवर्तनों को मानीटर करना।
- स्कूल के अंदर और स्कूल के बाहर दोनों स्थानों पर विभिन्न स्थितियों और अवसरों में प्रतिक्रिया।
- जो कुछ सीखा है, उसका उपयोग विभिन्न पर्यावरणों, परिस्थितियों और स्थितियों में करना।
- स्वतंत्र रूप से, मिलकर और सामंजस्यपूर्ण तरीके से कार्य करना।
- विश्लेषण और मूल्यांकन।
- सामाजिक और पर्यावरणिक मुद्दों से सुपरिचित होना।
- सामाजिक और पर्यावरणिक परियोजनाओं में और उद्देश्यों के लिए भाग लेना।
- जो कुछ सीखा है, उसे याद करना।

भविष्य के विद्यालयों के लिए यह जरूरी होगा कि वे अपने शिक्षार्थियों में जोखिम लेने, अनुकूलनीय बनने, लचीला बनने की योग्यता और निरंतर होने वाले परिवर्तनों का सामना करने और जीवन भर शिक्षार्थी बने रहने की योग्यता विकसित करें। इस संदर्भ में, शिक्षार्थी सक्रिय नेता और अध्यापक समर्थ बनाने वाले बन जाते हैं।

यह देखने से पहले कि निर्धारण किस प्रकार किया जाना है, अध्यापकों के लिए यह जरूरी है कि वे यह निर्धारित करें कि माध्यमिक स्तर पर किन उद्देश्यों को प्राप्त किया जाना है। उन्हें यह देखने की ज़रूरत है कि माध्यमिक शिक्षा को बच्चों के अंदर न केवल संज्ञानात्मक क्षेत्र में, बल्कि मनोप्रेरक और प्रभावकारी क्षेत्रों में क्या विकसित करना चाहिए। उन्हें मूल्यांकन की कसौटियों और पद्धतियों में उपयुक्त विशेषताओं के साथ-साथ विभिन्न आयु-संबंधित सूचकांकों और आचरणों को भी शामिल करना चाहिए। उन्हें यह निर्धारित करने की भी जरूरत है कि

माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पूरा होने पर वे शिक्षार्थी से क्या अपेक्षाएं करते हैं, और विभिन्न पहलुओं और ज्ञान के क्षेत्रों के संबंध में किस प्रकार की 'प्रोफाइल रिपोर्ट' की ज़रूरत है, जो बच्चे के तेज़ी से बदलते हुए वैयक्तिक विकास को दर्शाती हो।

यह निर्धारण अथवा मूल्यांकन एक उपयोगी, वांछनीय और एक समर्थकारी प्रक्रिया है। इसे पूरा करने के लिए, हमारे लिए निम्नलिखित प्राचलों को ध्यान में रखना जरूरी है।

निम्नलिखित किए जाने की आवश्यकता :

- विद्यार्थी का मूल्यांकन करना।
- शिक्षार्थी के ज्ञान और पाठ्यक्रम के विषयों और अन्य विषयों के बारे में उसकी प्रगति के बारे में सूचना एकत्र करने के लिए विविध प्रकार के तरीकों का उपयोग करना।
- सूचना निरंतर एकत्र करते रहना और उसे अभिलेखबद्ध करना।
- प्रत्येक विद्यार्थी के प्रत्युत्तर देने और सीखने के तरीके और उसमें लगने वाले समय को महत्त्व देना।
- निरंतर आधार पर रिपोर्ट देना और प्रत्येक विद्यार्थी की अनुक्रिया के बारे में संवेदनशील होना।
- 'फीडबैक' मुहैया करना, जिससे सकारात्मक कार्रवाई की जा सकेगी और विद्यार्थी को बेहतर ढंग से कार्य करने में सहायता मिलेगी।

मूल्यांकन की प्रक्रिया में, निम्नलिखित कार्य न करने का ध्यान रखना :

- शिक्षार्थियों को मंद, कमजोर, बुद्धिमान आदि के रूप में वर्गीकृत करना।
- उनके बीच तुलना करना।
- नकारात्मक बयान देना

निर्धारण कब किया जाना चाहिए?

क्या निर्धारण किया जाना चाहिए, इसके साथ बच्चे की प्रगति की नियतकालिकता का नाजुक प्रश्न जुड़ा हुआ है। संपूर्णतावादी शिक्षा में शिक्षा-प्राप्ति के परिणामों का मूल्यांकन अध्यापन-शिक्षाप्राप्ति की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा-प्राप्ति के प्रत्येक सत्र में तीन भाग शामिल होने चाहिएंः **शिक्षा प्राप्ति की प्रक्रिया, जो सीखा गया है,**

उसका अनुप्रयोग, और जो सीख गया है, उसका मूल्यांकन। यह एक ऐसा तरीका है जिससे शिक्षा-प्राप्ति और मूल्यांकन को मिलाया जा सकता है।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन करने के लिए, शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों पहलुओं को समुचित मान्यता दी जानी जरूरी है। ऐसे संपूर्णवादी मूल्यांकन के लिए प्रत्येक विद्यार्थी का एक चालू, बदलता हुआ और व्यापक विवरण रखना जरूरी है, जो ईमानदार, उत्साहजनक और विवेकपूर्ण हो। हालांकि अध्यापक प्रतिदिन उपचारात्मक कार्यनीतियों पर विचार करते हैं, उनकी योजना बनाते हैं और उन्हें कार्यान्वित करते हैं, लेकिन यह भी ज़रूरी है कि बच्चे ने किसी अवधि में जो कुछ सीखा है, उसे बनाए रखने और उसे व्यक्त करने की उसकी योग्यता का निर्धारण आवधिक रूप से किया जाए। ये निर्धारण कई रूप ले सकते हैं, लेकिन यह सब यथासंभव हद तक व्यापक और विवेकपूर्ण होने चाहिएं। बच्चों में न केवल ज्ञान प्राप्त करने और उसे याद रखने, बल्कि उनके ललित कौशलों को भी बढ़ावा देने के लिए सामान्य रूप से साप्ताहिक, पाक्षिक अथवा तिमाही समीक्षाओं की (शिक्षा-प्राप्ति के क्षेत्रों के आधार पर) सिफारिश की जाती है, जो खुले रूप से एक शिक्षार्थी की तुलना किसी अन्य शिक्षार्थी से नहीं की जाती और जो सकारात्मक और रचनात्मक अनुभव होती है।

अध्यापन-शिक्षा-प्राप्ति की प्रक्रिया में सुधार करने के लिए निर्धारण रचनात्मक और सारांशात्मक होना चाहिए।

रचनात्मक और सारांशात्मक निर्धारण

रचनात्मक संधारण एक ऐसा साधन है, जिसका उपयोग अध्यापक द्वारा विद्यार्थी की प्रगति को एक ऐसे वातावरण में मानीटर करने के लिए किया जाता है, जो घबराहट पैदा करने वाला न हो और प्रोत्साहन देने वाला हो। इसमें विद्यार्थी को नियमित फीडबैक मुहैया करना और उसे अपने कार्य-निष्पादन पर विचार करने, सलाह प्राप्त करने और उसमें सुधार करने का अवसर प्रदान करना शामिल है। इसमें विद्यार्थियों को स्व-मूल्यांकन करने अथवा अपने समकक्षों का मूल्यांकन करने की कसौटियां तय करने के एक आवश्यक भाग के रूप में शामिल किया जाता है। यदि इसे प्रभावकारी रूप से उपयोग में लाया जाए, तो यह बच्चे के आत्म-सम्मान को बढ़ाते हुए और अध्यापक के कार्य-भार को घटाकर, विद्यार्थी के कार्य-निष्पादन में ज़बरदस्त सुधार कर सकता है।

रचनात्मक निर्धारण की कुछ मुख्य विशेषताएं ये हैं :

- यह नैदानिक और उपचारात्मक है।
- प्रभावकारी फीडबैक की व्यवस्था करता है।
- विद्यार्थियों को स्वयं अपनी शिक्षा-प्राप्ति में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए मंच उपलब्ध कराता है।
- अध्यापकों को निर्धारण के परिणामों को ध्यान में रखने के लिए अध्यापन को समायोजित करने में समर्थ बनाता है।

- निर्धारण का विद्यार्थियों के अभिप्रेरण और आत्म-सम्मान पर जो गहरा प्रभाव पड़ता है, उसे स्वीकार करना; अभिप्रेरण और आत्म-सम्मान दोनों का शिक्षा-प्राप्ति पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है।
- यह इस बात की आवश्यकता को स्वीकार करता है कि विद्यार्थियों को अपना स्व-मूल्यांकन करने और यह समझने में समर्थ होना चाहिए कि सुधार कैसे किया जाए।
- जो सिखाया जाता है, उसका डिज़ाइन विद्यार्थियों के पहले के ज्ञान और अनुभव के आधार पर तैयार करना।
- क्या पढ़ाया जाए और कैसे पढ़ाया जाए, इसका फैसला करने में शिक्षा-प्राप्ति की विविध शैलियों को शामिल करना।
- विद्यार्थियों को उन मानदंडों को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिनका उपयोग उनके कार्य को परखने के लिए किया जाएगा।
- विद्यार्थियों को फीडबैक के बाद अपने कार्य में सुधार करने का अवसर प्रदान करता है।
- विद्यार्थियों को अपने समकक्ष विद्यार्थियों का समर्थन करने और उनके द्वारा समर्थन दिए जाने की अपेक्षा करने में सहायता देता है।

इस प्रकार, रचनात्मक निर्धारण कार्य-संपादक अथवा शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रियाओं और शिक्षा-प्राप्ति के क्रियाकलापों में उपयुक्त संशोधन करने के बारे में निर्णय लेने के लिए अध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों को निरंतर फीडबैक मुहैया करने के लिए शिक्षा की अवधि के दौरान किया जाता है।

सारांशात्मक निर्धारण शिक्षा पाठ्यक्रम के समाप्त होने पर किया जाता है। यह मापता है अथवा जोड़ता है कि विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम से क्या सीखा है। यह आमतौर पर एक श्रेणीकृत (ग्रेडेड) परीक्षण होता है, अर्थात् इसमें एक पैमाने के अनुसार अथवा ग्रेडों के एक सेट के अनुसार अंक दिए जाते हैं।

वह निर्धारण, जो मुख्यतः सारांशात्मक प्रकृति का होगा, अपने आप में बच्चे की संवृद्धि और उसके विकास का कोई संगत एवं युक्तिसंगत पैमाना नहीं होगा। अधिक से अधिक यह एक समय-विशेष पर उपलब्धि के स्तर को प्रमाणित करता है। काग़ज-पेंसिल परीक्षण बुनियादी रूप से निर्धारण अथवा मूल्यांकन का एक एक-बार अपनाया जाने वाला तरीका है और किसी बच्चे के विकास के बारे में केवल इसका सहारा लेना न केवल अनुचित है, बल्कि अवैज्ञानिक भी है। केवल शैक्षिक पहलुओं पर ध्यान देते हुए परीक्षा में प्राप्त अंक पर बहुत अधिक जोर देने से, बच्चे यह मान लेते हैं कि निर्धारण अर्थात् मूल्यांकन शिक्षा-प्राप्ति से भिन्न है, जिसका परिणाम 'सीखो और भूल जाओ' लक्षण होता है। सारांशात्मक निर्धारण प्रणाली पर आवश्यकता से अधिक ज़ोर देने से अस्वास्थ्यकर प्रतियोगिता को प्रोत्साहन मिलने के अलावा, शिक्षार्थियों पर बहुत अधिक दबाव पड़ता है और उनमें चिंता उत्पन्न होती है। इसी कारण से सतत् और व्यापक विद्यालय-आधारित मूल्यांकन की संकल्पना का प्रादुर्भाव हुआ है।

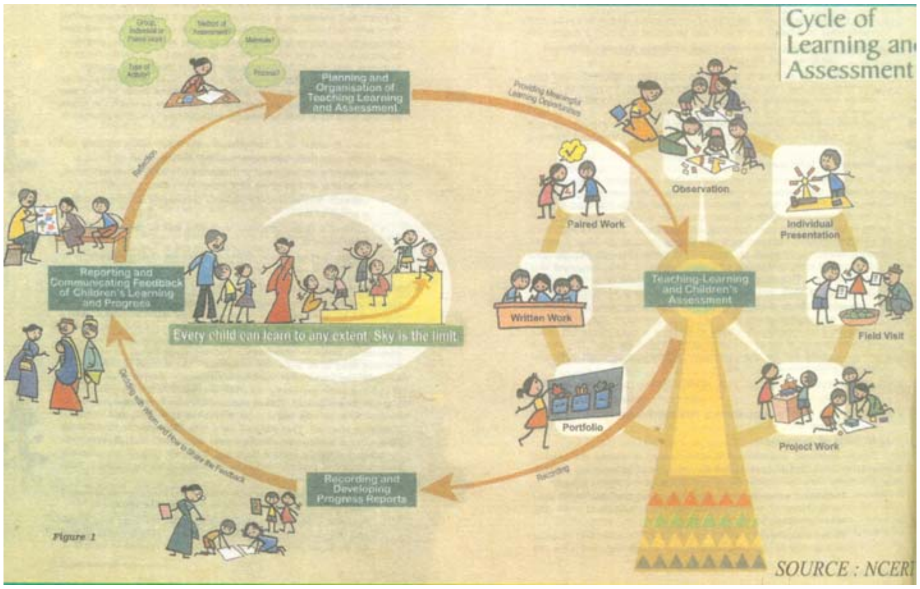

चित्र

सतत् और व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएं

- सतत और व्यापक मूल्यांकन के 'सतत्' पहलू के अंतर्गत मूल्यांकन के 'सतत' और 'आवधिक' पहलू का ध्यान रखा जाता है।
- निरंतरता का अर्थ है शिक्षा के प्रारंभ में विद्यार्थियों का निर्धारण (स्थापन मूल्यांकन) और शिक्षण प्रक्रिया के दौरान निर्धारण (रचनात्मक मूल्यांकन), जो मूल्यांकन की बहुविध तकनीकों का उपयोग करके, अनौपचारिक रूप से किया जाता है।
- नियतकालिकता का अर्थ है कार्य-निष्पादन का निर्धारण, जो यूनिट/अवधि के समाप्त होने पर बार-बार किया जाता है (सारांशात्मक)।
- सतत् और व्यापक मूल्यांकन का 'व्यापक' संघटक बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास के निर्धारण का ध्यान रखता है। इसमें विद्यार्थियों के विकास के शैक्षिक और इसके अलावा सह-शैक्षिक पहलुओं का निर्धारण शामिल है।
- शैक्षिक पहलुओं में पाठ्यक्रम के क्षेत्र अथवा विषय-सापेक्ष क्षेत्र शामिल होते हैं, जबकि सह-शैक्षिक पहलुओं में जीवन-कौशल, सह-पाठ्यचर्या अभिवृत्तियां और मूल्य शामिल होते हैं।
- शैक्षिक क्षेत्रों में निर्धारण, निरंतर और नियतकालिक रूप से मूल्यांकन की बहुविध तकनीकों का इस्तेमाल करके अनौपचारिक और औपचारिक रूप से किया जाता है। नैदानिक मूल्यांकन यूनिट/परीक्षा के समाप्त होने पर किया जाता है। कुछ यूनिटों में घटिया कार्य-निष्पादन के कारणों का पता नैदानिक परीक्षणों का उपयोग करते हुए लगाया जाता है। इसके बाद उपयुक्त रूप से हस्तक्षेप किया जाता है और कार्रवाई की जाती है और तत्पश्चात् पुनः परीक्षण किए जाते हैं।
- सह-शैक्षिक क्षेत्रों में निर्धारण निर्धारित मानदंडों के आधार पर बहुविध तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए किया जाता है, जब जीवन-कौशलों का निर्धारण निर्धारण के सूचकों और जांच-सूचियों के आधार पर किया जाता है।

रचनात्मक और सारांशात्मक निर्धारण

शिक्षार्थी के ज्ञान, जानकारी, अनुप्रयोग, मूल्यांकन, और विषयों में सृजन से संबंधित बांछनीय व्यवहार और अपरिचित स्थिति में उसका उपयोग करने की योग्यता शैक्षिक क्षेत्र के कुछ उद्देश्य हैं।

शिक्षार्थी के जीवन-कौशलों, अभिवृत्तियों, रुचियों, मूल्यों, सह-पाठ्यक्रम क्रियाकलापों और शारीरिक शिक्षा से संबंधित वांछनीय व्यवहार का वर्णन, सह-शैक्षिक क्षेत्र में प्राप्त किए जाने वाले कौशलों के रूप में किया जाता है।

शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित उद्देश्यों को प्राप्त करने में विद्यार्थियों की प्रगति को आंकने की प्रक्रिया को व्यापक मूल्यांकन कहा जाता है। यह देखा गया है कि आमतौर पर किसी विषय के तथ्यों, उसकी संकल्पनाओं, उसके सिद्धांतों, आदि के ज्ञान और उनकी समझ जैसे शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन किया जाता है। सह-शैक्षिक तत्वों को या तो मूल्यांकन की प्रक्रिया से बिल्कुल बाहर रखा जाता है अथवा उनकी ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। मूल्यांकन को व्यापक बनाने के लिए, शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को महत्त्व दिया जाना चाहिए। संवृद्धि के सह-शैक्षिक पहलुओं के मूल्यांकन के सरल और प्रबंधकीय तरीकों को व्यापक मूल्यांकन स्कीम में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति संबंधी दस्तावेज, 1986, जिसका 1992 में संशोधन किया गया है, में भी इस बात का उल्लेख किया गया है कि मूल्यांकन योजना में शिक्षा के विषयों और सह-शिक्षा के सभी शिक्षण संबंधी अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए।

व्यापक मूल्यांकन के लिए अनेक प्रकार की तकनीकों और साधनों का उपयोग करना जरूरी होगा। इसका कारण यह है कि शिक्षार्थी की संवृद्धि के विभिन्न विशिष्ट क्षेत्रों का मूल्यांकन कतिपय विशेष तकनीकों के जरिए किया जा सकता है।

व्यापक और सतत मूल्यांकन के कार्य

अध्यापन-शिक्षाप्राप्ति प्रक्रिया में, मूल्यांकन से शैक्षिक और सह-शैक्षिक पहलुओं का ध्यान रखने की अपेक्षा की जाती है। यदि कोई किसी क्षेत्र में कमज़ोर है, तो नैदानिक मूल्यांकन किया जाना चाहिए और उपचारी उपाय अपनाए जाने चाहिएं।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन के महत्वपूर्ण कार्य ये हैं :

- यह अध्यापक को प्रभावकारी कार्यनीतियां आयोजित करने में सहायता देता है।
- सतत मूल्यांकन शिक्षार्थी की प्रगति की सीमा और मात्रा को नियमित रूप से आंकने में सहायता देता है (विशिष्ट शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों के संदर्भ में योग्यता और उपलब्धि)।
- सतत मूल्यांकन कमज़ोरियों का निदान करने का कार्य करता है और अध्यापक को अलग-अलग शिक्षार्थियों की शक्तियों और कमज़ोरियों और उसकी आवश्यकताओं का पता लगाने में सहायता देता है। यह अध्यापक

को तत्काल फीडबैक मुहैया करता है, जो तब यह फैसला कर सकता है कि कोई विशेष यूनिट अथवा संकल्पना समूची कक्षा को फिर से पढ़ाए जाने की आवश्यकता है अथवा केवल कुछ शिक्षार्थियों को उपचारी शिक्षा की आवश्यकता है।

- सतत् मूल्यांकन के द्वारा, बच्चे अपनी शक्तियों और कमज़ोरियों को जान सकते हैं। यह बच्चों का अध्ययन की अच्छी आदतें विकसित करने, गलतियों को सुधारने और अपने क्रियाकलापों को वांछित लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में मोड़ने के लिए अभिप्रेरित कर सकता है। इससे शिक्षार्थी को शिक्षा के उन क्षेत्रों को निर्धारित करने में सहायता मिलती है, जिनमें अधिक जोर दिए जाने की आवश्यकता हो।

- सतत् और व्यापक मूल्यांकन अभिरुचियों और प्रवृत्ति वाले क्षेत्र अभिज्ञात करता है। यह अभिवृत्तियों, और मूल्य प्रणालियों में होने वाले परिवर्तनों का पता लगाने में सहायता देता है।

- यह विषयों, पाठ्यक्रमों और जीवनवृत्तियों (कैरियर) के चुनाव के बारे में, भविष्य के लिए फैसले करने में सहायता देता है।

- यह शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थियों की प्रगति के बारे में सूचना/रिपोर्टें देता है और इस प्रकार शिक्षार्थी की भावी सफलताओं के बारे में पूर्वानुमान लगाने में सहायता देता है।

सतत मूल्यांकन समय-समय पर बच्चे, अध्यापकों और माता-पिता को उपलब्धि के बारे में जागरूक बनाने में सहायता देता है। यदि उपलब्धि में कोई कमी हुई हो, तो वे उसके संभाव्य कारणों की जांच कर सकते हैं और शिक्षा के उस क्षेत्र में, जिसमें अधिक जोर देने की आवश्यकता हो, उपचारी उपाय कर सकते हैं।

बहुत बार ऐसा होता है कि कुछ वैयक्तिक कारणों, पारिवारिक समस्याओं अथवा समायोजन की समस्याओं के कारण, बच्चे अपने अध्ययन की उपेक्षा करना शुरू कर देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी उपलब्धि में अचानक गिरावट आ जाती है।

यदि अध्यापक, बच्चे और माता-पिता को उपलब्धि में अचानक आई गिरावट का पता न चले, तो बच्चे द्वारा अपने अध्ययन की उपेक्षा लंबे समय तक की जाती रहती है और इसके परिणामस्वरूप उपलब्धि घटिया हो जाती है और बच्चे की शिक्षा-प्राप्ति में स्थायी रूप से त्रुटि रह जाती है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन का मुख्य जोर विद्यार्थियों की निरंतर संवृद्धि पर और उनका बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित करने पर होता है और इसलिए यह विद्यार्थी की केवल शैक्षिक उपलब्धियों को आंकने तक सीमित नहीं होगा। यह मूल्यांकन का उपयोग शिक्षार्थियों को अन्य कार्यक्रमों के लिए अभिप्रेरित करने, सूचना प्रदान करने, फीडबैक की व्यवस्था करने और शिक्षा में शिक्षाप्राप्ति में सुधार करने के लिए अनुवर्ती कार्रवाई करने, और शिक्षार्थी के विवरणों का एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करने के एक साधन के रूप में करता है।

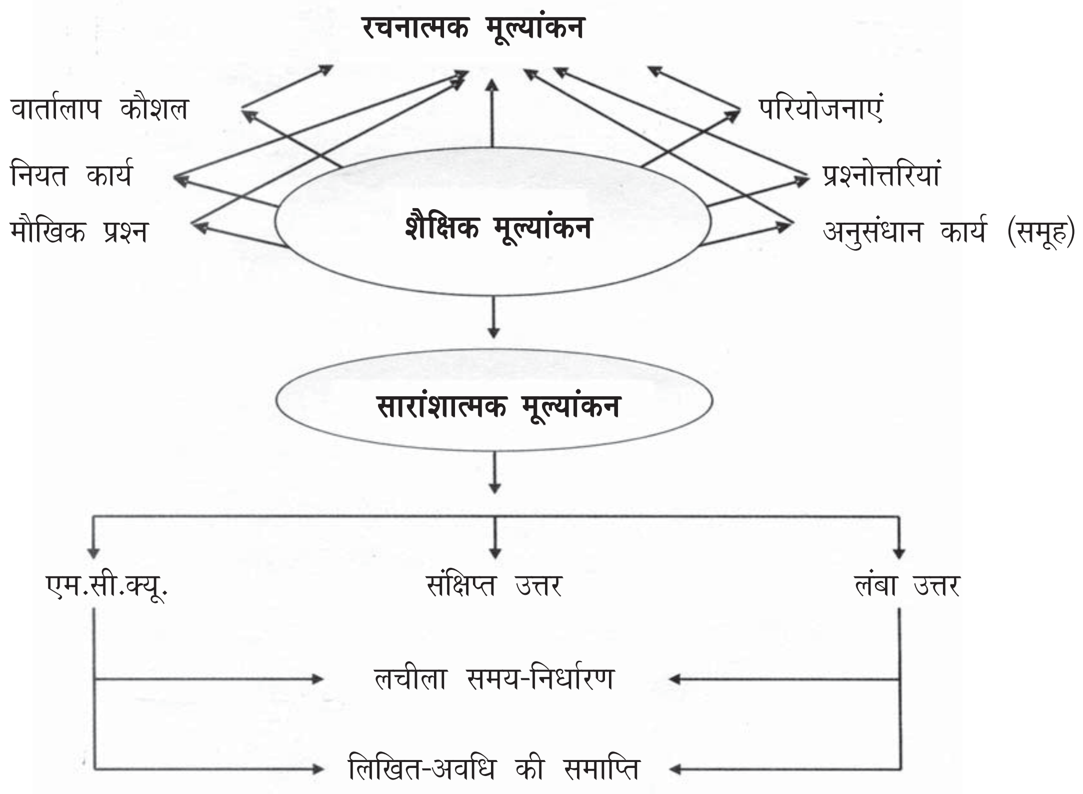

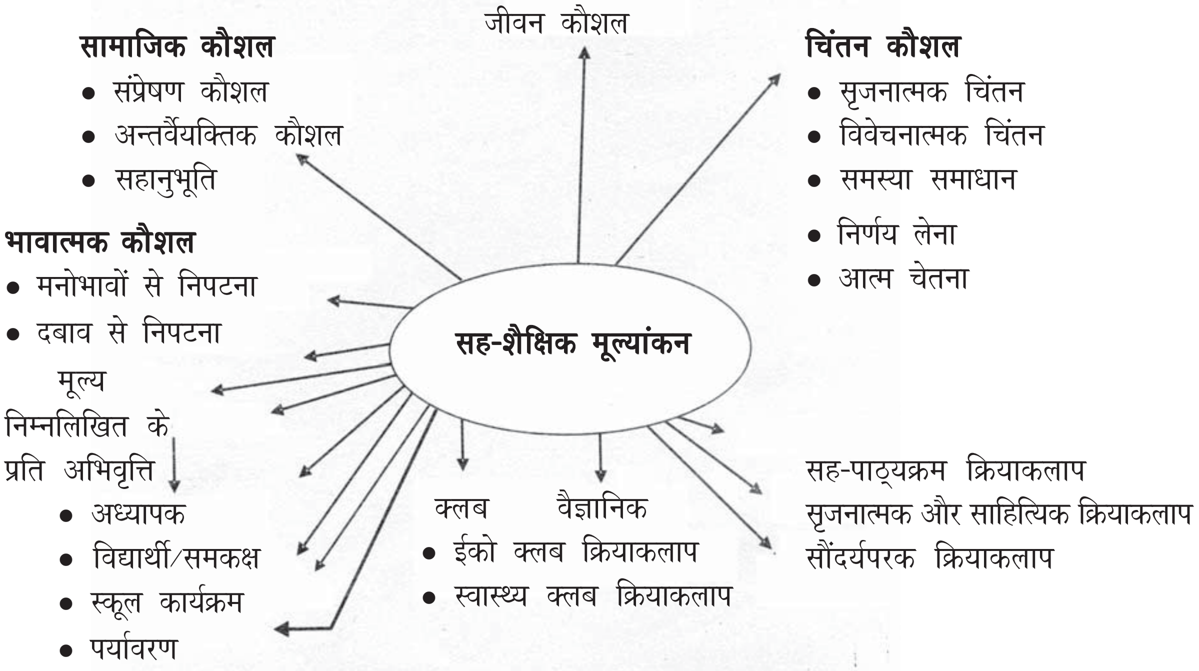

विविध क्षेत्रों में उत्कृष्टता को मान्यता दी जानी चाहिए और पुरस्कृत किया जाना चाहिए। मूल्यांकन का ध्यान जो कुछ सिखाया गया है, उसे याद रखने के स्थान पर, उसके प्रति बच्चों की अनुक्रिया पर केंद्रित होना चाहिए।

शिक्षा के लक्ष्यों के बारे में स्थिति पत्र - **एन.सी.एफ.** 2005, **एन.सी.ई.आर.टी.**

अध्याय 2

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में विद्यालय-आधारित सतत और व्यापक मूल्यांकन

अधिगम का मूल्यांकन क्या है?

अधिगम के मूल्यांकन में उपलब्ध प्रमाणों के साथ कार्य करना शामिल है, जो स्टाफ और व्यापक मूल्यांकन समुदाय को विद्यार्थियों की प्रगति की जांच करने और इस सूचना का अनेक तरीकों से इस्तेमाल करने में समर्थ बनाता है।

अधिगम के मूल्यांकन की विशेषताएं

- यह मूल्यांकन शिक्षा-प्राप्ति के बाद किया जाता है।
- सूचना अध्यापक द्वारा एकत्र की जाती है।
- सूचना को सामान्य रूप से अंकों अथवा ग्रेडों में रूपांतरित किया जाता है।
- अन्य विद्यार्थियों के कार्य-निष्पादन के साथ तुलना की जाती है।
- इसके पहले प्राप्त की गई शिक्षा पर नज़र डालता है।

अधिगम के अच्छे मूल्यांकन के मानदंड

- वे युक्तिसंगत होते हैं (ठोस मानदंडों पर आधारित)।
- वे विश्वसनीय होते हैं (मूल्यांकन और पद्धति का सही होना)।
- और वे तुलनीय होते हैं (जब उनकी तुलना अन्य विभागों अथवा विद्यालयों में की गई जांच-परख से की जाती है, तो वे ठीक पाए जाते हैं)।

अधिगम के मूल्यांकन के प्रयोजन

- मूल यह है कि सारांशात्मक मूल्यांकन को, किसी विशेष समय पर, विषय-वस्तु के मानदंडों की तुलना में विद्यार्थी की शिक्षा को मापने का एक साधन समझा जाए।

विद्यालय-आधारित मूल्यांकन, विद्यालय शिक्षा बोर्डों द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के विपरीत, स्कूल स्तर पर किया जाता है। यह मूल्यांकन विद्यालय द्वारा विकसित अनुसूची और बोर्ड द्वारा जारी किए गए मार्गनिर्देशों के अनुसार अध्यापकों द्वारा किया जाता है। यद्यपि यह मूल्यांकन हमेशा विद्यालय के स्तर पर किया जाता रहा है, किन्तु इस प्रणाली में कुछ त्रुटियां उत्पन्न हो गई हैं। कई बातों को इन त्रुटियों का कारण ठहराया जा सकता है। बुनियादी कारण

मूल्यांकन के स्थान और शिक्षा की प्रक्रिया में इसके महत्त्व के बारे में अध्यापकों की गलत धारणा है। दूसरा कारण बाह्य परीक्षा की प्रथा का अनुकरण है, जो सामान्य रूप से सत्र के अंत में ली जाती है।

मूल्यांकन की विद्यालय-आधारित प्रणाली में, मूल्यांकन के प्रयोजन का केन्द्र-बिंदु बदल गया है। अब इसमें तत्परता परीक्षण, विकास की जांच-परख, संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनो-प्रेरक (साइकोमोटर) क्षेत्रों में कार्य-निष्पादन का बार-बार, सुनियोजित और प्रभावकारी तरीके से मूल्यांकन किया जाना शामिल है।

विद्यालय-आधारित मूल्यांकन की विशेषताएं :

- यह पारंपरिक प्रणाली से अधिक विस्तृत, अधिक व्यापक और सतत होता है।
- इसका मुख्य लक्ष्य शिक्षार्थी को सुनियोजित अधिगम और विकास की ओर उन्मुख करने में सहायता देना होता है।
- यह भविष्य के ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में शिक्षार्थी की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है।
- यह अधिक पारदर्शी, भविष्यात्मक और शिक्षार्थियों, अध्यापकों और माता-पिता के बीच सहयोजन की अधिक गुंजाइश मुहैया कराने वाला होता है।

दूसरे शब्दों में, विद्यालय-आधारित मूल्यांकन बाल-केंद्रित, विद्यालय-केंद्रित और बहुआयामी मूल्यांकन होता है। इसलिए, यह सच्चे अर्थों में, शिक्षार्थी के सर्वतोमुखी विकास का सूत्रपात करता है। यह विद्यालय के अंदर और विद्यालय के बाहर दोनों जगहों पर जीवन में सभी प्रकार की शिक्षा-प्राप्ति को प्रोत्साहित करता है। यह बाल-केंद्रित होता है, क्योंकि यह विकास के वैयक्तिक स्वरूप की दृष्टि से विद्यार्थी को एक अद्वितीय अस्तित्व मानता है। यह अपनी शिक्षा के पहले से निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी का एक अलग व्यक्तित्व के रूप में, अन्य शिक्षार्थियों की तुलना में केवल उसकी स्थिति के रूप में नहीं बल्कि प्रत्येक बच्चे की अपनी वैयक्तिक योग्यताओं, प्रगति और विकास के आधार पर निर्माण करता है।

यह अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों के बारे में निम्नलिखित को जानने के अवसर भी प्रदान करता है :

- वे क्या सीखते हैं?
- वे कैसे सीखते हैं?
- इकट्ठा सीखने में उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों अथवा सीमाओं का सामना करना पड़ता है?
- बच्चे क्या सोचते हैं?
- बच्चे क्या महसूस करते हैं?
- उनकी रुचियां और प्रवृत्तियां क्या हैं?

इसके अलावा, यह मूल्यांकन शिक्षार्थी को अपनी क्षमता का उपयोग बेहतर तरीके से करने में सहायता देता है इसके अलावा अध्यापकों को ऐसे तरीकों को ढूंढने के लिए पैनी दृष्टि प्रदान करता है, जो अलग-अलग शिक्षार्थियों के लिए अपनी समस्याओं और कठिनाइयों का समाधान करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

यह मूल्यांकन बाल-केंद्रित होने के अलावा, विद्यालय-केंद्रित भी है। इसका अर्थ यह है कि बाहर का कोई अभिकरण इस मूल्यांकन प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं करता। यह पूरी तरह से विद्यालय-आधारित है और अध्यापक द्वारा किया जाता है। अध्यापक पर भरोसा किया जाता है और इस संक्षिप्त विवरण के साथ कि अध्यापक अपने विद्यार्थियों के बारे में सबसे अधिक जानता है, उसे विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने की जिम्मेदारी दी जाती है।

विद्यालय-आधारित मूल्यांकन बहुआयामी होता है। इसके बहुआयामी स्वरूप का पता इस बात से लगता है कि यह शिक्षार्थियों के सामाजिक, भावात्मक, शारीरिक, बौद्धिक विकास और विकास के उन अन्य क्षेत्रों की आवश्यकता को स्वीकार करता है और उनका ध्यान रखता है, जो परस्पर-संबंधित होते हैं और जिन पर अलग से विचार नहीं किया जा सकता।

विद्यालय-आधारित मूल्यांकन को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता

वास्तव में, बाह्य परीक्षाओं ने स्कूलों में मूल्यांकन की स्थिति को प्रभावित करना शुरू कर दिया था और अध्यापन की समूची प्रक्रिया सार्वजनिक परीक्षा के अनुकूल बननी शुरू हो गई थी। बाह्य परीक्षाओं की त्रुटियां घर की परीक्षाओं तक भी पहुंच गईं।

पारंपरिक बाह्य परीक्षा की कमियां

- यह विद्यालय-शिक्षा की अंतिम व्यवस्था में वर्ष के अंत में एक प्रयास परीक्षा होती है।
- यह मुख्यतः विद्यार्थियों के ज्ञान के केवल शैक्षिक पहलुओं का मूल्यांकन करती है।
- यह बच्चों की सभी योग्यताओं का मूल्यांकन नहीं करती। लिखित परीक्षा में प्राप्त किए गए अंकों के आधार पर विद्यार्थियों को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया जाता है और उन्हें पूर्व-निर्धारित डिविज़नों में और आगे वगीकृत किया जाता है।
- उत्तीर्ण और अनुत्तीर्ण प्रणाली निराशा उत्पन्न करती है और अमानवीय है, क्योंकि अनुत्तीर्ण उम्मीदवार यह महसूस करने लगते हैं कि वे बिल्कुल निकम्मे हैं।
- सह-शैक्षिक क्षेत्रों की लगभग पूरी तरह से उपेक्षा कर दी जाती है और शिक्षा तथा मूल्यांकन की इस समय प्रचलित स्कीम में उनका कोई स्थान नहीं होता।
- न सिखाई गई विषय-वस्तु की परीक्षा लेने की रीति यह भी दर्शाती है कि शिक्षा-प्राप्ति के मामले में उपलब्धि बहुत कम है।

- मूल्यांकन की केवल सीमित तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिनमें विद्यार्थियों की परख करने की क्षमता नहीं होती।
- मूल्यांकन का लक्ष्य विद्यार्थी की गुणवत्ता को बढ़ाना है, जो बाह्य परीक्षा द्वारा प्राप्त नहीं होती।
- अंक देने की मौजूदा पद्धति में, बहुत सी गलतियों के कारण बहुत सी विसंगतियां हैं।
- विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों में प्राप्त किए गए अंकों की परिवर्ती श्रृंखला विश्वसनीय परिणाम घोषित करने में समस्या उत्पन्न करती है।
- परीक्षा-परिणामों का विश्लेषण और व्याख्या वैज्ञानिक तरीके से नहीं की जाती।

विद्यालय-आधारित सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रणाली निम्नलिखित के लिए स्थापित की जानी चाहिए :

- बच्चों पर पड़ने वाले दबाव को कम करना।
- मूल्यांकन को व्यापक और नियमित बनाना।
- अध्यापक को सृजनात्मक अध्यापन के लिए गुंजाइश मुहैया करना।
- निदान और उपचार के साधन की व्यवस्था करना।
- अपेक्षाकृत अधिक कौशलों वाले शिक्षार्थियों का निर्माण करना।

शिक्षा के लक्ष्य के बारे में स्थिति : एन.सी.एफ, 2005, एन.सी.ई.आर.टी.

विद्यालय-आधारित निर्धारण को कार्यान्वित करने का अर्थ यह होगा :

- संयोग और आत्मपरकता के तत्त्व का (यथासंभव सीमा तक) विलोपन, कंठस्थ किए जाने पर ज़ोर न दिया जाना, शिक्षार्थी के विकास के शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों पहलुओं को शामिल करते हुए व्यापक मूल्यांकन को प्रोत्साहन देना
- अध्यापन-शिक्षाप्राप्ति की समूची प्रक्रिया के अभिन्न अंतर्निर्मित पहलू के रूप में सतत मूल्यांकन, जो शिक्षा-काल की समूची अवधि में फैला हुआ हो
- अध्यापकों, विद्यार्थियों, माता-पिता और समाज के प्रभावकारी उपयोग के लिए परिणामों की कार्यात्मक और अर्थपूर्ण घोषणा

- विद्यार्थियों की न केवल उपलब्धियों और प्रवीणताओं के स्तरों के निर्धारण के प्रयोजन के लिए बल्कि निदान और उपचार को समृद्ध बनाने वाले कार्यक्रमों के जरिए उनमें सुधार करने के लिए परीक्षा के परिणामों का अधिक व्यापक रूप से उपयोग।
- बहुत-से अन्य संबंधित प्रयोजनों को पूरा करने के लिए परीक्षाएं लेने की क्रियाविधि में सुधार।
- शिक्षण सामग्री और प्रणाली में सहवर्ती परिवर्तन करना।
- माध्यमिक अवस्था से लेकर आगे तक सीमेस्टर प्रणाली लागू करना।
- विद्यार्थी के कार्य-निष्पादन और उसकी प्रवीणता के स्तर के निर्धारण के लिए और उसकी घोषणा करने के लिए अंकों के स्थान पर ग्रेडों का उपयोग।

उपर्युक्त लक्ष्य बाह्य परीक्षा और विद्यालयों में मूल्यांकन दोनों के लिए प्रासंगिक हैं।

दो किस्मों के निर्धारण होते हैं - रचनात्मक और सारांशात्मक

अनुसंधान के आधार पर दोनों की कुछ परिभाषाएं नीचे दी गई हैंः

रचनात्मक

- '.......... प्रायः इससे अधिक कुछ नहीं होता कि निर्धारण बारंबार किया जाता है और अध्यापन की तरह उसी समय किया जाता है' (ब्लैक और विलियम, 1999)
- '.......... फीडबैक मुहैया करता है, जो विद्यार्थी को (शिक्षा-प्राप्ति की) त्रुटियों को समझने और उन्हें दूर करने में सहायता देता है .... यह आगे की ओर देखने वाला होता है। (हार्लेन, 1988)
- '.......... इसमें फीडबैक और स्व-मानीटरन दोनों शामिल होते हैं।' (सैडलर, 1989)
- '.......... का उपयोग मूल रूप से अध्यापन और शिक्षा-प्राप्ति की प्रक्रिया को फीडबैक देने के लिए किया जाता है।' (टन्स्टाल और गिप्त, 1996)

सारांशात्मक

- '.......... निर्धारण, (जिसका) अधिकाधिक उपयोग शिक्षा-प्राप्ति का हिसाब लगाने के लिए किया जाता रहा है......................।' (ब्लैक और विलियम)
- '.......... पिछली उपलब्धियों को देखता है .... मौजूदा कार्य में प्रक्रियाओं अथवा परीक्षाओं को जोड़ता है .... इसमें विद्यार्थी को केवल अंक और फीडबैक देना शामिल होता है .... यह अंतरालों में किया जाता है, जब जब उपलब्धियों का हिसाब लगाना और उनकी रिपोर्ट देना जरूरी होता है।' (हार्लेन, 1998)

सारांशात्मक निर्धारण की विशेषताएं

- शिक्षा-प्राप्ति का निर्धारण।
- सामान्य रूप से विद्यार्थियों द्वारा किसी यूनिट अथवा सीमेस्टर के समाप्त होने पर उसका 'सारांश' प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है, जो उन्होंने सीखा हो अथवा न सीखा हो।
- सारांशात्मक निर्धारण के तरीके अधिकतर विद्यार्थियों के कार्य का मूल्यांकन करने के पारंपरिक तरीके होते हैं।
- ''बढ़िया सारांशात्मक निर्धारण - परीक्षाएं और ग्रेडों वाले अन्य मूल्यांकन - प्रमाण्य रूप से विश्वसनीय, युक्तिसंगत और पक्षपात-रहित होने चाहिए।'' (एन्जेलो और क्रॉस, 1993)

अध्याय 3

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में माध्यमिक कक्षाओं में सतत और व्यापक मूल्यांकन

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में इस संकल्पना का उदय

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने अपने विद्यालयों में सतत और व्यापक मूल्यांकन की स्कीम को चरणबद्ध रूप से लागू किया है।

वर्ष 2000 में, बोर्ड ने उन विद्यार्थियों को, जो केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा X में उत्तीर्ण हुए हों, विद्यालयों द्वारा प्रदान किए जाने वाले विद्यालय-आधारित मूल्यांकन के स्वतंत्र प्रमाणपत्र की संकल्पना को कार्यान्वित किया था। यह प्रमाणपत्र बाह्य परीक्षा के संबंध में बोर्ड के नियमित प्रमाणपत्र, और अंकों के विवरण के अलावा प्रदान किया जाता था। इसमें एक पाद-टिप्पणी होती थी कि विद्यालय द्वारा सतत और व्यापक मूल्यांकन का एक प्रमाणपत्र भी जारी किया जा रहा है और विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व को परखने के लिए उसका अध्ययन भी किया जाना चाहिए। और विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व को परखने के लिए उसका अध्ययन भी किया जाना चाहिए। दो वर्षों, अर्थात् IX और X की निरंतर अवधि में निर्धारण के लिए सतत और व्यापक मूल्यांकन में शैक्षिक क्षेत्रों के अतिरिक्त, सह-शैक्षिक क्षेत्र भी शामिल किए गए थे। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विस्तृत मार्गनिर्देशों के साथ एक सिफारिश किया गया फार्मेट तैयार किया गया था और अपनाए जाने के लिए विद्यालयों में वितरित किया गया था।

एक अगले कदम के रूप में, वर्ष 2004 में, सतत और व्यापक मूल्यांकन का कार्यान्वयन I–V की प्राथमिक कक्षाओं में किया गया था (देखें परिपत्र संख्या 5/18/25/03)। कक्षा V की उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण प्रणाली की संकल्पना को समाप्त करने के अलावा, निर्धारित इस अवस्था में लक्ष्य बच्चे के विकास के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना था। तद्नुसार, संपूर्णतावादी शिक्षा को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा I और II और कक्षा III से V) के लिए उपलब्धि रिकार्डों का विकास भी किया गया था और विद्यालयों को उनकी सिफारिश की गई थी। अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, बोर्ड ने 2006 में सी.सी.ई. (सतत और व्यापक मूल्यांकन) को कक्षा VI से VIII में लागू करने का फैसला किया (परिपत्र संख्या 2/06)।

प्रारूप (फार्मेट)

सतत और व्यापक निर्धारण के बारे में विद्यालय-आधारित निर्धारण का प्रमाणपत्र केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से उपलब्ध होगा। इसे विद्यालय में भरा जाएगा और इसे प्रति-हस्ताक्षर के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के संबंधित अनुसंधान अधिकारी के पास भेजेगा।

पात्रता

उन सभी विद्यार्थियों को, जिन्होंने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के किसी सम्बद्ध विद्यालय में कक्षा IX तथा X में अध्ययन का पाठ्यक्रम पूरा किया होगा, वर्ष 2011 से यह प्रमाणपत्र दिया जाएगा।

रचनात्मक निर्धारण

शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों का रचनात्मक निर्धारण वस्तुनिष्ठ होगा और विद्यार्थी के कार्य-निष्पादन की जानकारी निम्नलिखित तरीके से देगाः

रचनात्मक निर्धारण को कक्षा X के अंत में सतत और व्यापक मूल्यांकन कार्ड (सी.सी.ई. कार्ड) में अभिलेखबद्ध किया जाएगा। इस कार्ड को तीन भागों में विभाजित किया गया है अब अक्तूबर, 2009 से सी.सी.ई. को, उसके मज़बूत बनाए गए रूप में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सभी संबद्ध विद्यालयों में कार्यान्वित किया जा रहा है। 2010-11 के सत्र में, इस कक्षा IX और X दोनों में कार्यान्वित किया जाएगा।

जहां तक कक्षा IX और X में विद्यालय-आधारित मूल्यांकन के प्रमाणपत्र का संबंध है, उसके तीन भाग नीचे दिए गए हैंः

भाग 1

भाग 1 में शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन शामिल होता है, जिसे इस कार्ड में कक्षा IX और X दोनों के लिए श्रेणी (ग्रेडों) के रूप में दर्शाया जाएगा।

भाग 1(क)

- कक्षा IX और X दोनों की दो-दो अवधियां होंगी; पहली अवधि अप्रैल-सितंबर और दूसरी अवधि अक्तूबर से अगले वर्ष के मार्च महीने तक होगी।
- प्रत्येक अवधि में दो रचनात्मक निर्धारण होंगे और एक सारांशात्मक निर्धारण होगा।
- निर्धारण की जानकारी श्रेणी (ग्रेडों) के रूप में दी जाएगी।
- शैक्षिक क्षेत्र के लिए ग्रेडिंग का पैमाना नौ प्वाइंट वाला ग्रेडिंग पैमाना होगा, जो इस कार्ड की पिछली ओर दिया गया है।

भाग 1(ख)

- यह विद्यार्थियों का निर्धारण कार्य-अनुभव, कला शिक्षा और शारीरिक तथा स्वास्थ्य शिक्षा में करेगा।
- इसका निर्धारण पांच प्वाइंटों वाले ग्रेडिंग पैमाने पर किया जाएगा।

- वर्णात्मक सूचक के कथन होते हैं, जिनका उपयोग प्रत्येक शिक्षार्थी का वर्णन करने के लिए किया जाता है।
- समग्र ग्रेड कक्षा IX और X के अंत में दिया जाएगा।

भाग 2

भाग 2 में सह-शैक्षिक क्षेत्र शामिल होते हैं, जिनमें प्रतिभागियों का मूल्यांकन दो भागों में किया जाता है; 2(क) जीवन कौशल और 2(ख) अभिवृत्तियां और मूल्य।

भाग 2(क)

- जीवन कौशलः इसमें चिंतन-चिंतन कौशल, सामाजिक कौशल और भावात्मक कौशल शामिल होते हैं, जिनका निर्धारण पांच प्वाइंटों वाले ग्रेडिंग पैमाने पर किया जाएगा (जो कार्ड की पिछली ओर दिया गया है)।

भाग 2(ख)

- इसमें अध्यापकों, विद्यालय के कार्यक्रमों और पर्यावरण के प्रति अभिव्यक्तियां शामिल हैं और इनका निर्धारण तीन प्वाइंट वाले ग्रेडिंग पैमाने पर किया जाएगा।
- मूल्य प्रणाली का संबंध उस ढांचे से है, जिसका विकास बिल्कुल प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक की अवधि में किया जाना चाहिए। इनका निर्धारण तीन प्वाइंट वाले ग्रेडिंग पैमाने पर किया जाएगा।

भाग 3

भाग 3 में सह-शैक्षिक क्षेत्र शामिल होते हैं, जिसमें भाग लेने के मामले में विकल्प और उनका निर्धारण उपलब्ध है। इस भाग के दो उप-भाग हैं।

भाग 2(क): साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल, वैज्ञानिक कौशल, सौंदर्यपरक कौशल और अभिनय कला और क्लब (पारिस्थितिकी, स्वास्थ्य और स्वस्थता क्लब, आदि)।

भाग 3(ख): आठ विभिन्न किस्मों के क्रियाकलापों की व्यवस्था की गई हैः

1. खेल/देसी खेल (खो-खो आदि)
2. एन.सी.सी./एन.एस.एस.
3. स्काउटिंग और गाइडिंग

4. तैराकी
5. व्यायाम (जिमनास्टिक्स)
6. योग
7. प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड)
8. बागवानी/श्रमदान

- शिक्षार्थी का प्रथम उप-भाग की किन्हीं दो विषयों/गतिविधियों और दूसरे उप-भाग की किन्हीं दो विषयों/गतिविधियों के बारे में निर्धारण किए जाने की आवश्यकता है।

सामान्य

- जीवन-कौशलों के सिवाय, इनमें से प्रत्येक सह-शैक्षिक क्षेत्र का निर्धारण तीन प्वाइंट वाले ग्रेडिंग पैमाने पर किया जाएगा।
- शैक्षिक उपलब्धियों 1(क) के निर्धारण की रिपोर्ट एक बार कक्षा IX में और एक बार कक्षा X में दी जाएगी।
- शैक्षिक उपलब्धियों 1(ख) के निर्धारण की रिपोर्ट एक बार कक्षा IX में और एक बार कक्षा X में दी जाएगी।
- सह-शैक्षिक उपलब्धियों 2(क) और 2(ख) की रिपोर्ट एक बार कक्षा IX में और एक बार कक्षा X में दी जाएगी।
- सह-शैक्षिक उपलब्धियों 3(क) और 3(ख) की रिपोर्ट एक बार कक्षा IX में और एक बार कक्षा X में दी जाएगी।

शैक्षिक उपलब्धियों के मापने का नौ प्वाइंट वाला ग्रेडिंग पैमाना नीचे दिया जा रहा है:

अंक शृंखला	श्रेणी (ग्रेड)	श्रेणी-बिंदु (ग्रेड प्वाइंट)
91-100	ए1	10.0
81-90	ए2	9.0
71-80	बी1	8.0
61-70	बी2	7.0
51-60	सी1	6.0
41-50	सी2	5.0
33-40	डी	4.0
21-32	ई1	
00-20	ई2	

टिप्पणीः विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर का समस्त मूल्यांकन अंकों में किया जाएगा और समूचा निर्धारण ग्रेडों में प्रस्तुत किया जाएगा।

कार्य-अनुभव, कला-शिक्षा और स्वास्थ्य तथा शारीरिक-शिक्षा जैसे क्षेत्रों में कार्य-निष्पादन का निर्धारण 5 बिन्दु (प्वाइंट) वाले पैमाने पर किया जाएगा, जो कार्ड की पिछली ओर दिया गया है।

शैक्षिक ख	ग्रेड	ए+	ए	बी+	बी	सी

* निर्धारण को वर्ष में एक बार अभिलेखबद्ध किया जाएगा।

शिक्षा और परीक्षा की वह प्रणाली अति महत्त्वपूर्ण है, जो सुविधावंचित समूहों को समस्याओं को हल करने और विश्लेषण करने के उन अपेक्षित कौशलों की शिक्षा देती हैं, जो 'जॉब मार्केट' के लिए जरूरी हैं। पाठ्यपुस्तकों को कंठस्थ करना और उन्हें रटना एक ऐसा कौशल नहीं है, जिसकी आवश्यकता 'जॉब मार्केट' को हो। वह परीक्षा प्रणाली, जो इस प्रकार की 'शिक्षा-प्राप्ति' को प्रोत्साहित करती है, सृजनात्मकता को बुझा देती है। कौशलों की शिक्षा देना और उत्कृष्टता उत्पन्न करना वास्तविक समता उत्पन्न करने की ओर जाने वाला एक मार्ग - कदाचित एकमात्र स्थायी तरीका है।

परीक्षा सुधार, एन.सी.एफ. 2005 - एन.सी.ई.आर.टी.

विद्यालय-आधारित निर्धारण का प्रमाणपत्र

नीचे विद्यालय-आधारित निर्धारण प्रमाणपत्र का एक नमूना दिया गया है, जिसका उपयोग कक्षा IX और X के अंत में विद्यार्थियों के कार्य-निष्पादन की फीडबैक कार्य-विधि के रूप में दिया जाएगा।

विद्यालय-आधारित निर्धारण का सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रमाणपत्र
(केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली के निदेशानुसार जारी किया गया)

संबद्धता संख्या ....

विद्यालय का नाम ....

पूरा पता ....

....

ई-मेल आईडी .... टेलीफोन

विद्यार्थी का फोटो (हस्ताक्षर सहित) विद्यालय के प्रिंसिपल द्वारा स्कूल की सील के साथ अनुप्रमाणित

कक्षा IXñX

सत्र : 2009-2011

विद्यार्थी का विवरण

1. विद्यार्थी का नाम : ....
2. जन्म-तिथि : ....
3. माता का नाम : ....
4. पिता का नाम : ....
5. प्रवेश संख्या : ....

आत्मबोध

मेरे लक्ष्य : ....

मेरी शक्तियां : ....

रुचियां और शौक : ....

खेल : ....

निभाई गई ज़िम्मेदारियां/विशेष उपलब्धियां ....

....

....

विद्यार्थी के हस्ताक्षर	प्रधानाचार्य के हस्ताक्षर मुहर	बोर्ड अधिकारी के हस्ताक्षर मुहर

भाग-1ः शैक्षिक कार्य-निष्पादन : ज्ञान के क्षेत्र

क.

क्रम सं.		कक्षा IX			कक्षा X			
	विषय	**रचनात्मक निर्धारण**	**सारांशात्मक निर्धारण**	**समूचा निर्धारण**	**रचनात्मक निर्धारण**	**सारांशात्मक निर्धारण**	**समूचा निर्धारण**	**शतमक रैंक**
01.	भाषा-I							
02.	भाषा-III							
03.	गणित							
04.	विज्ञान							
05.	समाजविज्ञान							
*06.	सूचना प्रौद्योगिकी							
07.	गृह विज्ञान							
08.	चित्रकला							
09.	संगीत							
10.	हिसाब-किताव							
*11.	वाणिज्य/ लेखाकरण							
12.	अतिरिक्त वैकल्पिक विषय							

* क्रम संख्या 06 से 11 तक में सूचीबद्ध विषय केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा शिक्षा-प्राप्ति की अशक्तता वाले बच्चों के लिए विहित किए गए हैं।

ख.

क्रम सं.		कक्षा IX		कक्षा X	
		वर्णनात्मक सूचक	**समूचा ग्रेड**	**वर्णनात्मक सूचक**	**समूचा ग्रेड**
1.	कार्य-अनुभव				
2.	कला शिक्षा				
3.	शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा/खेल				

उपस्थितिः कक्षा IX
विद्यार्थी की कुल उपस्थिति ....
कुल कार्य दिवस ....

उपस्थितिः कक्षा X
विद्यार्थी की कुल उपस्थिति ....
कुल कार्य दिवस ....

भाग 2ः सह-शैक्षिक क्षेत्र

2(क)ः जीवन कौशल

क्रम सं.		कक्षा IX		कक्षा X	
	जीवन कौशल	वर्णनात्मक सूचक*	समूचा ग्रेड	वर्णनात्मक सूचक*	समूचा ग्रेड
1.	चिंतन कौशल*				
2.	सामाजिक कौशल*				
3.	भावात्मक कौशल*				

* **चिंतन कौशल** (सृजनात्मक और विवेचनात्मक चिंतन, समस्याओं का समाधान, निर्णय लेना, आत्म बोध)

सामाजिक कौशल (अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण, समानुभूति)

भावात्मक कौशल (दबावों से निपटना, भावनाओं से निपटना)

* वर्णनात्मक सूचक के कथन होते हैं, जिनका उपयोग प्रत्येक शिक्षार्थी का वर्णन करने के लिए किया जाता है। सतत और व्यापक मूल्यांकन के बारे में अध्यापकों के 'मेनुअल' में इनके बारे में सुझाव दिए गए हैं।

2(ख)ः अभिवृत्तियां और मूल्य

(तीन बिंदु वाले पैमाने पर श्रेणीकरण - क+, क और ख)

क्रम सं.		कक्षा IX		कक्षा X	
1.	निम्न के बारे में अभिवृत्ति	वर्णनात्मक सूचक*	ग्रेड	वर्णनात्मक सूचक*	ग्रेड
1.1	अध्यापक				
1.2	सहपाठी				
1.3	विद्यालय के कार्यक्रम				
1.4	पर्यावरण				
2.	मूल्य प्रणाली				

भाग 3: सह-शैक्षिक क्रियाकलाप

3(क): साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल, वैज्ञानिक कौशल, सौन्दर्यपरक कौशल और अभिनय कला और क्लब (निम्नलिखित में से किन्हीं दो का निर्धारण किया जाना है)

(तीन बिंदु वाले पैमाने पर ग्रेडिंग - क+, क और ख)

क्रम सं.		कक्षा IX		कक्षा X	
	क्रियाकलाप	वर्णनात्मक सूचक*	ग्रेड	वर्णनात्मक सूचक*	ग्रेड
01	साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल				
02	वैज्ञानिक कौशल				
03	सौन्दर्यपरक कौशल और अभिनय कलाएं				
04	क्लब (ईको, स्वास्थ्य और स्वस्थता और अन्य				

वे क्रियाकलाप, जिनका उपयोग निम्नलिखित के लिए किया जा सकता है:

साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल: (वाद-विवाद, भाषण, सृजनात्मक लेखन, मनोरंजन, ड्राइंग, पोस्टर बनाना, नारे लिखना, तत्काल चित्रण, रंगमंच)

वैज्ञानिक कौशल: (विज्ञान क्लब, परियोजनाएं, गणित क्लब, वैज्ञानिक प्रश्नोत्तरियां, वैज्ञानिक प्रदर्शनियां, ओलंपियाड)

सौन्दर्यपरक कौशल: (संगीत, कंठ संगीत, वाद्य संगीत, नृत्य, शिल्प, मूर्ति कला, कठपुतली-प्रदर्शन)

3(ख): स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा

(निम्नलिखित में से किन्हीं दो का निर्धारण किया जाना है)

(तीन बिंदु वाले पैमाने पर श्रेणीकरण - क+, क और ख)

1. खेल/देसी खेल (खो-खो आदि)
2. एन.सी.सी./एन.एस.एस.
3. स्काउटिंग और गाइडिंग
4. तैराकी
5. व्यायाम
6. योग
7. प्राथमिक उपचार
8. बागवानी/श्रमदान

क्रम सं.		कक्षा IX		कक्षा X	
	क्रियाकलाप	वर्णनात्मक सूचक*	श्रेणी	वर्णनात्मक सूचक*	ग्रेड

स्वास्थ्य स्थिति

कदः .... वज़नः ....

रक्त समूहः .... दृष्टिः बाईं आंख............. दाईं आंख ....

दांतः ....

विशिष्ट रोग, यदि कोई हो ....

सतत और व्यापक मूल्यांकन

1. सतत और व्यापक मूल्यांकन शिक्षा-प्राप्ति की कुल अवधि में विकास के शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों पहलुओं के नियमित निर्धारण के द्वारा विद्यार्थी की संपूर्णतावादी रूपरेखा प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है।
2. चूंकि यह कक्षा 9 और 10 की दो वर्षों की अवधि में फैला होता है, इसलिए यह विद्यालय को विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षार्थी की निगूढ़ प्रतिभा की पहचान करने के अवसर प्रदान करता है।

श्रेणीकरण (ग्रेडिंग) प्रणाली

शैक्षिक 'क'

अंक श्रेणी	ग्रेड	(ग्रेड प्वाइंट)
91-100	ए1	10.0
81-90	ए2	9.0
71-80	बी1	8.0
61-70	बी2	7.0
51-60	सी1	6.0
41-50	सी2	5.0
33-40	डी	4.0
21-32	ई1	
00-20	ई2	

शैक्षिक 'ख'

श्रेणी (ग्रेड)
ए+
ए
बी+
बी
सी

कक्षोन्नति वर्ष की समूची अवधि में विद्यार्थियों के दिन-प्रतिदिन के कार्य और अवधियों के अंत में होने वाली परीक्षा में उनके कार्य-निष्पादन के आधार पर भी की जाती है।

प्रथम अवधि : एफ.ए. 1(10%) + एफ.ए. 2(10%) + एफ.ए. 1(20%) रचनात्मक निर्धारण (एफ.ए.)
1 + 2 + 3 + 4 = 40%

दूसरी अवधि : एफ.ए. 3(10%) + एफ.ए. 4(10%) + एस.ए. 2(40%) सारांशात्मक निर्धारण (एस.ए.)
1 + 2 + 3 + 4 = 40%

जीवन-कौशल निर्धारण (2क)

****जीवन-कौशल निर्धारण के लिए 5 बिंदुओं वाला 'ग्रेडिंग' पैमाना नीचे दिया गया है:**

किसी कौशल में सर्वाधिक सूचक	**ए**
किसी कौशल में बहुत-से कौशल	**ए**
किसी कौशल में कुछ सूचक	**बी**
किसी कौशल में कम सूचक	**बी**
किसी कौशल में बहुत कम सूचक	**सी**

जीवन-कौशलों की प्रत्येक श्रेणी के सूचक नीचे दिए गए हैं :

चिंतन कौशल	**सामाजिक कौशल**	**भावात्मक कौशल**
विद्यार्थी यह योग्यता प्रदर्शित करता है: 1. मौलिक, लचीला और कल्पनाशील होना। 2. प्रश्न उठाना, समस्याओं को पहचानना और उनका विश्लेषण करना। 3. एक अच्छी तरह से सोचे-समझे फैसले को कार्यान्वित करना और ज़िम्मेदारी लेना। 4. प्रवाह सहित नए विचार पनपना। 5. वर्णन करना/नए विचार निर्मित करना।	**विद्यार्थी यह योग्यता प्रदर्शित करता है:** 1. अन्य लोगों के भावों को सहायनुभूतिपूर्वक समझना, उन्हें शब्दों में व्यक्त करना और प्रभावकारी प्रतिक्रिया करना। 2. अन्य लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना। 3. आलोचना को सकारात्मक रूप से लेना। 4. सक्रिय रूप से सुनना। 5. उपयुक्त शब्दों, सूचना और हाव-भाव का उपयोग करते हुए बातचीत करना।	**विद्यार्थी यह योग्यता प्रदर्शित करता है:** 1. स्वयं अपनी शक्तियों और कमज़ोरियों की पहचान करना। 2. स्वयं अपने साथ सहज रूप से रहना और अपने प्रति सकारात्मक धारणा रखने के लिए अपनी कमज़ोरियों पर काबू पाना। 3. अपने ऊपर पड़ने वाले दबाव के कारणों और उसके प्रभाव का पता लगाना। 4. दबाव के साथ निपटने के लिए बहुमुखी कार्यनीतियां विकसित करना और उनका उपयोग करना। 5. भावों को अभिव्यक्त करने और उनके बारे में प्रतिक्रिया करने के परिणामों को समझते हुए, उन्हें अभिव्यक्त करने और प्रतिक्रिया करने की योग्यता।

* प्रत्येक श्रेणी के लिए निर्धारण के सूचक विद्यालय-आधारित मूल्यांकन के बारे में अध्यापकों के 'मैनुअल' में दिए गए हैं।

स्वास्थ्य की स्थिति

शरीर का उपयुक्त रूप से विकास मन के स्वस्थ विकास के लिए अत्यावश्यक है। इसलिए यह ज़रूरी है कि योग्यताप्राप्त डाक्टरों द्वारा विद्यार्थियों की जांच सत्र में दो बार (जुलाई और जनवरी में) की जाए। यदि यह सुविधा उपलब्ध न हो, तो स्वास्थ्य के बारे में सामान्य जानकारी अर्थात् कद और वजन आदि के बारे में जानकारी प्रत्येक सत्र में दो बार प्राप्त की जा सकती है। कद और वज़न के आयु/लिंग संबंधी चार्ट पहले ही उपलब्ध हैं और अध्यापकों को चाहिए कि वे इन चार्टों का उपयोग करें और रिपोर्ट कार्ड/एस.बी.ए. प्रमाणपत्र में उसके द्वारा की जाने वाली प्रविष्टियों के आधार पर टिप्पणियां दर्ज करे।

इस सामान्य सूचना के अतिरिक्त, दोषपूर्ण दृष्टि, दांतों के रखरखाव, बहरापन, बीमारी के कारण लंबी अनुपस्थिति जैसी शारीरिक अशक्तता और रोगों को नोट किया जाना चाहिए, जिनका पता अध्यापक अपने स्तर पर लगा सकता है। यदि उसे कोई विकलांगता नज़र आए तो उसे भी माता-पिता के ध्यान में लाना चाहिए। स्वास्थ्य की स्थिति के निर्धारण में, कद को सेंटीमीटरों में दर्ज किया जाना चाहिए और वज़न को किलोग्राम में बताया जाना चाहिए।

यद्यपि पाठ्यचर्या की शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में, विद्यार्थियों द्वारा खेलों, खेल-कूदों, शारीरिक क्षमता, आदि में प्राप्त किए गए कौशलों/प्रवीणताओं की परख की जाएगी, लेकिन शारीरिक शिक्षा उन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करेगी, जो किसी व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य का पता लगाने की कसौटियों में शामिल है। इस क्षेत्र में निम्नलिखित पहलुओं का ध्यान रखा जाएः

स्वास्थ्य शिक्षा का निर्धारण निम्नलिखित बातों के आधार पर किया जाना ज़रूरी हैः

- स्वास्थ्य के बारे में बुनियादी जानकारी
- शारीरिक स्वस्थता
- अभिवृत्ति विकास
- स्वास्थ्य और स्वस्थता क्लब के क्रियाकलापों में भाग लेना

इस क्षेत्र में अध्यापकों की ज़िम्मेदारी सभी विद्यार्थियों के स्वास्थ्य के उपर्युक्त पहलुओं के बारे में देखी गई सामान्य बातों की जानकारी बच्चों के माता-पिता/अभिभावकों को देने पर सीमित होगी। स्वास्थ्य कार्ड का सुझाया गया फार्मेट भी व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य मैनुअल (भाग 1) में दिया गया है।

स्वास्थ्य कार्ड में सभी शिक्षार्थियों के मामले में उनके द्वारा स्कूल में प्रवेश के समय से स्कूल छोड़ने के समय तक उनके स्वास्थ्य का इतिहास अभिलेखबद्ध किया जाता है।

अध्यापक प्रत्येक बच्चे के बारे में सोचता है और इस बात की समीक्षा करता है कि उसने अवधि में क्या सीखा है और इस बात पर विचार करता है कि उसे रिपोर्ट कार्ड में टिप्पणियां और अभ्युक्तियां दर्ज करके क्या कार्य करना है और किस बात का सुधार करना है। रिपोर्ट कार्ड लिखने में समर्थ होने के लिए, अध्यापकों के लिए यह ज़रूरी है कि वे प्रतिदिन बच्चों को काम करते हुए और एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते हुए देख कर, प्रत्येक बच्चे के बारे

में सोचें। इसके लिए किसी विशेष परीक्षा की ज़रूरत नहीं है। शिक्षा-प्राप्ति के क्रियाकलाप बच्चों के इस प्रकार के प्रेक्षणात्मक और गुणात्मक निर्धारण का आधार स्वयमेव मुहैया कर देते हैं। इन बातों पर आधारित दैनिक डायरी रखने से सतत और व्यापक मूल्यांकन में सहायता मिलती है।

रिपोर्ट कार्ड का प्रस्तावित फार्मेट नीचे दिया गया है। यह केवल एक सुझाव के रूप में है और विद्यालयों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे ठीक ऐसा ही रिपोर्ट कार्ड छपवाएं।

विद्यालय का लोगो

विद्यालय का नाम : ....

पूरा पता : ....

....

ई-मेल आई.डी. : ....टेलीफोन न. ....

रिपोर्ट पुस्तिका

कक्षा IX

सत्र.............

विद्यार्थी की रूपरेखा

विद्यार्थी का नाम ....

अनुभाग (सेक्शन) .... सदन (हाउस)...

प्रवेश संख्या .... जन्म तिथि ....

निवास-स्थान का पता और टेलीफोन न. ....

....

माता का नाम .... पिता का नाम ....

स्वास्थ्य स्थिति

कद : .... वजन : ....

रक्त समूह : .... दृष्टि : बाईं आंख .... दाईं आंख ....

दांत : ....

विशिष्ट रोग, यदि कोई हो ....

....

उपस्थिति

विद्यार्थी की कुल उपस्थिति .... कुल कार्य दिवस ....

माता-पिता/अभिभावक के नमूना हस्ताक्षर ....

भाग 1 : शैक्षिक कार्य निष्पादन : शैक्षिक क्षेत्र

क. अवधि

विषय	एफ.ए. 1 10%	एफ.ए. 2 10%	कुल एफ.ए. 20%	एस.ए. 1 20%	जोड़-1 (एफ.ए.+एस.ए.)
भाषा-I					
भाषा-II					
गणित					
विज्ञान					
समाज विज्ञान					
अतिरिक्त वैकल्पिक विषय					

अवधि-II

एफ.ए. 3 10%	एफ.ए. 4 10%	कुल (एफ.ए.) 20%	एस.ए. 2 40%	जोड़-1 (एफ.ए. एस.ए.) 60%

अवधि I + II

कुल जोड़ (अवधि- अवधि-)	श्रेणी (ग्रेड)

ख.

	श्रेणी (ग्रेड)	वर्णनात्मक सूचक
कार्य अनुभव		
कला शिक्षा		
शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा		

अवधि-II

श्रेणी (ग्रेड)	वर्णनात्मक सूचक

भाग-2 : सह-शैक्षिक क्षेत्र

2क. जीवन कौशल

	श्रेणी (ग्रेड)	वर्णनात्मक सूचक
चिंतन कौशल		
सामाजिक कौशल		
भावात्मक कौशल		

अवधि II

श्रेणी	वणनात्मक सूचक

* चिंतन कौशल (सृजनात्मक और जटिल चिंतन, समस्या समाधान, निर्णय लेना, आत्म-बोध) * सामाजिक कौशल (परस्पर संबंधी, संप्रेषण, सहानुभूति) * भावात्मक कौशल (तनाव पर नियंत्रण और भावों पर नियंत्रण)

भाग-2ख. : अभिवृत्तियां और मूल्य (तीन बिंदूओं वाले पैमाने पर श्रेणी ए+, ए और बी)

क्र. स.		श्रेणी (ग्रेड)	वणनात्मक सूचक
1.	निम्नलिखित के प्रति अभिवृत्ति		
1.1	अध्यापक		
1.2	सहपाठी		
1.3	विद्यालय कार्यक्रम		
1.4	पर्यावरण		
2.	मूल्य प्रणाली		

अवधि-II

श्रेणी (ग्रेड)	वर्णनात्मक सूचक

भाग-3 : सह-शैक्षिक क्रियाकलाप (तीन बिंदुओं वाले पैमाने पर श्रेणी ए+, ए और बी)

3(क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो का निर्धारण किया जाना है।

	श्रेणी (ग्रेड)	वर्णनात्मक सूचक
साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल		
वैज्ञानिक कौशल		
सौन्दर्य और अभिनय कलाएं		
क्लब (ईको क्लब, स्वास्थ्य और स्वस्थता और अन्य		

अवधि-II

श्रेणी (ग्रेड)	वर्णनात्मक सूचक

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा

3(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो का निर्धारण किया जाना है :

1. खेल/देसी खेल 2. एन.सी.सी./एन.एस.एस. 3. स्काउटिंग और गाइडिंग 4. तैराकी
5. व्यायाम 6. योग 7. प्रथम उपचार 8. बागवानी/श्रमदान

क्रम सं.	श्रेणी (ग्रेड)	क्रियाकलाप	वर्णनात्मक सूचक
1.			
2			

विद्यार्थियों का निम्नलिखित श्रेणियों के अनुसार निर्धारण किया जाना हैः

श्रेणी प्रणाली

शैक्षिक 'क'

अंक श्रृंखला	श्रेणी (ग्रेड)	श्रेणी बिंदु (ग्रेड बिंदू)
91-100	ए1	10.0
81-90	ए2	9.0
71-80	बी1	8.0
61-70	बी2	7.0
51-60	सी1	6.0
41-50	सी2	5.0
33-40	डी	4.0
21-32	ई1	
00-20	ई2	

शैक्षिक 'ख'

श्रेणी (ग्रेड)
ए+
ए
बी+
बी
सी

प्रोन्नति वर्ष के दौरान विद्यार्थी के दिन-प्रतिदिन के कार्य पर और आवधिक परीक्षाओं में उसके कार्य-निष्पादन पर भी आधारित होगी।

प्रथम अवधि : एफ.ए. 1(10%) + एफ.ए. 2(10%) + एफ.ए. 1(20%) रचनात्मक निर्धारण (एफ.ए.) 1 + 2 + 3 + 4 = 40%

दूसरी अवधि : एफ.ए. 3(10%) + एफ.ए. 4(10%) + एस.ए. 2(40%) सारांशात्मक निर्धारण (एस.ए.) 1 + 2 + 3 + 4 = 40%

जीवन-कौशल निर्धारण (2क)

**जीवन-कौशल निर्धारण के लिए 5 बिंदुओं वाला 'श्रेणी' पैमाना नीचे दिया गया हैः

किसी कौशल में सर्वाधिक सूचक = ए+

किसी कौशल में बहुत-से सूचक = ए

किसी कौशल में कुछ सूचक = बी+

किसी कौशल में कम सूचक = बी

किसी कौशल में बहुत कम सूचक = सी

रिपोर्ट कार्ड का सुझाया गया प्रारूप (फार्मेट) नीचे दिया गया है। यह केवल एक सुझाव के रूप में है और विद्यालयों के लिए बिल्कुल ऐसा ही रिपोर्ट कार्ड छापना आदेशात्मक नहीं है।

सी.सी.ई. कार्ड को भरने के बारे में मार्गनिर्देश

विद्यार्थी का नाम	जैसाकि प्रमाणपत्र में अपेक्षित है
जन्म तिथि माता का नाम	शब्दों और अंकों में (छब्बीस नवंबर, उन्नीस सौ बानवे अर्थात् 26.11.1992) जैसाकि जन्म/पंजीयन प्रमाणपत्र में दिया गया हो
पिता का नाम प्रवेश संख्या	
बोर्ड की पंजीयन संख्या	प्रविष्टियां करते समय दी जाती है
आत्म बोध	इसे दो वर्षों के अंत में विद्यार्थी के साथ चर्चा करने के बाद भरा जाना होता है
मेरे लक्ष्य	
रुचियां और शौक	

कवर के अंदर

भाग-1 : शैक्षिक कार्य-निष्पादन

शैक्षिक क्षेत्र

क. रचनात्मक ग्रेड = एफ 1 + एफ 2 + एफ 3 + एफ 4 = ... ग्रेड

ख. सारांशात्मक ग्रेड = एस 1 + एस 2 = ... ग्रेड

समग्र ग्रेड

एफ.ए.-1 (10%) + एफ.ए.-2 (10%) + एफ.ए.-3 (10%) + एफ.ए.-4 (10%) + एस.ए.-1 (20%) + एस.ए.-2 (40%)

भाग 1(क) : शैक्षिक क्षेत्र

दो अवधियों के रचनात्मक निर्धारण (एफ + एफ 2 + एफ 3 + एफ 4) का समूचा ग्रेड दिया जाना ज़रूरी है और सारांशात्मक निर्धारण (एस 1 + एस 2) का समूचा ग्रेड अवश्य दिया जाना चाहिए। इन दोनों ग्रेडों का जोड़ संगत स्तंभ में दिए जाने की आवश्यकता है। निर्धारण का ब्योरा नीचे विस्तारपूर्वक दिया गया हैः

जहां तक कार्य-अनुभव, कला शिक्षा और शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा/खेलों से संबंधित शैक्षिक क्षेत्र (ख) का संबंध है, ग्रेडिंग का पैमाना और निर्धारण के सूचक दिए गए हैं।

भाग (2) : सह-शैक्षिक क्षेत्र

भाग (2क) : जीवन कौशल

इन्हें कक्षा के अध्यापक द्वारा संबंधित विषयों के अध्यापकों के साथ सलाह करके समय-समय पर प्रेक्षण करने की अवधि के बाद भरा जाता है। विद्यार्थियों का निर्धारण जीवन कौशलों के प्रत्येक समूह के बारे में किया जाएगा। इसे भरने के मार्गनिर्देश इस दस्तावेज के अंत में विस्तृत रूप से दिए गए हैं।

भाग 2(ख) : अभिवृत्तियां और मूल्य

अध्यापकों, सहपाठियों, विद्यालय के कार्यक्रमों और पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का निर्धारण समय-समय पर प्रेक्षण करने के बाद तीन बिंदु वाले पैमाने पर दिए जाने की आवश्यकता है। अध्यापकों द्वारा विभिन्न साधनों और तकनीकों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए और निर्धारण के विभिन्न सूचकों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। कक्षा के अध्यापक द्वारा इन्हें सभी विषयों के अध्यापकों के साथ सलाह करके भरा जाएगा।

भाग 3(क) : सह-पाठ्यक्रम क्षेत्र

सह-पाठ्यचर्या क्रियाकलापों में साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल, वैज्ञानिक कौशल, सौन्दर्यबोधी कौशल और अभिनय कलाएं और क्लबें शामिल हैं, जिनमें ईको-क्लबें, स्वास्थ्य और स्वस्थता क्लब, आदि शामिल हैं। विद्यार्थी से इन चार समूहों में से दो क्रियाकलाप चुनने की अपेक्षा की जाती है और विद्यार्थियों का निर्धारण संबंधित अध्यापकों द्वारा तीन बिंदु वाले ग्रेडिंग पैमाने पर विद्यार्थियों द्वारा इनमें भाग लिए जाने के स्तर और उपलब्धि के स्तर के अनुसार किया जाएगा।

भाग 3(ख) : स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा

विद्यार्थियों का मूल्यांकन उन दो क्रियाकलापों के आधार पर किया जाएगा, जो स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत समूहबद्ध आठ विभिन्न क्रियाकलापों में से चुने गए होंगे। उद्देश्य यह है कि स्वास्थ्य लाभों को अधिकतम बनाने के

लिए शारीरिक स्वास्थ्य क्रियाकलापों से लाभ उठाया जाए। इनका निर्धारण भी तीन बिंदु वाले ग्रेडिंग पैमाने पर किया जाएगा। निर्धारण स्कूल में विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल अध्यापकों द्वारा किया जाएगा।

इन्हें समय-समय पर प्रेक्षण की अवधि के बाद भरा जाएगा।

सी.सी.ई. कार्ड में दिए गए क्षेत्र शिक्षार्थियों को सर्वतोमुखी विकास के पर्याप्त अवसर मुहैया करते हैं। यह व्यापक रूप से समझ लिया गया है कि कक्षा के कमरे में केवल शैक्षिक विषयों के बारे में होने वाली पढ़ाई इन क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा नहीं दे सकती अथवा जीवन-कौशलों का विकास करने में सहायता नहीं दे सकती। आत्म-सम्मान, सकारात्मक अभिवृत्तियों और सृजनात्मक सोच-विचार, समस्याओं को हल करने और निर्णय लेने, दबावों और भावों के उद्वेग को संभालने के जीवन-कौशलों जैसे गुणों के विकास के लिए एक लंबी अवधि तक सकारात्मक और अनुकूलन व्यवहारों का विकास करने की आवश्यकता होती है। इन जीवन-कौशलों का एकीकरण स्कूल में शिक्षा-प्राप्ति की दस वर्ष की अवधि में शिक्षा के संपूर्ण व्यक्तित्व के साथ किया जा सकता है। अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य का विकास, अन्यों के प्रति, जिनमें पर्यावरण भी शामिल है, सकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण और सार्वभौम दृष्टिकोण का निर्माण शिक्षार्थी द्वारा जीवन-कौशलों और सह-पाठ्यचर्या क्रियाकलापों में भाग लिए जाने के द्वारा ही किया जा सकता है।

शैक्षिक पहलुओं का मूल्यांकन

शैक्षिक भाग 1(क)

कक्षा IX में शैक्षिक विषयों का मूल्यांकन

निम्नलिखित निर्धारणों का प्रस्ताव हैः

पहली अवधि

निर्धारण की किस्म	शैक्षिक सत्र में भारांश प्रतिशतता	मास	अवधि-वार भारांश
रचनात्मक निर्धारण-1	10%	अप्रैल-मई	एफए-1 + 2 = 20%
रचनात्मक निर्धारण-2	10%	जुलाई-अगस्त	
सारांशात्मक निर्धारण-1	20%	सितंबर	एस-1 = 20%

दूसरी अवधि

रचनात्मक निर्धारण-1	10%	अक्तूबर-नवम्बर	एफए- 3 + 4 = 20%
रचनात्मक निर्धारण-2	10%	जनवरी-फरवरी	
सारांशात्मक निर्धारण-1	20%	मार्च	एस-2 = 40%

कुल रचनात्मक निर्धारण = एफ-1 + एफए-2 + एफए-3 + एफए-4 = 40%
सारांशात्मक निर्धारण = एसए-1 + एसए-2 = 60%

नीचे विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए विद्यालयों द्वारा अपनाए जाने वाले तरीकों (साधनों और तकनीकों) के सुझाव दिए गए हैं:

शैक्षिक उपलब्धि	मूल्यांकन पहलू
शैक्षिक भाग 1(क)	**मूल्यांकन के साधन और तकनीकें** लिखित परीक्षाओं और आवधिक परीक्षणों और परीक्षाओं के जरिए व्यावहारिक निर्धारण के अलावा, निम्नलिखित पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए: • परियोजना (समूह) • सर्वेक्षण • प्रेक्षण • अन्वेषण (खोज का तरीका) • प्रयोग • प्रश्न - प्रश्न पूछने की तकनीकें • प्रश्नपत्र - सौंपे गए कार्य • प्रेक्षण अनुसूचियां - घटनाओं के रिकार्ड • विवरण **आवधिकता** सतत प्रक्रिया प्रत्येक शैक्षिक सत्र में प्रमाणीकरण का दो बार समेकन। यह कल्पना करते हुए कि एक सत्र अप्रैल में शुरू होता है और मार्च में समाप्त हो जाता है, किसी विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किए गए अंकों को निर्दिष्ट प्रतिशतता में रूपांतरित किया जा सकता है। अप्रैल, मई, जुलाई, अगस्त, अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर, जनवरी, फरवरी में किए जाने वाले निर्धारण रचनात्मक स्वरूप के होने चाहिएं और सितंबर तथा मार्च के अंत में किए जाने वाले का स्वरूप सारांशात्मक होना चाहिए। **व्याप्ति** सभी विद्यार्थियों के लिए।

जहां तक रचनात्मक निर्धारणों का संबंध है, यह प्रस्ताव है कि विद्यालयों को अपने निर्धारण स्वयं करने चाहिएं। विद्यालयों को अपने आपको केवल कागज़-पेंसिल वाली परीक्षाओं तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

निर्धारण लिखित और मौखिक दोनों परीक्षाएं होनी चाहिएं। इसमें परियोजनाएं/क्रियाकलाप/प्रश्नोत्तरियां/निर्दिष्ट कार्य/कक्षा कार्य/घर का कार्य भी शामिल हो सकता है। परीक्षा को विद्यार्थियों के मन में भय उत्पन्न नहीं करना चाहिए और यह कि अनौपचारिक तरीके से ली जानी चाहिए।

रचनात्मक निर्धारण योजना

रचनात्मक निर्धारण पर संकेंद्रण (फोकस)

↓

विद्यार्थियों के शिक्षा-प्राप्ति के परिणामों और निर्धारण की अपेक्षाओं को बांटना

↓

स्पष्ट रूप से निर्धारित कसौटियों का उपयोग करना

↓

उदाहरणों और आदर्शों का उपयोग करें

↓

विशिष्ट फीडबैक और फीड फार्वर्ड दें (जिससे यह सहायता मिलेगी)

↓

विद्यार्थी स्व-निर्धारण करें

↓

विद्यार्थी अपनी प्रगति का विवरण रखें

↓

अध्यापक विद्यार्थी की प्रगति का विवरण रखें

हम विभिन्न तरीके क्यों इस्तेमाल करें?

- विभिन्न विषय क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्ति और विकास के पहलुओं का निर्धारण किया जाना होता है।
- शिक्षार्थी की अनुक्रिया एक तरीके की तुलना में किसी अन्य तरीके के प्रति बेहतर होती है।
- प्रत्येक तरीका शिक्षार्थी की शिक्षा-प्राप्ति के बारे में अध्यापक की जानकारी में अपने तरीके से योगदान देता है।

शैक्षिक विषयों के बारे में प्रस्तावित मूल्यांकन योजना

- कक्षा IX और X के सभी विद्यार्थियों के लिए खुली।
- सी.सी.ई. द्वारा उनका निर्धारण विद्यालय में ही होगा।
- एक शैक्षिक वर्ष में सी.सी.ई. की दो अवधियां होंगी (अप्रैल-सितंबर और अक्तूबर-मार्च)
- प्रत्येक अवधि में दो रचनात्मक और एक सारांशात्मक निर्धारण होगा।

रचनात्मक निर्धारण (एफ.ए.)

• कक्षा कार्य	• प्रश्नोत्तरी	• प्रयोग
• घर का कार्य	• परियोजनाएं (सामूहिक/वैयक्तिक)	• वार्तालाप/साक्षात्कार
• मौखिक प्रश्न	• नियत कार्य/परीक्षाएं	

रचनात्मक निर्धारण का उपयोग पाठ्यक्रम के अध्यापन और शिक्षा-प्राप्ति को आंकने के लिए किया जाएगा।

विद्यार्थियों को उनके कार्य-निष्पादन में सुधार करने में सहायता देने के लिए, स्कूल शैक्षिक वर्ष के शुरू होने के समय से विद्यार्थियों की शिक्षा प्राप्त करने की कठिनाइयों का निदान करेंगे और उन्हें समय के उपयुक्त अंतरालों पर माता-पिता के ध्यान में लाएंगे। वे विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को बढ़ाने के उपयुक्त उपचारी उपायों की सिफारिश देंगे। इसी प्रकार, विशेष रूप से प्रतिभाशाली बच्चों को अतिरिक्त कार्य देकर, प्रतिभा को और बढ़ाने वाली सामग्री देकर और परामर्श देकर उन्हें और अधिक योग्य बनाया जाना चाहिए। कमज़ोर और प्रतिभाशाली दोनों प्रकार के बच्चों की सहायता के लिए उन्हें परामर्श देने के लिए कक्षा की समय-सारणी में उपयुक्त व्यवस्था की जानी चाहिए। अध्यापक के लिए यह भी ज़रूरी है कि वह अपनी कक्षा में विभिन्न प्रकार की योग्यताओं वाले विद्यार्थियों से निपटने की कार्यनीतियों का उपयोग करे। संदर्भ के लिए, दो इतिवृत्तात्मक अध्ययन अध्याय पांच में शामिल किए गए हैं।

यह उचित होगा कि शैक्षिक वर्ष के दौरान विद्यार्थियों को और उनके माता-पिता को विद्यार्थियों की उपलब्धि के स्तर की जानकारी दी जाए, ताकि विद्यार्थियों के कार्य-निष्पादन को बढ़ाने के लिए उनके सहयोग से उपयुक्त समय पर उपचारी कदम उठाए जा सकें। **समूचे निर्धारण के अंत में बच्चे की सकारात्मक और महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में कक्षा के अध्यापक की वर्णनात्मक अभ्युक्तियां होनी चाहिएं और अप्रत्यक्ष नकारात्मक निर्धारण को टाला जाना चाहिए।**

रचनात्मक निर्धारण के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और विद्यार्थियों को अपने कार्य-निष्पादन में सुधार करने में समर्थ बनाने के लिए, अध्यापकों को अपने अध्यापन के दौरान निर्धारण के विभिन्न साधनों का उपयोग करने की आवश्यकता है। अध्यापकों के लिए आदेशात्मक है कि वे रचनात्मक निर्धारण की अवधि में निर्धारण के कम से कम तीन विभिन्न

साधनों का उपयोग करें। नीचे दी गई सूची संपूर्ण नहीं है, यह केवल संभाव्य विविध साधनों की केवल एक कल्पना-मात्र है।

शैक्षिक विषयों के बारे में प्रस्तावित मूल्यांकन योजना

- **मौखिक और श्रवण -** यह सुनना, समझना, तैयार किया गया भाषण, वार्तालाप अथवा संवाद हो सकता है।
- **लिखित कार्य -** संक्षिप्त लंबे प्रश्न-उत्तर, सृजनात्मक लेखन, रिपोर्टें, समाचारपत्र लेख, डायरी में प्रविष्टियां, कविता, आदि।
- **भाषण -** वाद-विवाद, प्रभावशाली वक्तृता, पठन-वाचन, आदि।
- **अनुसंधान परियोजनाएं, जिनमें ये बातें शामिल हैं -** सूचना एकत्र करना, निगमनात्मक विवेचन, विश्लेषण और संश्लेषण और विभिन्न रूपों का उपयोग करते हुए, जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग भी शामिल है, प्रस्तुतीकरण।
- **स्वच्छ कार्य/समूह कार्य।**
- **समकक्ष निर्धारण।**

गणित

- समस्या हल करना, बहुविकल्पीय प्रश्न
- डाटा को संभालना और विश्लेषण
- अन्वेषणात्मक परियोजनाएं
- गणित प्रयोगशाला क्रियाकलाप
- माडल, 'आरिगामी' आदि सहित
- अनुसंधान परियोजनाएं और प्रस्तुतीकरण
- समूह परियोजनाएं
- समकक्ष निर्धारण
- प्रस्तुतीकरण, जिसमें आई.टी. का उपयोग शामिल है

विज्ञान

- **लिखित रूप से किए जाने वाले नियत कार्य -** बहुविकल्पीय प्रश्न, विवरणात्मक।
- **प्रयोगात्मक कार्य,** जिसमें एक अथवा एक से अधिक प्रयोग करना, प्रेक्षण करना, डाटा को संभालना, निर्णय करना, सुरक्षापूर्वक कार्य करना शामिल है।

- **प्रयोगों की योजना बनाना अथवा उनका डिज़ाइन तैयार करना -** डाटा एकत्र करने, अथवा विशेषताओं, सिद्धांतों, तथ्यों का अन्वेषण करने के लिए।
- **अनुसंधान -** जो अन्वेषण करना, सूचना एकत्र करना और अर्थ निकालना हो सकता है।
- **समूह कार्य -** अनुसंधान अथवा प्रयोगात्मक।
- **प्रासंगिक अनुसंधान परियोजनाएं**
- **समकक्ष निर्धारण**
- **प्रस्तुतीकरण,** जिसमें आई.टी. का उपयोग शामिल है।
- **वैज्ञानिक प्रश्नोत्तरियां**
- **संगोष्ठियां**
- **विचार-गोष्ठियां**
- **क्षेत्र के दौरे**
- **कक्षा की अनुक्रिया**
- **माडल बनाना**

समाज विज्ञान

- **लिखित रूप से किए जाने के लिए सौंपे जाने वाले कार्य -** संक्षिप्त और लम्बे उत्तर
- **टीका-टिप्पणियां**
- **स्रोत-आधारित विश्लेषण**
- **परियोजनाएं -** अन्वेषणात्मक, सूचनाप्रद, निगमनात्मक, विश्लेषणात्मक
- **अनुसंधान**
- **समूह कार्य -** परियोजनएं, प्रस्तुतीकरण
- **मॉडल और चार्ट**
- **प्रस्तुतीकरण,** जिसमें आई.टी. का उपयोग शामिल है
- **प्रमाणिक स्रोतों** का और प्राथमिक मूल पाठों का उपयोग करना
- **खुली पुस्तक परीक्षा**
- **द्वितीयक स्रोत**
- **तुलना और वैषम्य**

रचनात्मक निर्धारण कक्षा में शिक्षा-प्राप्ति में सहायता देगा और अध्यापन पर 'वाशबैक' प्रभाव डालेगा। रचनात्मक निर्धारण में शामिल महत्त्वपूर्ण घटक ये हैं।

सारे निर्धारण की योजना विस्तारपूर्वक बनाना

↓

विद्यार्थियों को प्रभावकारी फीडबैक मुहैया करना

↓

विद्यार्थियों को उनकी अपनी शिक्षा-प्राप्ति में सक्रिय रूप से शामिल करना

↓

निर्धारण के परिणामों को ध्यान में रखने के लिए अध्यापन को समायोजित करना

↓

निर्धारण का विद्यार्थियों के अभिप्रेरण पर और उनके आत्म-सम्मान पर जो गहरा प्रभाव पड़ता है, उसे पहचानना, जिनका शिक्षा-प्राप्ति पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है

↓

इस बात की आवश्यकता की विद्यार्थी अपना निर्धारण स्वयं करने में समर्थ बनें और यह समझें कि सुधार कैसे करना है

व्यावहारिक रूप से इसका अर्थ यह है:

- शिक्षा-प्राप्ति के लक्ष्य विद्यार्थियों के साथ बांटना।
- स्व-निर्धारण के विद्यार्थियों को शामिल करना।
- फीडबैक मुहैया करना, जो विद्यार्थियों को समझने में और अगले कदम उठाने में सहायता करता है।
- यह विश्वास करना कि प्रत्येक विद्यार्थी सुधार कर सकता है।

आवधिक परीक्षाएं भी विद्यार्थियों की उपलब्धि के मूल्यांकन का भाग होंगी। यह अवश्य सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि आवधिक परीक्षाएं केवल उस विशेष अवधि में दी गई शिक्षा के यूनिटों पर आधारित हों।

किसी विद्यार्थी की उपलब्धि का निर्धारण करने के बहुत से तरीके हैं और यह उचित है कि विद्यार्थी की प्रगति के बारे में सूचना अभिलेखबद्ध करने के लिए केवल किसी एक विशेष तरीके पर निर्भर न रहा जाए।

कुछ ऐसे तरीके, जिनका उपयोग अध्यापक कक्षा में रचनात्मक निर्धारण करने के लिए कर सकते हैं

विविध प्रकार के साधनों (मौखिक, परियोजनाएं, प्रस्तुतीकरण) का उपयोग करें ताकि विभिन्न योग्यताओं और शिक्षा-प्राप्ति की विभिन्न शैलियों वाले सभी विद्यार्थी अपनी जानकारी प्रदर्शित कर सकें।

विद्यार्थियों को हमेशा निर्धारण की कसौटियों की जानकारी दें, ताकि उन्हें यह पता हो कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है।

समकक्ष और स्त-निर्धारण की अनुमति दें, ताकि विद्यार्थी अपेक्षाओं को बेहतर रूप से समझ सकें।

विद्यार्थी को हमेशा किसी विशेष क्षेत्र में/कौशल का सुधार करने का अवसर और उस सुधार को प्रदर्शित करने का अवसर दें।

रचनात्मक निर्धारण के लिए विशिष्ट सिफ़ारिशें

विद्यार्थी अपना सत्र अप्रैल में शुरू करते हैं और यह सिफ़ारिश की जाती है कि रचनात्मक निर्धारण नए सत्र के प्रारंभ में अप्रैल में शुरू हो।

रचनात्मक निर्धारण के संबंध में कुछ सिफारिशें नीचे दी गई हैं, जिनका पालन विद्यालयों द्वारा किया जा सकता है। इस सूची में विभिन्न विषयों के बारे में कुछ महीने-वार सुझाव दिए गए हैं। यह सलाह दी जाती है कि प्रत्येक अवधि में, विद्यालय रचनात्मक निर्धारण के अंतर्गत विद्यार्थी के कार्य-निष्पादन का निर्धारण करने के लिए काग़ज-पेंसिल परीक्षा का उपयोग एक से अधिक बार न करें।

यह सुझाव दिया जाता है कि विज्ञान के मामले में, वर्ष में 4 रचनात्मक निर्धारणों में से कम से कम एक निर्धारण प्रयोगों के रूप में हो। गणित में चार निर्धारणों में से एक निर्धारण गणित प्रयोगशाला क्रियाकलापों का निर्धारण होना चाहिए। समाज विज्ञान में 4 में से कम से कम 1 निर्धारण परियोजनाओं पर आधारित होना चाहिए। भाषाओं में, 4 में से कम से कम एक निर्धारण श्रवण बोध अथवा वार्तालाप के रूप में वार्तालाप करने के कौशल का निर्धारण करना होना चाहिए। ये केवल मार्गनिर्देश हैं। प्रयोजन यह है कि निर्धारण के बहुविध मॉडलों का उपयोग किया जाए, ताकि लिखित परीक्षाओं पर ध्यान के संकेंद्रण को कम किया जाए।

भाषाएं

- किसी विशिष्ट विषय के बारे में उदाहरणों के साथ 'फीडबैक' दें, जैसे किसी प्रस्ताव के बारे में - विरामचिह्न विधान, लम्बे वाक्य, उनका विन्यास।
- आदर्श कार्य के कुछ उदाहरण विद्यार्थियों के सामने रखें।
- विद्यार्थियों को 'फीडबैक' का उपयोग करके अपने लेख को फिर से लिखने और उसमें सुधार करने की अनुमति दें

अप्रैल-मई

भाषाएं - मौखिक प्रश्नोत्तरियां, श्रवण बोध, वार्तालाप/संवाद अथवा दिए गए विषयों पर तैयार किए भाषण।

जुलाई-अगस्त

भाषाएं - बोध, अनुसंधान परियोजनाएं (समाज विज्ञान के साथ प्रति-पाठ्यचर्या (क्रॉस-करिकुलर) भी हो सकती है)।

नवंबर-दिसंबर

भाषाएं - सृजनात्मक लेखन, प्रस्तुतीकरण, जिसमें समकक्षों और अध्यापक के साथ वार्तालाप शामिल है।

जनवरी-फरवरी

भाषाएं - सृजनात्मक लेखन, मूल पाठ पर टीका-टिप्पणियां।

टिप्पणीः बहुत सी कक्षा परीक्षाएं/यूनिट परीक्षाएं हो सकती हैं, जिनमें प्रतिशतता को अंतिम रूप से विहित मानदंड का रूप दिया जाता है।

विज्ञान और गणित

- किसी विषय के बारे में नियत किए गए कार्य को तैयार करना, जो विविध प्रकार के कौशलों को आंकता है (जैसे समस्या हल करना, सुस्पष्ट विश्लेषण करना, सही तरीके से प्रतिस्थापित करना)।
- कार्य को अंक देते समय, उन मुख्य क्षेत्रों की पहचान करें, जिनमें विद्यार्थी/विद्यार्थियों को सहायता की आवश्यकता है।
- उदाहरणों का उपयोग करके और आदर्श कार्य दिखाकर विद्यार्थियों को ये बातें स्पष्ट करें।
- कौशलों का पुनः मूल्यांकन करते समय विद्यार्थी को कोई अन्य काम करने के लिए दें।
- किए गए कार्य के संबंध में सुधार करने के लिए विद्यार्थी को अवसर दें।

अप्रैल-मई

गणित - समूह परियोजनाएं, डाटा को संभालना और विश्लेषण।

विज्ञान - प्रयोग, जो सिद्धांतों की अनुपूर्ति करते हैं, अनुसंधान (सूचना एकत्र करना और निष्कर्ष निकालना)।

जुलाई-अगस्त

गणित - समूह परियोजनाएं - समस्या हल करना, गणित प्रयोगशाला क्रियाकलाप।

विज्ञान - अनुसंधान के प्रस्तुतीकरण, प्रयोगों का डिज़ाइन/योजना तैयार करना।

नवंबर-दिसंबर

गणित - समस्या हल करना, आई.टी. का उपयोग करके आनलाइन परीक्षाएं।

विज्ञान - किसी कथित समस्या के बारे में विज्ञान में अन्वेषण, बहुविकल्पीय प्रश्न।

जनवरी-फरवरी

गणित - समस्या हल करना - समूहों में, गणित प्रयोगशाला क्रियाकलाप।

विज्ञान - डिज़ाइन प्रयोग, अनुप्रयोग (जो प्रयोग, समस्याएं, आदि हो सकते हैं)।

टिप्पणीः बहुत-सी परीक्षाएं/यूनिट परीक्षाएं हो सकती हैं, जिनमें प्रतिशतता को अंतिम रूप से विहित मानदंड का रूप दिया जाता है।

सामाजिक अध्ययन

- परियोजनाएं - उन विभिन्न कौशलों को ध्यान में रखते हुए, जिन्हें आप चाहेंगे कि विद्यार्थी प्रदर्शित करें, परियोजना निर्धारित करें अथवा उसके लक्ष्य निर्धारित करें।
- विद्यार्थियों द्वारा कार्य शुरू किए जाने से पहले, उन्हें निर्धारण की कसौटियों की स्पष्ट जानकारी दें और उनका वर्णन करें (जैसे 2 अंक समस्या का वर्णन करने के लिए होंगे, 3 अंक अनुसंधान और चुने गए विभिन्न स्रोतों के लिए होंगे)।
- अंक देते समय, उन सही क्षेत्रों की पहचान करें, जिनमें विद्यार्थी द्वारा कार्य किए जाने की आवश्यकता है।
- उदाहरण देकर और आदर्श कार्य दिखाकर विद्यार्थियों को ये बातें स्पष्ट करें।
- विद्यार्थियों को अपने कार्य, प्रदत्त कार्य को फिर से लेखबद्ध करने का अवसर दें।

अप्रैल-मई

समाज विज्ञान - अनुसंधान परियोजनाएं, सामूहिक अन्वेषण, किसी प्रयोजन से पढ़ना (नोट बनाना)

जुलाई-अगस्त

समाज विज्ञान - अनुसंधान के किसी विषय के बारे में प्रस्तुतीकरण, एम.सी.क्यू.

नवंबर-दिसंबर

समाज विज्ञान - चार्ट, माडल।

जनवरी-फरवरी

समाज विज्ञान - स्रोत आधारित विश्लेषण।

टिप्पणीः बहुत-सी परीक्षाएं/यूनिट परीक्षाएं हो सकती हैं, जिनमें प्रतिशतता को अंतिम रूप से विहित मानदंड का रूप दे दिया जाता है।

महत्त्वपूर्ण टिप्पणी

रचनात्मक निर्धारण ग्रेड केवल एक निर्धारण के लिए नहीं हो सकता। यह किसी सारी अवधि में किए गए कार्य का औसत होना चाहिए। उदाहरण के लिए एक ग्रेड, जो प्रयोगों को दर्शाता है, एक खास अवधि में किए गए प्रयोगों (3-4) का औसत होना चाहिए।

रचनात्मक निर्धारण का कार्यान्वयन

- शिक्षा-प्राप्ति के लक्ष्य, अभिप्राय अथवा परिणाम और इन्हें प्राप्त करने की कसौटियां।
- अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच गंभीर बातचीत, जो निरंतर बनती रहती है और गहराई में जाती है।
- प्रभावकारी फीडबैक समय पर मुहैया किया जाना, जो विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में समर्थ बनाती है।
- विद्यार्थियों का स्वयं अपनी शिक्षा-प्राप्ति में सक्रिय रूप से शामिल होना।
- अध्यापकों द्वारा अपनी अध्यापन की पद्धतियों में संशोधन करके शिक्षा-प्राप्ति की निर्धारित आवश्यकताओं को पूरा किया जाना।

विभिन्न भागों के मूल्यांकन के सूचक
शैक्षिक
भाग 1-ख

भाग 1-ख - मूल्यांकन के सूचक

कार्य-अनुभव, कला, शिक्षा और स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा के निर्धारण के सूचक नीचे दिए गए हैं। अध्यापक इन सूचकों का उपयोग अपने रिकार्ड में वर्णनात्मक सूचक लिखने के लिए कर सकते हैं

कार्य-अनुभव

विद्यार्थी यह प्रदर्शित करता हैः—

- शिक्षा-प्राप्ति की प्रक्रिया के प्रति सहयोगात्मक दृष्टिकोण।
- नवाचारी विचारों वाला है।
- योजना बनाता है और समय-सारणी का पालन करता है।
- अंतर्ग्रस्त है और अभिप्रेरित है।
- एक सकारात्मक अभिवृत्ति दर्शाता है।
- सहायता देने वाला है और अन्य लोगों को मार्गदर्शन और सुविधा प्रदान करता है।
- यह दर्शाता है कि उसे जीवन की यथार्थ स्थितियों से सह-संबंधों की समझ है।

कला शिक्षा

विद्यार्थी यह प्रदर्शित करता हैः—

- एक नवाचारी और सृजनात्मक दृष्टिकोण।
- सौन्दर्यबोधी संवेदनशीलता।
- प्रेक्षण कौशल।
- अर्थ-निर्णय और मौलिकता।
- वास्तविक जीवन के साथ सह-संबंध।
- विभिन्न कला माडलों/माध्यमों के साथ प्रयोग करने की इच्छा।
- कलाकारों की कृतियों के साथ परिचय और उनकी सराहना।
- समकक्ष विवेचन।

शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा/खेल

विद्यार्थी यह दर्शाता हैः

- उसे अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वस्थता की समझ की जानकारी है।
- वह खेलों/शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों में शामिल होता है
- टीम कार्य।
- विभिन्न खेलों और उनके नियमों की जानकारी
- अभिप्रेरण और नेतृत्व।
- समन्वय, फुरती और संतुलन के कौशल
- सुरक्षा के नियमों की जानकारी
- आत्म-अनुशासित होने का साक्ष्य

चिंतन......

'कछुए को देखो। वह तभी आगे बढ़ता है, जब अपनी गर्दन बाहर निकालता है।'

– जेम्स कोनन बियांट

एक अध्यापक की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता उन परियोजनाओं, जो विद्यार्थियों को ज्ञान को पुनः उत्पन्न करने के लिए कहती हैं और उन परियोजनाओं के बीच भेद करना है, जो विद्यार्थियों को ज्ञान, जैसे समाधान, निर्णय, स्पष्टता, स्पष्टीकरण और अंतर्दृष्टि उत्पन्न करने के लिए कहती है।

– फ्रेड न्यूमेन (ए गाइड टु आर्थेंटिक इंस्ट्रक्शन ऐण्ड असेसमेंट)

अध्यापन एक अधिकारवादी एकालाप के रूप में होने की बजाय वार्तालाप के रूप में होना चाहिए।

अध्याय 4

सह-शैक्षिक क्षेत्रों का निर्धारण

मूल्यांकन अध्यापन और शिक्षा-प्राप्ति की प्रक्रिया के दौरान शिक्षार्थी के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों के बारे में साक्ष्यों का संग्रह करने के बारे में कार्रवाई करता है। इन साक्ष्यों, अर्थ-निर्णयों और जांच-परख के आधार पर शिक्षार्थी की प्रगति को आंका जाता है और निर्णय लिए जाते हैं। मूल्यांकन में चार मुख्य उप-क्रियाएं शामिल होती हैं, अर्थात् सूचना एकत्र करना, सूचना का अर्थ निकालना, जांच-परख करना और फैसले करना।

बच्चे की शिक्षा-प्राप्ति की आवश्यकताओं की सीमा व्यापक होनी चाहिए। हमें एक ऐसी पाठ्यचर्या की आवश्यकता है, जिसमें संज्ञानात्मक क्षेत्र में शिक्षा-प्राप्ति के अलावा, सृजनात्मकता, नवाचार और समूचे सत्त्व अथवा व्यक्तित्व का विकास शिक्षार्थी की संवृद्धि के लक्षण हैं। व्यक्ति के सह-शैक्षिक पहलुओं के विकास, जैसे जीवन-कौशलों, अभिवृत्तियों और मूल्यों, सह-पाठ्यक्रम क्रियाकलापों में सहभागिता और उपलब्धि और स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा पर विचार किए जाने की आवश्यकता है।

यह हमेशा वांछनीय होता है कि सह-शैक्षिक क्रियाकलापों में ग्रेड देते समय दो अध्यापकों की टीम को,त्र जिसमें कक्षा का अध्यापक भी शामिल हो, मिलकर काम करना चाहिए। रिकार्ड रखने का एक फार्म अध्याय 5 में दिया गया है।

सह-शैक्षिक क्षेत्रों में निर्धारण सुनियोजित और सुव्यवस्थित तरीके से किए जाने की आवश्यकता है।

इसमें निम्नलिखित कदम शामिल हो सकते हैंः

1. गुणों की पहचान करना।
2. संबंधित क्षेत्र/कौशल के व्यवहार/सूचक विनिर्दिष्ट करना।
3. प्रेक्षण और अन्य तकनीकों के जरिए व्यवहार/सूचकों के संबंध में साक्ष्य एकत्र करना।
4. साक्ष्य अभिलेखबद्ध करना।
5. अभिलेखबद्ध साक्ष्य का विश्लेषण।
6. ग्रेड की रिपोर्ट देना अथवा ग्रेड प्रदान करना। आवधिक प्रेक्षण के परिणाम के रूप में अभिलेखबद्ध रिकार्ड का विश्लेषण उस गुणवत्ता की प्राप्ति को अभिपुष्ट करने के लिए किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप सह-शैक्षिक क्षेत्रों में संवृद्धि होती है। ग्रेड और वर्णनात्मक सूचक किसी विशेष कौशल/व्यवहार/परिणाम की उपलब्धि की मात्रा के आधार पर प्रदान किए जाते हैं।

जीवन कौशल

सी.सी.ई. कार्ड के भाग 2 का संबंध जीवन-कौशलों और अभिवृत्तियों तथा मूल्यों के निर्धारण से होता है।

जीवन कौशल अनुकूली और सकारात्मक व्यवहार की योग्यताएं हैं, जो व्यक्तियों को प्रतिदिन की मांगों और चुनौतियों के साथ प्रभावकारी ढंग से निपटने में समर्थ बनाती हैं। यह वे योग्यताएं हैं, जो व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य को कायम रखने में सहायता देती हैं।

'अनुकूली' का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी कार्य-पद्धति के मामले में लचीला है और विभिन्न परिस्थितियों के साथ समायोजन कर सकता है।

'सकारात्मक व्यवहार' का अभिप्राय यह है कि व्यक्ति भविष्य की ओर देखने वाला है और वह कठिन परिस्थितियों में भी आशा की किरण, समाधान और अवसर देखता है।

जीवन-कौशल वे योग्यताएं हैं, जो विद्यार्थियों को उत्पादक जीवन बिताने में सफल होने में सहायता देती हैं। शिक्षा-प्राप्ति और जीवन-कौशलों का व्यवहार विद्यार्थियों को अपनी वैयक्तिक और सामाजिक गुणवत्ताओं, जैसे आत्म-सम्मान, करुणा, सम्मान, विश्वास, आदि को बढ़ाने में सहायता देती हैं।

जीवन-कौशलों के मुख्य संघटक क्या हैं?

इन दस जीवन कौशलों को तीन मुख्य समूहों में और आगे विभाजित किया जा सकता है, जैसाकि नीचे दिखाया गया है:

जीवन-कौशल

चिंतन-कौशल
- आत्म-जागरूकता
- समस्या समाधान
- निर्णय लेना

सामाजिक कौशल
- अंतर्वैयक्तिक संबंधी
- संवाद कौशल
- समानुभूति

भावात्मक कौशल
- अनुभूतियों को संभालना
- सृजनात्मक चिंतन
- दबाव से निपटना

चिंतन कौशल

इनमें निर्णय करने, समस्याओं को हल करने के कौशल और सूचना एकत्र करने के कौशल शामिल हैं। व्यक्ति को इस बात का मूल्यांकन करने में भी दक्षता-प्राप्त होनी चाहिए कि उसके मौजूदा कार्यों का दूसरों पर भविष्य में

क्या प्रभाव पड़ेगा अथवा दूसरों के लिए उनके क्या परिणाम होंगे? उनमें वैकल्पिक हल निर्धारित करने और स्वयं अपने मूल्यों और अपने आस-पास के लोगों के मूल्यों के प्रभावों का विश्लेषण करने की योग्यता भी होनी चाहिए।

सामाजिक कौशल

इनमें मौखिक और गैर-मौखिक तरीके से संवाद करने, सक्रिय रूप से सुनने और भावनाएं व्यक्त करने और फीडबैक मुहैया करने की योग्यता शामिल है। इसके अलावा, इस श्रेणी में बातचीत करने/इनकार करने के कौशल और अपनी बात बलपूर्वक कहने के कौशल भी शामिल हैं, जो टकराव और संघर्ष को संभालने की योग्यता को प्रभावित करते हैं। समानुभूति भी, जो सुनने और दूसरों की आवश्यकताओं को समझने की योग्यता होती है, एक महत्त्वपूर्ण अंतर्वैयक्तिक कौशल है। टीम-कार्य और सहयोग करने की योग्यता में हमारे आस-पास के लोगों के प्रति सम्मान प्रकट करना शामिल है।

भावात्मक कौशल

इनका संबंध उन कौशलों से है, जो नियंत्रण के आंतरिक केंद्र (फोकस) को बढ़ाते हैं, ताकि व्यक्ति यह विश्वास करे कि वह परिवर्तनों को प्रभावित कर सकता है और संसार में परिवर्तन ला सकता है।

प्रत्येक महत्त्वपूर्ण समूह के अंतर्गत विभिन्न कौशलों के निर्धारण के सूचक निम्नलिखित हैंः

कौशलों की उपलब्धि	मूल्यांकन के पहलू
जीवन-कौशल **चिंतन कौशल** • आत्मबोध • समस्या हल करना • निर्णय लेना • विवेचनात्मक चिंतन • सृजनात्मक चिंतन **सामाजिक कौशल** • अंतर्वैयक्तिक संबंध • प्रभावकारी संवाद • समानुभूति	**मूल्यांकन के साधन और तकनीकें** • **जांच-सूचियां** • **प्रेक्षण** • **घटनाओं का रिकार्ड** • **विवरण**

भावात्मक कौशल • अनुभूतियों/भावों को संभालना • दबाव से निपटना	निर्धारण के सूचकों और जांच-सूचियों की सहायता से बुनियादी रूप से तीन प्राचलों के आधार पर निर्धारण किया जाता है • भागीदारिता • रुचि • अभिप्रेरण **निर्धारण के सूचक** **कौशल क्षेत्र और निर्धारण के सूचक** **चिंतन कौशल** - विद्यार्थी निम्नलिखित की योग्यता प्रदर्शित करते हैं: • मौलिक, लचीला और कल्पनाशील होना • प्रश्न उठाना, समस्याएं पहचानना और उनका विश्लेषण करना • बहुत सोच-विचार से लिए गए निर्णय को कार्यान्वित करना और ज़िम्मेदारी लेना • तत्परता से नए विचार पैदा करना • नए विचारों का विशद रूप से प्रतिपादन करना/निर्माण करना **सामाजिक कौशल** - विद्यार्थी निम्नलिखित की योग्यता प्रदर्शित करते हैं: • दूसरों के भावों को समझना, उन्हें शब्दों का रूप देना और उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण तरीके से संवेदनशील होना • दूसरों के साथ भली-भांति निर्वाह करना • आलोचना को सकारात्मक रूप से लेना • सक्रिय रूप से सुनना • उपयुक्त शब्दों, लहज़े और हाव-भाव से संवाद करना **भावात्मक कौशल** - विद्यार्थी निम्नलिखित की योग्यता प्रदर्शित करते हैं: • अपनी स्वयं की शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करते हैं। • स्वयं अपने साथ आराम से रहते हैं और सकारात्मक आत्म-धारणा की कमज़ोरियों पर काबू पाते हैं। • स्वयं अपने ऊपर बल देने के कारणों और प्रभावों की पहचान करते हैं।

	• दबाव के साथ निपटने के लिए बहुविध कार्यनीतियां विकसित करते हैं और उनका उपयोग करते हैं। • भावों के परिणामों के प्रति जागरूकता के साथ उन्हें व्यक्त करने और उनके प्रति संवेदनशील होने की योग्यता। **ग्रेडिंग का पैमानाः** पांच प्वाइंटों वाला ग्रेडिंग पैमाना नीचे दिया गया हैः **किसी कौशल में सर्वाधिक सूचक — ए+** **किसी कौशल में बहुत अधिक सूचक — ए** **किसी कौशल में कुछ सूचक — बी** **किसी कौशल में कम सूचक — सी** **किसी कौशल में बहुत कम सूचक — डी**

जीवन कौशल संबंधी जांच सूची

जीवन कौशल का मूल्यांकन भी समुचित जांच सूची से किया जा सकता है। चिंतन कौशल, सामाजिक कौशल और संवेगात्मक कौशल के मूल्यांकन संबंधी कुछ जांच-सूचियां नीचे दी जा रही हैं।

चिंतन कौशल - जांच सूची

- क्या विद्यार्थी कक्षा क्रियाकलापों में सर्जनशीलता दिखाता/दिखाती है? क्या वह चुनौतियों को उत्साह से स्वीकार करता/करती है?
- क्या वह नये विचार या संकल्पना देने की कोशिश करता/करती है? और अनुकूल स्थिति से बाहर निकलने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह नियत कार्य से संबंधित प्रश्न पूछता/पूछती है?
- क्या वह कार्य से इतर असंगत प्रश्न पूछ कर शंका पैदा करता/करती है?
- क्या वह समूह क्रियाकलाप में दूसरों की मदद करता/करती है या दूसरों को अभिप्रेरित करता/करती है?
- क्या वह विशेष कार्य के लिए स्वयं आगे आने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह एक ही क्रियाकलाप को भिन्न-भिन्न तरीकों से करने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह सीमा से बाहर सोचना पसंद करता/करती है?
- क्या वह नई-नई स्थितियों में ज्ञान या कौशल का प्रयोग करने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह कार्य आरंभ करने से पहले सभी संभव विकल्पों के बारे में सोचता/सोचती है?

सामाजिक कौशल - जांच सूची

- क्या वह समूह कार्य के दौरान ऐसा धैर्य रखता/रखती है कि धीमी गति से सीखने वाले विद्यार्थी भी अपना कार्य पूरा कर सकें?
- क्या वह ऐसे सहपाठियों की मदद करने की कोशिश करता/करती है, जो जल्दी अपना कार्य नहीं कर पा रहे हों, या जो दिए गए कार्य को पूरा नहीं कर पा रहे हों?
- क्या वह दूसरों के विचारों और गुणों की सराहना करता/करती है?
- क्या वह दूसरों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करने में सहजता महसूस करता/करती है?
- क्या वह बच्चा हमेशा यह चाहता है कि उसकी सहायता की जाए?
- क्या वह अपने कार्य में अध्यापक द्वारा बताई गई त्रुटियों के बारे में पूछता/पूछती है कि उन्हें कैसे दूर किया जाए?
- क्या विद्यार्थी सहज रूप में आंखें मिलाता/मिलाती है?
- क्या विद्यार्थी अपनी बात/अपनी राय प्रवाहपूर्ण तरीके से नहीं दे पाता/पाती है। बिना पूछे अपनी राय देता/देती है?
- क्या वह अशिष्ट भाषा का प्रयोग करके कार्य के लिए तय नियमों को तोड़ने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह नकारात्मक व्यवहार दर्शाने और दूसरों को परेशान करने की कोशिश करता/करती है?

"आज अधिकतर व्यवसायों में विश्लेषणात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, पार्श्वीय चिंतन और समस्या को हल करने की आवश्यकता है।"

परीक्षा सुधार, एन.सी.एफ.-2005, एन.सी.ई.आर.टी.

भावनात्मक कौशल - एक जांच-सूची

- किसी क्रियाकलाप/प्रतियोगिता के दौरान क्या बच्चा प्रायः यह कहता है कि "मैं कभी नहीं जीतूंगा, मैं इतना खुशनसीब कहां हूं?
- क्या वह समूह कार्य के दौरान अपनी योग्यता के अनुसार क्रियाकलाप/कार्य का चयन करता है/करती है?
- क्या वह गुस्सा आने पर या परेशान किए जाने पर अपने सहपाठियों पर चिल्लाता/चिल्लाती है?

- यदि पहले प्रयास उसे असफल घोषित कर दिया जाता है तो क्या वह उस कार्य को दुबारा करने का प्रयास करता/करती है?
- क्या जिन क्षेत्रों में वह कमज़ोर है उनमें लगातार अभ्यास करके वह सुधार करता/करती है?
- क्या वह कठिन स्थिति में अध्यापक/माता-पिता की सहायता करने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह जब तनाव में होता/होती है, तो अकेला/अकेली रहने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह तनाव की स्थिति में पढ़ाई करना, बागवानी करना या खेलने जैसे कुछ स्वस्थ्य क्रियाकलाप पसंद करता/करती है?
- क्या वह चर्चा के दौरान तर्क-वितर्क करता/करती है?
- क्या वह कक्षा/विद्यालय की व्यवस्था या अनुशासन के प्रति अनादर दिखाता/दिखाती है?

जीवन कौशल के सूचक सुझाए गए विवरण

नीचे ऐसे विद्यार्थियों के उदाहरण दिए जा रहे हैं, जिन्हें वे ग्रेड और विवरणात्मक सूचक दिए गए हैं, जो उनके अध्यापक उन्हें देते।

यदि चिंतन कौशल में रेहन को 'ए+', रीना को 'ए', रोहन को बी और विजय को सी मिलता है, तो अध्यापक विवरणात्मक सूचकों के रूप में निम्नलिखित तरीका अपनाएगाः

नाम	विवरणात्मक सूचक	समग्र ग्रेड और उसका कारण
रेहन	मौलिक है, नम्र है, प्रश्न पूछता है, ज़िम्मेदारी लेता है और उसके मन में नए-नए विचार आते हैं और वह नई-नई सोच बनाता है। उसने स्कूल की पत्रिका में भी अपना योगदान दिया।	ए+ (उच्च सूचकों को दर्शाता है)
रीना	रीना कल्पनाशील है। वह समस्याओं का पता लगा लेती है और उसके अंदर नए-नए विचार पैदा होते हैं। वह निर्णय ले सकती है और वह गायन मंडली की सदस्य भी है।	ए (कई सूचकों को दर्शाता है)
रोहन	रोहन अच्छा है क्योंकि उसका चिंतन कौशल उसकी योग्यता में दिखाई देता है। वह नम्र है, प्रश्न पूछता है और उसे क्रियान्वित करता है और निर्णयों पर खूब सोचता है।	बी+ (कुछ सूचकों को दर्शाता है)

लीना	लीना कल्पनाशील है, उसके अंदर नए-नए विचार पैदा होते हैं और वह नए-नए विचार सोचती है। यह उसके द्वारा समूह का नेतृत्व करने की क्षमता में दिखाई देता है।	बी (बहुत कम सूचकों को दर्शाता है)
विजय	विजय के पास विचार हैं, लेकिन उसे उन्हें बेहतर तरीके से और प्रवाहपूर्ण ढंग से व्यक्त करना नहीं आता है।	सी (यह बहुत ही कम सूचकों को दर्शाता है)

यदि सामाजिक कौशल में विजय को ए+ मिलता है, लीना को ए, रोहन को बी+, पॉल को बी और अमरजीत को सी मिलता है, तो अध्यापक विवरणात्मक सूचकों के रूप में निम्नलिखित तरीका अपनाएगाः

(ये बातें केवल सुझावात्मक हैं, अनिवार्य नहीं)

नाम	विवरणात्मक सूचक	समग्र ग्रेड और उसका कारण
विजय	विजय समान अनुभूति से अन्य लोगों को पहचानता है और उनका उत्तर देता है। वह ठीक आलोचना करता है, सक्रियता से सुनता है और सही ढंग से संप्रेषित करता है।	ए+ (सर्वोत्तम सूचकों को दर्शाता है)
लीना	लीना समानुभूति रखती है, अन्य लोगों से मेल-जोल बढ़ाती है, ध्यान से सुनती है और अपनी उचित भंगिमाओं से संप्रेषित करती है	ए (कई सूचकों को दर्शाता है)
रोहन	रोहन अच्छा है क्योंकि वह लोगों से मेल-जोल बढ़ाता है, आलोचना का सकारात्मक उत्तर देता है और दूसरों को सुनता है।	बी+ (कुछ सूचकों को दर्शाता है)
पॉल	पॉल अन्य लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है और उनकी बात सुनता है, लेकिन उसे बेहतर संप्रेषण करने की आवश्यकता है।	बी (बहुत कम सूचकों को दर्शाता है)
अमरजीत	अमरजीत को सुनने के क्रियाकलाप की क्षमता का विकास करना होगा। उसे आलोचना को सकारात्मक ढंग से लेना होगा और दूसरों के साथ भंगिमाओं का समुचित प्रयोग करना होगा।	सी (यह बहुत ही कम सूचकों को दर्शाता है)

यदि संवेगात्मक कौशल में रीना को ए+ मिलता है, लीना को ए, रोहन को बी+, सानिया को बी और विजय को सी मिलता है, तो अध्यापक विवरणात्मक सूचकों के रूप में निम्नलिखित तरीका अपनाएगाः

(ये बातें केवल सुझावात्मक हैं, अनिवार्य नहीं)

नाम	विवरणात्मक सूचक	समग्र ग्रेड और उसका कारण
रीना	रीना उत्कृष्ट है क्योंकि वह अपनी अच्छाइयों और अपनी कमियों को पहचान सकती है और वह अपने आप से संतुष्ट है। वह आउटडोर खेल खेलकर या पुस्तकें पढ़कर या कई अन्य तरीके अपनाकर अपने तनाव को दूर करती है।	ए+ (सर्वोत्तम सूचकों को दर्शाता है)
लीना	लीना बहुत अच्छी है क्योंकि वह अपनी कमज़ोरियों पर काबू पाती है और सकारात्मक स्वकल्पना विकसित करती है। वह अपने संवेगों और तनावों पर काबू पा सकती है।	ए (कई सूचकों को दर्शाता है)
रोहन	रोहन तनाव के कारणों और उसके प्रभावों को जानता है और यह भी जानता है कि उनसे कैसे निबटा जाए।	बी+
सानिया	सानिया अपने तनाव में सहज रहती है और उसे अपनी कमजोरियों के संबंध में कार्य करना है।	बी
विजय	विजय को तनाव से निपटने के लिए अपने कौशल में कार्य करने की आवश्यकता है। उसे अपने गुस्से पर काबू करने का तरीका ढूंढना आवश्यक है।	सी

सह-शैक्षिक क्षेत्र

भाग-2ख : अभिवृत्ति और मूल्य

नीचे अभिवृत्ति और मूल्य तथा तदनुरूपी पैमाने के लिए मूल्यांकन के सूचक दिए जा रहे हैं। विवरणात्मक सूचक लिखने के लिए इनका उपयोग किया जा सकता है

अभिवृत्ति	**मूल्यांकन की तकनीक**
• शिक्षक के प्रति • सहपाठियों के प्रति • विद्यालय/सरकारी संपत्ति के प्रति • पर्यावरण	दिन-प्रतिदिन की स्थितियों पर नज़र रखना **मूल्यांकन के साधनः** • विवरण 'रिकार्ड फार्म' (रजिस्टर में दर्ज) • प्रत्येक मद के लिए तीन बिंदु ग्रेडिंग मान सभी बिंदुओं को परिभाषित किया जाना।

	मूल्यांकन की अवधि • विवरण 'रिकार्ड फार्मों' में लगातार टिप्पणियों को दर्ज करना। • शैक्षिक वर्ष में दो बार टिप्पणियों का समेकन करना ताकि दो अध्यापकों के दल द्वारा उसको प्रमाणित किया जा सके और उसकी रिपोर्टिंग की जा सके। अध्यापकों में एक कक्षा अध्यापक होगा। • व्याप्ति • सभी विद्यार्थियों का सभी मदों के संबंध में मूल्यांकन किया जाएगा।

अभिवृत्ति और मूल्य	मूल्यांकन के सूचक	ग्रेडिंग मान ए+, ए, बी
अध्यापक के प्रति	• कक्षा में और कक्षा के बाहर हमेशा आदर और शिष्टता दिखाता है। • ऐसी अभिवृत्ति दिखाता है, जो शिक्षण के लिए सकारात्मक और अनुकूल है। • आलोचना को सही भावना में लेता है। • कक्षा अध्यापक और विद्यालय के नियमों का आदर करता है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी
स्कूल के प्रति	• अपने साथी/सहपाठियों के साथ स्वस्थ्य व्यवहार करता/करती है। • अपने सहपाठियों के साथ प्रभावी तरीके से विचारों का आदान-प्रदान करता/करती है। • समूह में अपने विचार व्यक्त कर सकता/सकती है। • समूह में अन्य साथियों के विचारों और राय को अस्वीकार करता है। • क्षमता, धार्मिक विश्वास, लड़की-लड़के, संस्कृति आदि में अपने साथियों का सम्मान करता है और इस प्रकार के अंतरों के प्रति संवेदनशील है। • दयालु और मददगार है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी

	• अपनी कक्षा या समूह के साथियों को प्रेरित कर सकता है।	
विद्यालय के कार्यक्रमों के प्रति	• विद्यालय के कार्यक्रमों में भाग लेने में समय का पाबंद और नियमित है। • विद्यालय के कार्यक्रमों में प्रायः भाग लेता है और स्वेच्छा से भाग लेता है। • सौंपे गए कार्य को प्रभावी ढंग से और ज़िम्मेदारी के साथ करता है। • स्वस्थ स्कूल भावना का प्रदर्शन करता है। • नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन करता है। • अन्यों को स्कूल कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी
पर्यावरण के प्रति	• विद्यालय की संपत्ति का सम्मान करता है। का पाबंद और नियमित है। • मानव द्वारा प्रकृति के लिए पैदा किए गए खतरों की जानकारी रखता है और उनके प्रति संवेदनशील है। पर्यावरण के प्रति ज़िम्मेदारी का प्रदर्शन करता है और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील है। • पर्यावरण की सुरक्षा के लिए विद्यालय द्वारा चलाए गए कार्यक्रमों में भाग लेता है। • पर्यावरण की सुरक्षा के लिए समुदाय द्वारा चलाए गए क्रियाकलापों में भाग लेता है। • पर्यावरण की बेहतरी के लिए क्रियाकलापों की पहल करता है और उनकी योजना बनाता है। • दूसरों का ध्यान रखता है, जीवन का सम्मान करता है, मातृभूमि का सम्मान करता है, अपने देश से प्रेम करता है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी

एक व्यक्ति के रूप में विद्यार्थी सामासिक मूल्यों पर प्रतिरूप है। ये ऐसे वैश्विक मूल्य हैं, जिन्हें विद्यालय की व्यवस्था के अंतर्गत और अध्यापक, माता-पिता और समुदाय द्वारा सुदृढ़ किया जाना आवश्यक है। अध्यापक को इन सभी बातों का ध्यान रखना चाहिए और उन्हें रिकार्ड करना चाहिए। उदाहरणार्थ एक विद्यार्थी केवल अपने मित्र के प्रति दयालु है या बरामदे में या अन्य सार्वजनिक स्थानों या समुदाय में अन्य विद्यार्थियों के प्रति भी दयालु है।

अभिवृत्ति और मूल्य	**मूल्यांकन के सूचक**	**ग्रेडिंग मान ए+, ए, बी**
मूल्य व्यवस्था	• नियमों की आवश्यकता को समझता है और उनका पालन करता है। • ईमानदार है और नैतिकता और सत्यनिष्ठा प्रदर्शित करता है। • आत्मसम्मानी है। • सभी के साथ विनम्र और शिष्ट है। • नेतृत्व का प्रदर्शन करता है। • विविधता (सांस्कृतिक मतमतांरि, विश्वास, योग्यता) का सम्मान करता है और यथास्थिति लड़के/लड़की का सम्मान करता है। • दयालु, मददगार और ज़िम्मेदार व्यवहार/अभिवृत्ति का प्रदर्शन करता है। • प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है, और अपने अन्यों के समय का सम्मान करता है। • दक्षता से कार्य करता है, अपने और अन्यों के समय का सम्मान करता है। • साथियों, व्यस्कों और समुदाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्तियों का प्रदर्शन करता है और समाधान प्रस्तुत करता है। • समुदाय का ज़िम्मेदार सदस्य है, नागरिकता की भावना का प्रदर्शन करता है, समुदाय विशेषतः साधनहीन लोगों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी के प्रति सचेत है। • शांतिप्रिय, सभी तनावपूर्ण स्थितियों में टकराव का रास्ता छोड़ता है। • स्वयं में प्रसन्नता ढूंढने की क्षमता है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी

उदाहरण

नीचे अध्यापकों के प्रति तीन विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के मामले में आदर्श विवरण या विवरणात्मक सूचक दिए गए हैं। ये केवल सुझावात्मक हैं और केवल उदाहरण के लिए हैं।

यदि विद्यार्थी प्रायः उपर्युक्त विशेषताओं का प्रदर्शन करता है तो उसे ए+ दिया जाना चाहिए। यदि वह कई विशेषताएं प्रदर्शित करता है, तो उसे ए दिया जाना चाहिए। यदि किसी विद्यार्थी में ये विशेषताएं कुछ/कम हों, तो उसे बी दिया जाना चाहिए।

यदि अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति में सानिया को ए+ मिलता है, सुनील को ए और संध्या को बी, तो इसी से उनके अंतर का पता चलता है। ''अभिवृत्तियां मन को रंगने वाले ब्रुश होते है''

नाम	**विवरणात्मक सूचक**	**समग्र ग्रेड और उसका कारण**
सानिया	• सानिया हमेशा अपने अध्यापकों के प्रति आदर और शिष्टता प्रदर्शित करती है। वह सकारात्मक अभिवृत्ति का प्रदर्शन करती है और आलोचना को सही ढंग से लेती है। वह परिवर्तन प्रदर्शित है और अपने अंदर संगत परिवर्तन लाने का प्रयास करती है	ए+ सर्वोत्तम सूचकों को दर्शाता है)
सुनील	• सुनील अपने अध्यापकों के प्रति आदर और शिष्टाचार का प्रदर्शन करता है और नियमों का पालन करता है। वह प्रायः सकारात्मक अभिवृत्ति का प्रदर्शन करता है।	ए (कई सूचकों को दर्शाता है)
संध्या	• संध्या विद्यालय के सभी नियमों का पालन करती है और प्रायः अध्यापकों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करती है।	बी (कुछ सूचकों को दर्शाता है)

विद्यालयी शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य जीवन के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना है। इसका एक वास्तविक अर्थ यह है कि विद्यार्थी में प्राथमिक विद्यालय से माध्यमिक विद्यालय तक पहुंचने में कई आयामों का विकास हो जाए। उन्हें इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि संसार में कदम बढ़ाने के लिए एक व्यस्क के रूप में उसे किस प्रकार सूचित निर्णय लेने चाहिएं। उन्हें अपने साथियों के समूह, समाज और समुदाय में विचारों के आदान-प्रदान करने की क्षमता होनी चाहिएँ। उन्हें तेज़ी से बदल रहे पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों और घट-बढ़ का मुकाबला करने की क्षमता का विकास करना चाहिए। रचनात्मक, वैज्ञानिक, सौंदर्य कौशल, कला का प्रदर्शन आदि, इको क्लब और स्वास्थ्य और स्वस्थ क्लबों में भाग लेने से उनका संपूर्ण विकास होने में मदद मिलती है। कक्षा 9 और 10 में सतत और व्यापक मूल्यांकन योजना लागू करने से प्रत्येक शिक्षार्थी का कम से कम चार क्रियाकलापों के संबंध में मूल्यांकन किया जाएगा, जिनमें से दो भाग 3(क) और दो भाग 3(ख) से अवश्य होने चाहिएं। विद्यार्थियों द्वारा चुने गए शिक्षा से जुड़े मामले में अध्यापक को दस्तावेजी साक्ष्य देने होंगे।

भाग-3 : सह-शैक्षिक क्षेत्र

<table>
<tr><th>प्रतिभागिता और उपलब्धि</th><th>मूल्यांकन की तकनीक और साधन</th></tr>
<tr><td>
साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल
• वाद-विवाद
• भाषण
• सृजनात्मक लेखन
• कविता पाठ
• चित्रकला
• पोस्टर तैयार करना
• नारे लिखना
• तत्काल (पेंटिंग) चित्रकला
• (थियेटर) रंगमंच
वैज्ञानिक कौशल
• विज्ञान क्लब
• परियोजना
• गणित क्लब
• विज्ञान प्रश्नोत्तरी
• विज्ञान प्रदर्शनी
• ओलंपियाड
सौंदर्यपरक कौशल
• संगीत-गाना
• वाद्ययंत्र
• नृत्य
• नाटक
• क्राफ्ट
• मूर्तियां बनाना
• कठपुतली
• लोक कलाओं का प्रदर्शन
</td><td>
कुछ समय बाद निरीक्षण
विवरण रिकार्ड फार्म (रजिस्टर में दर्ज)
प्रत्येक मद के लिए तीन बिंदु ग्रेडिंग मान सभी बिंदुओं को परिभाषित करेगा।
मूल्यांकन की अवधि
विवरण रिकार्ड फार्मों में लगातार टिप्पणियों को दर्ज करना।
शैक्षिक वर्ष में दो बार टिप्पणियों का समेकन करना ताकि दो अध्यापकों के दल द्वारा उसको प्रमाणित किया जा सके और उसकी रिपोर्टिंग की की जा सके। इन दो अध्यापकों में एक कक्षा अध्यापक होगा।
व्याप्ति
सभी विद्यार्थियों का सभी मदों के संबंध में मूल्यांकन किया जाएगा।
</td></tr>
</table>

कौशल क्षेत्र	मूल्यांकन के सूचक	ग्रेडिंग मान ए+, ए, बी
साहित्यिक और सृजनात्मक कौशल	• विद्यालय/अंतर-विद्यालय/राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर साहित्यिक और सृजनात्मक कौशलों में सक्रिय रूप से भाग लेता है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+
	• वाद-विवाद, कविता पाठ, पुस्तक क्लब आदि जैसी विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों की योजना बनाना और उन्हें चलाना	कौशल में कई सूचक - ए
	• विद्यार्थी परिषद् और विद्यार्थी अधिपति आदि का सदस्य है और इस हैसियत से सहायता करता है। आयोजन करता है। • जागरूकता के संबंध में पढ़ता है और काफी जागरूकता प्रदर्शित करता है। • सभी विधाओं (गद्य, पद्य और नाटक) और सभी भाषाओं में अच्छा लिख सकता है और बोल सकता है। • किसी खास विधा में उसकी रुचि क्यों है, इसके बारे में बता सकता है। • विभिन्न रूपों में सृजनात्मक विचार/राय व्यक्त कर सकता है। • विचारों और राय में मौलिकता प्रदर्शित करता है। • सहयोग कौशल का अच्छा प्रदर्शन करता है और समूह में प्रभावी ढंग से कार्य करता है। • दूसरों को प्रेरित कर सकता है और विभिन्न क्रियाकलापों में विद्यालय/समुदाय के अधिकांश लोगों को शामिल करता है।	कौशल में कुछ सूचक - बी
वैज्ञानिक कौशल	• विद्यालय/अंतर विद्यालय/राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर साहित्यिक और सृजनात्मक कौशलों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। • प्रश्नोत्तरी, संगोष्ठी, मॉडल तैयार करने आदि जैसे विज्ञान से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों की योजना तैयार करता है और उन्हें चलाता है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए

	• विद्यार्थी परिषद् और विद्यार्थी अधिपति आदि का सदस्य है और इस हैसियत से सहायता करता है। आयोजन करता है। • जागरूकता के संबंध में पढ़ता है और काफी जागरूकता प्रदर्शित करता है। • ध्यान से देखता है और परिपक्वता दिखाता है। • अच्छे परीक्षण कौशल का प्रदर्शन करता है और विभिन्न दैनिक बातों का व्यावहारिक ज्ञान है। • दिन-प्रतिदिन के कार्यों में विज्ञान का प्रयोग कर सकता है (उदाहरणार्थ विद्यालय में नाटक के लिए स्टेज पर लाइट लगाने का कार्य)। • सहयोग कौशल का अच्छा प्रदर्शन करता है और समूह में प्रभावी ढंग से कार्य करता है। • दूसरों को प्रेरित कर सकता है और विभिन्न क्रियाकलापों में विद्यालय/समुदाय के अधिकांश लोगों को शामिल करता है। • वैज्ञानिक अभिरुचित का प्रदर्शन करता है।	कौशल में कुछ सूचक - बी
सौंदर्यपरक कौशल और अभिनय	• विद्यालय/अंतर विद्यालय/राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर कला (दृश्य और कला) संबंधी क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। • नाटकों, कला प्रतियोगिता, वृत्तचित्र, नृत्य, संगीत उत्सव आदि जैसे विभिन्न कार्यकलापों की योजना बनाता है और उन्हें चलाता है। • विद्यार्थी परिषद् और विद्यार्थी अधिपति आदि का सदस्य है और इस हैसियत से सहायता करता है/ आयोजन करता है। • जागरूकता के संबंध में पढ़ता है और काफी जागरूकता प्रदर्शित करता है। • सभी विधाओं (गद्य, पद्य और नाटक) और सभी भाषाओं में अच्छा लिख सकता है और बोल सकता है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी

	• किसी खास विधा में उसकी रुचि क्यों है, इसके बारे में बता सकता है। • विशेषतः कलाओं के रूप के प्रति अभिरुचित एवं गहन रुचि प्रदर्शित करता है। • कला प्रदर्शन और कला के रूपों में कौशल का प्रयोग करता है। • रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रदर्शित करता है और अच्छी प्रस्तुति करता है।	
क्लब (इको, स्वास्थ्य और अन्य)	• विद्यालय/अंतर विद्यालय/राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर क्लब के क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। और क्लब का उत्साही सदस्य है। • त्यौहार, पर्यावरण सप्ताह, निधि संकलन, संगोष्ठियों, प्रश्नोत्तरियों आदि जैसे विभिन्न रचनात्मक कार्यों की योजना तैयार करने और उन्हें चलाने में पहल करता है। • विद्यार्थी परिषद् और विद्यार्थी अधिपति आदि का सदस्य है और इस हैसियत से सहायता करता है/आयोजन करता है। • जागरूकता के संबंध में पढ़ता है और काफी जागरूकता प्रदर्शित करता है। • उन्हें देखकर विचारों की मौलिकता और योग्यता का प्रदर्शन करता है। • सौंपे गए कार्य को प्रभावी ढंग से करता है। • अन्य लोगों को विद्यालय और समुदाय का कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी

नीचे वैज्ञानिक कौशल के तीन शिक्षार्थियों के मामले में विवरण या विवरणात्मक सूचकों के रूप में दिए जा रहे हैं। ये केवल सुझावात्मक है और अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए हैं।

यदि विद्यार्थी प्रायः उपर्युक्त व्यवस्थाओं का प्रदर्शन करता है तो उसे ए+ दिया जाना चाहिए। यदि वह कई विशेषताएं प्रदर्शित करता है तो उसे ए दिया जाना चाहिए। यदि किसी विद्यार्थी में ये विशेषताएं कुछ/कम हों, तो उसे बी दिया जाना चाहिए।

यदि वैज्ञानिक कौशलों में रेहन को ए+ मिलता है, हिलाल को ए और संख्या को बी, तो इसी से उनके अंतर का पता चलता है।

नाम	विवरणात्मक सूचक	समग्र ग्रेड और उसका कारण
रेहन	रेहन ने विद्यालय में विज्ञान प्रश्नोत्तरी में भाग लिया। उसने उत्कृष्ट अन्वेषी कौशल का प्रदर्शन किया और उसके कारण उसका हाउस जीत गया। उसने प्रतिदिन की कई बातों में अच्छे व्यावहारिक कौशल का प्रदर्शन किया और प्रतिदिन के संदर्भ में विज्ञान का प्रयोग कर पाई।	ए+ (उच्च सूचकों को दर्शाता है)
हिलाल	हिलाल ने विद्यालय में विज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन करने में मदद की। उसने खूब पढ़ा है और उसका विज्ञान के ज्ञान का स्तर बहुत ऊंचा है। वह प्रायः विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेती है।	ए (कई सूचकों को दर्शाता है)
संध्या	संध्या ने विज्ञान के मॉडल तैयार करने की प्रतियोगिता में भाग लिया और उसने ऐसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए अपने हाउस के कई सदस्यों को प्रेरित भी किया। उसका अच्छा अन्वेषी कौशल है और विज्ञान में उसने शिक्षा इतर कई कार्य किए।	बी (बहुत कम सूचकों को दर्शाता है)

शारीरिक स्वास्थ्य और आरोग्यता विद्यार्थियों में मानसिक और संवेदनात्मक कौशल और प्रतिभा का विकास करने में आवश्यक होता है। अनुसंधानों से यह साबित हो गया है कि शारीरिक रूप से स्वस्थ विद्यार्थी अन्य सभी बातों के समान रहते हुए अन्य सभी क्रियाकलापों में बेहतर होता है। वे अधिक सजग, अधिक संतुलित, अधिक सृजनात्मक और अधिक कार्य-निष्पादन करने वाले होते हैं।

भाग-3(ख): स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा

प्रतिभागिता और उपलब्धि	मूल्यांकन की तकनीक और साधन
स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा • खेलकूद/देशी खेलकूद (खो-खो आदि) • एन.सी.सी./एन.एस.एस. • स्काउटिंग और गाइडिंग • तैराकी • जिमनास्टिक • योग • प्राथमिक-चिकित्सा • बागवानी/श्रमदान	कुछ समय बाद निरीक्षण **मूल्यांकन के साधनः** • विवरणात्मक रिकार्ड फार्म (रजिस्टर में दर्ज) • प्रत्येक मद के लिए तीन बिंदु वाला ग्रेडिंग माप के संबंध में सभी बिंदुओं को परिभाषित किया जाएगा। **मूल्यांकन की अवधि** • विवरणात्मक रिकार्ड फार्मों में सतत् टिप्पणियां दर्ज की जाएंगी। • दो अध्यापकों के दल द्वारा प्रमाणीकरण और रिपोर्टिंग के लिए शैक्षिक सत्र में दो बार समेकित टिप्पणियां की जाएंगी। इन दो अध्यापकों में एक अध्यापक कक्षा अध्यापक होगा। • व्याप्ति • सभी विद्यार्थी

भाग-3(ख)

नाम	विवरणात्मक सूचक	ग्रेडिंग माप ए+, ए, बी
खेलकूद/देशी खेलकूद/ तैराकी/जिमनास्टिक	• स्थान का अभिनिर्धारण करने में सहज प्रतिभा का प्रदर्शन करता/करती है। • सहजशीलता का प्रदर्शन करता/करती है (लंबे समय तक किसी कौशल का प्रदर्शन कर सकता/सकती है। • शक्ति का प्रदर्शन करता/करती है (बल लगाने की क्षमता। • अनुकूल कार्य के लिए अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर सकता/सकती है (कम से कम समय में ताकत पैदा कर सकता/सकती है)। • तेज़ी से संचलन कर सकता/सकती है (गति)।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी

	• फुर्तीला/फुर्तीली है और खेल/मैच के दौरान तेज़ी से दिशा बदल सकता/सकती है। • लचीलापन, योग/जिमनास्टिक आदि का प्रदर्शन करता/करती है। • साहस का प्रदर्शन करता/करती है और डर पर काबू पा सकता/सकती है। उदाहरणार्थ संकट को भांप लेता/लेती है। • किसी भी काम को लंबे समय तक कर सकता/सकती है (लंबे समय तक किसी भी शारीरिक व्यायाम को करते रहने की क्षमता) उदाहरणार्थ फुटबाल आदि के लिए कोचिंग। • अपने हाथों और आंखों के अच्छे तालमेल का प्रदर्शन करता/करती है। अपनी सोच से तत्काल प्रतिक्रिया करता/करती है (उदाहरणार्थ क्रिकेट में कैचिंग या फील्डिंग, फुटबाल/हॉकी में पासिंग और रिसीविंग)। • विश्लेषण की अभिवृत्ति का प्रदर्शन। रणनीति में जायजा लेने की क्षमता और सही समय पर प्रतिक्रिया करने की क्षमता, विशेषतः टीम के कप्तान या प्रमुख सदस्य के रूप में। • खेलकूद की भावना का प्रदर्शन। • स्वस्थ टीम भावना का प्रदर्शन। • मैदान में और मैदान से बाहर अनुशासन। • अभ्यास आदि के लिए समय की पाबंदी और नियमितता।	
एनसीसी/एनएसएस/ स्काउटिंग और गाइडिंग	• साधनहीन लोगों के प्रति सेवा भाव का प्रदर्शन • किए जाने वाले क्रियाकलापों में शामिल होने की इच्छा का प्रदर्शन • सौंपे गए कार्य का प्रभावी ढंग से निर्वहन। • क्रियाकलापों या नए-नए क्रियाकलापों में सुधार लाने के लिए नए-नए तरीकों की शुरुआत करने की रुचि प्रदर्शित करना।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए

	• नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन। • ज़िम्मेदारी की उच्च भावना का प्रदर्शन। • प्रेरणा की भावना और विद्यालय/समुदाय के अन्य सदस्यों को प्रेरित करने की क्षमता • समूहों में अच्छी तरह और प्रभावी ढंग से कार्य करना। • विचारों और कार्य में स्वावलंबन का प्रदर्शन। • अपने साक्षियों, पर्यवेक्षकों और अन्य व्यस्कों के साथ मेल-जोल बढ़ाने की क्षमता	कौशल में कुछ सूचक - बी
तैराकी	• ऊपर बताई गई सभी विशेषताएं। • प्रशिक्षण/कोचिंग प्राप्त किया है। • तैराकी में अपने हाउस/स्कूल/राज्य/देश का प्रतिनिधित्व किया है। • तैराकी अच्छी तरह जानता/जानती है। • फ्री स्टाइल/बैंक/बटरफ्लाई/ब्रेस्ट स्ट्रोक/उच्च प्रदर्शन में समान रूप से कौशल का प्रतियोगी स्तर। • गोता लगाने का कौशल/गोता लगा सकता/सकती है। • तैराकी करते समय सभी सुरक्षा मापदंडों का अनुपालन करता/करती है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी
जिमनास्टिक	• ऊपर बताई गई सभी विशेषताएं। • जिमनास्टिक में कोचिंग ले रहा है/रही है/ले चुका/चुकी है। • जिमनास्टिक में हाउस/विद्यालय/राज्य/देश का प्रतिनिधित्व कर चुका/चुकी है। • जिमनास्टिक के सह-रूपों में समान रूप से/उच्च स्तर का प्रदर्शन करता/करती है (फ्लोर अभ्यास, समानांतर बार, रोमन रंग) आदि।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी
योगा	• ऊपर बताई गई सभी विशेषताएं। • उत्साह और रुचि का प्रदर्शन	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+

	• अभ्यास के दौरान पूर्णतः आराम करने की क्षमता। • धीरे-धीरे सुखद स्थिति में, सीधे बैठता/बैठती है। • अपनी सांसों पर नियंत्रण रख पाता/पाती है/सही ढंग से सांस लेता/लेती है। • ध्यान-योग में (विचारों का प्रवाह होने देता है, उपयोगी विचारों को पैदा करता है और लागू करता/करती है)। • कुछ देर के लिए शांत रहता/रहती है। • योग के सभी कौशलों को एक साथ उपयोग में लाता/लाती है।	कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी
प्राथमिक चिकित्सा	• आरंभिक/उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किया है। • प्राथमिक उपचार देने में रुचि और अभिवृत्ति का प्रदर्शन करता/करती है। • कठिन और अप्रिय स्थितियों में धैर्य और दृढ़ता का प्रदर्शन करता/करती है। • अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करता/करती है। • स्वयंसेवक के रूप में अस्पताल में काम किया है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी
बागवानी	• बागवानी में उत्साह और रुचि का प्रदर्शन करता/करती है। • पौधों की किस्मों की जानकारी रखता/रखती है और इस बात की जानकारी रखता/रखती है कि वर्ष में कब पौधे लगाए जाते हैं/उगाए जाते हैं/फूल देते हैं। • पौधों की भली-भांति देखभाल कर सकता/सकती है। • पौधों की संवृद्धि में उर्वरकों/अन्य रसायनों का उपयोग करना भली-भांति जानता/जानती है। • इस प्रकार के क्रियाकलाप बहुत अच्छी तरह करता/करती है।	कौशल में सर्वोत्तम सूचक - ए+ कौशल में कई सूचक - ए कौशल में कुछ सूचक - बी

	• अपने साथ काम करने के लिए दूसरों को प्रेरित कर सकता/सकती है। • अच्छी बागबानी की सराहना करता/करती है।	

नीचे विवरणात्मक सूचकों का सुझाव दिया गया है, जो तान्या, बिलाल और संध्या के लिए आदर्श विवरण के रूप में है।

यदि विद्यार्थी प्रायः उपर्युक्त विशेषताओं का प्रदर्शन करता है तो उसे ए+ दिया जाना चाहिए। यदि वह कई विशेषताएं प्रदर्शित करता है, तो उसे ए दिया जाना चाहिए। यदि किसी विद्यार्थी में ये विशेषताएं कुछ कम हों, तो उसे बी दिया जाना चाहिए।

यदि खेलकूद में तान्या को ए+ मिलता है, बिलाल को ए और संध्या को बी मिलता है, तो उस स्थिति में उनका विवरण इस प्रकार होगाः

नाम	**विवरणात्मक सूचक**	**समग्र ग्रेड और उसका कारण**
तान्या	तान्या विद्यालय की बास्केट बॉल टीम की सदस्य रही है। उसने अंतर-विद्यालयी टूर्नामेंट में भाग लिया और कई पुरस्कार जीते। उसने उत्कृष्ट खेल भावना का प्रदर्शन किया और उसके अपनी टीम के सभी सदस्यों के साथ उत्कृष्ट तालमेल है वह अभ्यास के किसी भी सत्र में अनुपस्थित नहीं रही।	ए+ (सर्वोत्तम सूचकों को दर्शाता है)
बिलाल	बिलाल ने फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन करने में मदद की है। वह वरिष्ठ विद्यार्थियों की टीम में खेला है और गोल कीपर के रूप में उसकी भूमिका बहुत उपयोगी रही है। बिलाल नियमित रूप से अभ्यास करता है और उसने इस वर्ष तीन अंतर-विद्यालयी मैचों में भाग लिया है।	ए (कई सूचकों को दर्शाता है)
संध्या	संध्या एक एथलीट है और 100 मीटर की दौड़ में उसने अपने हाउस का प्रतिनिधित्व किया। लेकिन वह अपनी टीम बनाने के कौशल में कार्य करने की आवश्यकता है।	बी (बहुत कम सूचकों को दर्शाता है)

अध्याय 5

मूल्यांकन की तकनीक और साधन

साधनों और तकनीकों की आवश्यकता सूचना एकत्र करने के लिए होती है। ये साधन और तकनीक विधिमान्य, विश्वसनीय सूचना एकत्र करने का निर्वचन अंकों में, ग्रेडों में या मात्रा के रूप में किया जाएगा। इसका निर्णय शैक्षिक पहलुओं पर ही किया जाना चाहिए लेकिन शिक्षा से जुड़े ऐसे पहलुओं के संबंध में भी किया जाना चाहिए, जो शिक्षा से संबद्ध हों और संस्थान की शिक्षण संस्कृति पर निर्भर करते हों।

जहां तक निर्वचन का संबंध है, इसके प्रति रुझान का मापन तीन स्तरों पर किया जा सकता है। पहला स्तर है शिक्षार्थी के संदर्भ में और उसकी प्रगति की विद्यमान स्थिति। इसमें उन बातों का पता लगाने की आवश्यकता होती है और उन्हें चिह्नित करने की आवश्यकता होती है, जिन बातों में उसके अंदर कमी रह गई है। दूसरा स्तर है उसके साथियों के समूह के संदर्भ में शिक्षार्थी की स्थिति का पता लगाना (प्रतिशतता में)।

तीसरा स्तर मापदंड का है। मापदंड से तात्पर्य है अपेक्षित कौशलों को ध्यान में रखते हुए, शिक्षार्थी का संभावित स्तर। मूल्यांकन-साधन मूल्यांकन या मापन के लिए वैज्ञानिक रूप से तैयार किए गए वे साधन हैं जिनसे जाना जा सके कि मूल्यांकन या मापन किस संबंध में अपेक्षित है।

किसी साधन का उपयोग करते समय, निम्नलिखित कारकों पर विचार करने की आवश्यकता होती हैः

- **संतुलन**
- **उद्देश्य**
- **भेद**
- **सुसंगतता**
- **निष्पक्षता**
- **विधिमान्य**
- **गति**
- **विश्वसनीयता**

विशिष्ट साधन

पिछला रिकार्ड	रेटिंग मान	अभिवृत्ति	विषय-सूची	अध्यापक द्वारा तैयार और मानकीकृत परीक्षण
• इसका उपयोग विद्यार्थी के पिछले व्यवहार के मूल्यांकन के लिए किया जाता है।	• इसका उपयोग स्थितियों/लक्ष्य आदि के बारे में राय और निर्णयों को वर्गीकृत करने के लिए किया जाता है।	• इनका प्रयोग विद्यार्थी संभावित कार्य-निष्पादन और विशेष क्षमता के मापन के लिए किया जाता है।	• इनका प्रयोग प्रश्नावली आदि के माध्यम से विद्यार्थी की आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है।	• इनका प्रयोग विद्यार्थी द्वारा विद्यालय के विभिन्न विषयों में उसके भाग लेने के संदर्भ में अंकों में मापने के लिए किया जाता है।

मूल्यांकन तकनीक में शिक्षण की उपलब्धि विशेष में प्रगति को मापने के लिए परीक्षा और अन्य मदें होती हैं। ये साधन ऐसे तरीके होते हैं, जिनका प्रयोग प्रश्न-पत्र, प्रेक्षण अनुसूची, रेटिंग मान, जांच-सूची आदि जैसे शिक्षण की उपलब्धियों को मापने के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थ टिप्पणियां जांच-सूची की तकनीक का साधन हैं।

1. प्रेक्षण

इसके द्वारा बच्चे के बारे में स्वाभाविक रूप से सर्वोत्तम तरीके से सूचना एकत्र की जा सकती है। कुछ सूचनाएं शिक्षण के दौरान विद्यार्थी के बारे में अध्यापक की टिप्पणियों पर आधारित होती हैं। अन्य सूचनाएं क्रियाकलापों/कार्यों के संबंध में विद्यार्थी के योजनाबद्ध और प्रयोजनमूलक टिप्पणियों पर आधारित होती हैं।

1.1 प्रेक्षण का लाभ

- व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन टिप्पणियों के माध्यम से किया जा सकता है।
- इनका प्रयोग अलग-अलग विद्यार्थियों और समूहों के मूल्यांकन के लिए किया जा सकता है।
- यह मूल्यांकन अलग-अलग अवधियों में किया जा सकता है।
- विद्यार्थी के कार्य-निष्पादन/ज्ञान का सबूत तत्काल उपलब्ध रिकार्ड के आधार पर किया जाता है।
- लंबे समय तक उसके व्यवहार को देखने और उसकी रुचि, चुनौतियों - तरीकों, प्रवृत्तियों के आधार पर किया जाता है जिससे अध्यापक बच्चे के बारे में व्यापक चित्र/विचार बना सकता है।

1.2 प्रेक्षणों के बारे में विचारणीय विषय

- अनुमान/अपना मत यूं ही न लगाएं या झट से निष्कर्ष न निकाल लें। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि जो कुछ वास्तव में देखा जा रहा है, उस पर गौर किया जाए।
- प्रेक्षक के कौशल पर निर्भर करें, जो यह तय करेगा कि 'क्या चीज़' देखी गई है।
- जिस तरीके से प्रेक्षण किया जा रहा है, उसमें संवेदनशीलता और अड़चन न आने दें।
- प्रेक्षण थोड़े-थोड़े समय बाद किया जाए, विभिन्न क्रियाकलापों के संबंध में किया जाए और अलग-अलग तरीके से किया जाए।

1.3 प्रेक्षण में कार्यान्वयन के संबंध में सुझाव

ऐसे विवरणों को दर्ज करें जिनसे क्रियाकलापों का ही पता न चलता हो अपितु इस बात का भी पता चलता हो कि जिस कार्य को वह कर रहा है, उसमें वह कैसा महसूस कर रहा है, वह उसे किस प्रकार कर रहा है और कब कर रहा है। इसमें लोगों, सामग्री और उसके कथन आदि में उसकी पारस्परिकता की गुणता का पता लगाया जाए।

बच्चे के व्यवहार के बारे में टिप्पणियां नोट करते समय उन्हें लघु कोष्ठकों में रखें, जो बाद में अनुमान पर आधारित हो सकता है।

1.4 विषयों के विभिन्न क्षेत्रों में टिप्पणियों के लिए जांच-सूची

1.4.1 अंग्रेज़ी भाषा के संबंध में टिप्पणियां करने के लिए संबंधित जांच-सूची का प्रयोग

(यथाः वाद-विवाद)

• क्या बच्चे को विषय-वस्तु का समुचित ज्ञान है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा अपना तर्क सहज रूप से रख सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा सही शब्द-योजना और उच्चारण के साथ प्रवाहपूर्ण तरीके से बोल सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा दिए गए बिंदु के प्रतिकूल बोल सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा आलोचना को सकारात्मक रूप से लेता है?	हां/नहीं

(यथाः समूह चर्चा)

• क्या बच्चा नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन करता है?	हां/नहीं
• क्या भूमिका अभिमुखी चर्चा के दौरान बच्चे को दी गई भूमिका को बच्चा निभा सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चे को विषय-वस्तु का ज्ञान है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा अपने विचार बेहतरीन तरीके से रख सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा अपने साथियों के समूह के प्रति सम्मान प्रदर्शित करता है?	हां/नहीं
• क्या उसके पास उचित संप्रेषण कौशल है?	हां/नहीं
• क्या वह पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का प्रदर्शन करता है?	हां/नहीं
• क्या वह बातचीत करते समय सही भंगिमाओं का प्रदर्शन करता है?	हां/नहीं
• क्या वह सुसंगत मुद्दे उठाता है?	हां/नहीं
• क्या वह दूसरों को अपने विचार रखने का उचित अवसर देता है?	हां/नहीं

1.4.2 जांच-सूची का प्रयोग करते हुए सामाजिक विज्ञान के संबंध में टिप्पणी

(दी गई स्थिति में समूह चर्चा)

• क्या बच्चे को स्थिति का समुचित ज्ञान है?	हां/नहीं
• क्या बच्चे को समझ है और उसके पास रचनात्मक कौशल है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा संबंधित समस्याओं और समसामयिक मुद्दों का उचित हल प्रस्तुत कर पाता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा समूह चर्चा के दौरान अपने नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन करता है और आलोचना को सकारात्मक ढंग से लेता है?	हां/नहीं

1.4.3 जांच-सूची का प्रयोग करते हुए विज्ञान के संबंध में टिप्पणी

(यथाः परीक्षण)

• क्या बच्चे को अपने आसपास की बातों का ज्ञान है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा क्रियाकलाप से अनुमान लगा लेता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा तर्कसंगत और युक्तिसंगत तरीके से सोच सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा सामान को सही ढंग से लगा सकता है?	हां/नहीं
• क्या वह परीक्षण करते समय समुचित तकनीक का प्रयोग कर सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा सामग्री और साधनों का सही प्रयोग कर सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा वांछित परिणाम प्राप्त कर सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा विश्लेषण कर सकता है और निष्कर्षों पर पहुंच सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा व्यावहारिक स्थिति में सैद्धांतिक ज्ञान का प्रयोग कर सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा मौखिक परीक्षा के दौरान ज्ञान की गहराई का प्रदर्शन करता है?	हां/नहीं
• क्या वह प्रश्नों का सही जवाब दे सकता है?	हां/नहीं

1.4.4 जांच-सूची का प्रयोग करते हुए गणित के संबंध में टिप्पणी

• क्या बच्चे को संकल्पनाओं की अच्छी समझ है?	हां/नहीं
• क्या बच्चे ने संक्षिप्तता, स्वच्छता और यथार्थता से कार्य किया है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा शब्दों की समस्या को गणितीय रूप में व्यक्त कर सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा तर्कसंगत और युक्तिसंगत तरीके से सोच सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा आंकड़ों की व्याख्या कर सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा समस्या का समाधान कर सकता है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा सही तरीके से समस्या का समाधान करता है?	हां/नहीं

2. परियोजनाएं

ये कार्य लंबे समय तक किए जाते हैं। इनमें आंकड़े एकत्र कर उनका विश्लेषण किया जाता है। यह परियोजनाएं उद्देश्य में उपयोगी होती हैं और लक्ष्य-आधारित कार्य को कक्षा कार्य और/या समूह में गृह कार्य के रूप में किया जाता है। ये मुक्त या संरचनाबद्ध हो सकती है। ये अलग-अलग या समूह-परियोजनाएं दोनो हो सकती हैं। ये पाठ्यपुस्तक से बाहर के प्रसंगों पर आधारित होती हैं और बच्चे के पर्यावरण/संस्कृति/जीवनशैली/समुदाय आधारित क्रियाकलापों से संबंधित होती हैं।

2.1 परियोजना का लाभ

- ये किसी बच्चे को स्वयं पता लगाने या कार्य करने का अवसर प्रदान करती है।
- इनसे आंकड़ों का पता लगाया जाता है, आंकड़े एकत्र किए जाते हैं, उनका विश्लेषण किया जाता है, उन्हें संगठित किया जाता है और उनकी व्याख्या की जाती है और उनका सामान्यीकरण किया जाता है।
- ये समूह में और वास्तविक जीवन की स्थिति में कार्य करने का अवसर प्रदान करती है।
- ये सामूहिक कार्य, आदान-प्रदान और एक-दूसरे से सीखने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करने में सहायक होती हैं।

2.2 परियोजना से संबंधित विषय

- परियोजना की प्रकृति और कठिनाई की स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी इसे स्वयं तय कर सकें।
- परियोजना के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री विद्यालय, आसपास या घर में उपलब्ध होनी चाहिए। इससे माता-पिता पर वित्तीय भार नहीं पड़ना चाहिए।
- प्रत्येक विद्यालय संसाधन केंद्र में जा सकता है, जो स्थानीय रूप से सामग्री उपलब्ध करेगा।

2.3 परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए सुझाव

- परियोजना के विषय के संबंध में विद्यार्थी द्वारा ही निर्णय लिया जाना चाहिए/चयन किया जाना चाहिए, योजना बनाई जानी चाहिए और आयोजित की जानी चाहिए। इसमें अध्यापक एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगा।
- समूह परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे बच्चे मिल-जुलकर कार्य कर पाएंगे, अनुभव को बांटेंगे और एक-दूसरे से सीखेंगे।
- विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए, परियोजनाओं में समूह में पता लगाने, जांच करने और कार्य करने का अवसर दिया जाता है।
- बच्चे सामग्री का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से करके और उपयोग के बाद उन्हें ठीक से रखने के लिए प्रोत्साहित हो सकते हैं।

2.4 अंग्रेजी में परियोजनाओं के लिए जांच-सूची

• क्या बच्चे ने पर्याप्त अनुसंधान किया और संगत विषय-वस्तु एकत्र की है?	हां/नहीं
• क्या उसके कार्य से उसकी रचनात्मकता और सौंदर्यपरक कौशल का पता चलता है?	हां/नहीं
• क्या प्रस्तुतीकरण से इस बात का पता चलता है कि उसे संकल्पना की समझ है?	हां/नहीं

2.4.2 सामाजिक विज्ञान में परियोजनाओं के लिए जांच-सूची

• क्या बच्चे का परियोजना की विषय-वस्तु के बारे में ज्ञान है?	हां/नहीं
• क्या बच्चा सौंदर्यपरक कौशल का प्रदर्शन करता है?	हां/नहीं
• क्या वह अपनी परियोजना की संकल्पना को समझता है?	हां/नहीं
• क्या वह परियोजना का कार्य करते समय किसी पद्धति का प्रयोग करता है?	हां/नहीं
• क्या उसने परियोजना के संबंध में कोई अनुसंधान कार्य किया है?	हां/नहीं
• क्या उसने कोई पुस्तक या समाचारपत्र देखा है?	हां/नहीं
• क्या उसने इंटनरेट से सहायता ली है?	हां/नहीं
• क्या उसने इस परियोजना के बारे में कोई साक्षात्कार आयोजित किया है?	हां/नहीं

• क्या बच्चे ने यह परियोजना तैयार करते समय समुचित सामग्री का उपयोग किया है?	हां/नहीं
• क्या उसने परियोजना में कोई दृश्य सामग्री उपलब्ध की है, यथा, नक्शे, आरेख, ग्राफ़, चित्र?	हां/नहीं
• क्या परियोजना के प्रति बच्चे का दृष्टिकोण मौलिक है?	हां/नहीं
• क्या यह परियोजना वास्तविक जीवन की स्थिति में सुसंगत है?	हां/नहीं

2.4.3 विज्ञान में परियोजनाओं के लिए जांच-सूची

• क्या उसे संकल्पना की समझ है?	हां/नहीं
• क्या विषय-वस्तु सुसंगत है?	हां/नहीं
• क्या बच्चे ने समुचित सामग्री और पद्धति का उपयोग किया है?	हां/नहीं
• क्या वह परियोजना परीक्षण या सर्वेक्षण या इतिवृत्त अध्ययन पर आधारित है?	हां/नहीं
• क्या इसमें परिणाम की समुचित व्याख्या की गई है?	हां/नहीं
• क्या यह कार्य वास्तविक जीवन में लागू होता है?	हां/नहीं

2.4.4 गणित में परियोजनाओं के लिए जांच-सूची

• क्या परियोजना के प्रति दृष्टिकोण मौलिक है?	हां/नहीं
• क्या विषय-वस्तु और सूचना प्रमाणिक और सुसंगत है?	हां/नहीं
• क्या परियोजना का प्रस्तुतीकरण सुंदरता के साथ किया गया है?	हां/नहीं
• क्या परियोजना के समर्थन में उचित लेख लिखा गया है?	हां/नहीं
• क्या परियोजना के परिणामों की समुचित व्याख्या की गई है?	हां/नहीं
• क्या परियोजना में यथार्थता को स्पष्ट करने में मदद मिली है?	हां/नहीं
• क्या परियोजना की विषय-वस्तु यथार्थ है?	हां/नहीं
• क्या यह परियोजना पर्यवेक्षण या सर्वेक्षण पर आधारित है?	हां/नहीं

३. प्रश्न

बच्चे के ज्ञान, सोच, छवि और भावनाओं का पता लगाने का सबसे उत्कृष्ट तरीका क्या है? शिक्षार्थी का मूल्यांकन उससे प्रश्न पूछकर और उसके सामने समस्याएं रखकर किया जा सकता है। दिए गए उत्तरों के संबंध में प्रश्न बनाने की क्षमता भी शिक्षण का उचित परीक्षण है। सकारात्मक मूल्यांकन करने के रूप में अध्यापक शिक्षण के दौरान उसके शिक्षण की जानकारी या बच्चे के सामने आने वाली कठिनाइयों को बच्चे से पूछकर कर सकता है कि बच्चा उनके बारे में क्या सोचता है।

३.1 अच्छे प्रश्न की विशेषताएं

३.1.1 उद्देश्य पर आधारितः

प्रश्न पूर्वनिर्धारित उद्देश्य पर आधारित होने चाहिएं और इन्हें इस तरीके से तैयार किया जाना चाहिए कि इससे उद्देश्य का प्रभावी परीक्षण हो सके।

३.1.2 अनुदेशः

अनुदेश के माध्यम से उसे कार्य विशेष सौंपा जाना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए समुचित निर्देशात्मक शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए और वाक्य संरचना की स्थिति का उल्लेख किया जाना चाहिए।

३.1.3 विषय-क्षेत्रः

इसमें उत्तर की सीमा और क्षेत्र (उत्तर की लंबाई) का उल्लेख किया जाना चाहिए, जो अनुमानित समय और उसके लिए तय अंकों के अनुसार हो।

३.1.4 विषय-वस्तुः

प्रश्न उसी विषय क्षेत्र के अंतर्गत होना चाहिए जिसके संबंध में परीक्षण किया जाना है।

३.1.5 प्रश्न का रूपः

प्रश्न का रूप उस उद्देश्य और विषय-वस्तु पर निर्भर करता है, जिसकी परीक्षा ली जानी है। कतिपय योग्यताओं की परीक्षा देने के लिए कई तरीके बेहतर होते हैं।

३.1.6 भाषाः

अच्छा प्रश्न स्पष्ट, संक्षिप्त और दुविधारहित भाषा में तैयार किया जाना चाहिए। इसकी भाषा विद्यार्थी की पहुंच में होनी चाहिए।

३.1.7 कठिनाई का स्तरः

प्रश्न उस विद्यार्थी को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाना चाहिए जिससे यह प्रश्न पूछा जाना है। प्रश्न की कठिनता परीक्षा की क्षमता, परीक्षण के विषय-क्षेत्र और उत्तर देने के लिए उपलब्ध समय पर निर्भर करती है।

3.1.8 शक्ति का अंतरः

अच्छे प्रश्न में मेधावी विद्यार्थियों और अन्य विद्यार्थियों को भी ध्यान में रखा जाता है।

3.1.9 उत्तर की सीमा का क्षेत्र पुनः निर्धारित करनाः

प्रश्न की भाषा इतनी स्टीक और संक्षिप्त होनी चाहिए कि उससे संभावित उत्तर की सीमा या परिभाषा स्पष्ट हो सके।

3.1.10 मूल्यबिंदुः

पूरे प्रश्न के लिए और उसके उप-भागों के लिए मूल्यबिंदु या अंकों का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए।

3.2 पूरक प्रकार के प्रश्नः

पूरक प्रकार के प्रश्नों में विद्यार्थियों को उत्तर देना होता है। यह उत्तर एक शब्द में भी हो सकता है और कई पैराग्राफों में भी। इस प्रकार के प्रश्नों को 'स्वच्छ उत्तर' प्रश्न भी कहा जाता है। पूरक प्रकार के प्रश्नों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - निबंध प्रकार, संक्षिप्त उत्तर प्रकार, बहुत संक्षिप्त उत्तर प्रकार और खाली स्थान भरने का प्रकार।

3.3 निबंधात्मक प्रश्नः

निबंध प्रकार के प्रश्न से आशय है ऐसा लिखित उत्तर जो एक या दो पृष्ठों में हो। विद्यार्थियों को इस बात की छूट होती है कि वे उत्तर की शब्दावली, उसकी लंबाई और उनके संयोजन अपने तरीके से कर सकते हैं। ज्ञान को मापने के लिए प्रयोग किए जाने वाले निबंध प्रकार के प्रश्नों में अंतर किया जाना चाहिए। निबंध प्रकार के प्रश्नों का उद्देश्य यह है कि बच्चों का भाषाओं में लिखने का परीक्षण किया जाए। इसे निबंध परीक्षा कहा जाता है।

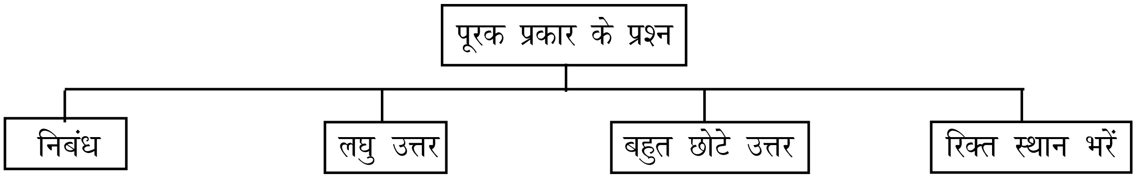

ऐसे कई प्रकार की योग्यताएं हो सकती हैं, जिनकी अन्य तरीके से प्रश्न पूछकर परीक्षा नहीं ली जा सकती है। अपितु निबंध प्रकार के प्रश्न पूछकर ही परीक्षा ली जा सकती है। ये क्षमताएं इस प्रकार हैं:

- अर्जित ज्ञान से संगत तथ्य का चयन करना।
- ज्ञान के विभिन्न पहलुओं के बीच उनकी पहचान करना और उनके आपस का संबंध निर्धारित करना।
- एकत्रित की गई सूचना का प्रयोग करके उसके प्रमाण का जायजा लेना।

- अनुमान लगाकर सूचनाओं को व्यवस्थित करना, उनका विश्लेषण करना, तथ्यों की व्याख्या करना और अन्य प्रकार की सूचनाएं एकत्र करना।
- दी गई समस्या के बारे में अपने व्यक्तिगत और मूल दृष्टिकोण को व्यक्त करना।
- तथ्यों, आंकड़ों और उपयुक्त तर्कों से अपने विचार को बनाए रखना।
- दी गई स्थिति में उपलब्ध सूचना की पर्याप्तता, यथार्थता और सुसंगतता की जांच करना।
- समस्या और मुद्दे के प्रति आंतरिक अभिवृत्ति का प्रदर्शनकरना।
- स्थूल और सूक्ष्म दोनों स्तरों पर समस्या को समझना।
- दी गई समस्या का समाधान करने के लिए नया दृष्टिकोण बताना, तैयार करना और उसका सुझाव देना।

3.3.1 निबंधात्मक प्रश्नों को तैयार करनाः

निबंधात्मक प्रकार के प्रश्नों का आरंभ सामान्यतः चर्चा, व्याख्या, मूल्यांकन, परिभाषा, तुलनात्मक व विश्लेषण से होता है। निबंध प्रकार के प्रश्न अच्छे होते हैं जब उनका समूह छोटा व समय सीमा के अंतर्गत परीक्षा के लिए तैयार किया जाता है। ये लिखित अभिव्यक्ति के लिए भी उचित होते हैं।

3.3.2 कुछ सामान्य प्रश्न इस प्रकार हैंः

- रेतीली मिट्टी जल को क्यों नहीं रोकती है? (प्रश्नात्मक)
- चार ज्ञानेंन्द्रियों के नाम बताइए एवं उनके चित्र बनाइये? (कथनात्मक)

दूसरे उदाहरणः

1. कारण बताइये कि रूजवेल्ट ने 1932 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव जीता और इसमें समावेशन का तरीका इस प्रकार हैः
2. रूजवेल्ट का राष्ट्रपति का चुनाव जीतने का महत्त्वपूर्ण कारण था हूवर की अलोकप्रियता। क्या आप सहमत हैं? अपना उत्तर स्पष्ट करें।

इनमें पहला प्रश्न रटे-रटाए उत्तर पर बल देता है न कि अपेक्षित विचारों, विश्लेषण और मूल्यांकन पर। दूसरा प्रश्न सबको महत्त्व देता है, न कि कुछ प्रतिभाशालियों को।

3.4 लघु प्रश्न-उत्तर

निबंधात्मक प्रश्नों में वस्तुनिष्ठा और विश्वसनीयता की कमी होती है। इसलिए निबंध प्रकार के प्रश्नों में संक्षिप्त सार-संक्षेप और स्पष्टता नहीं होती है। लघु प्रश्न-उत्तर दो चरम स्थितियों के मध्य-मार्ग है। यदि इसके खांचे को भली-भांति समझ लें तो वस्तुनिष्ठ और निबंध प्रकार के प्रश्न दोनों ही लाभदायक हैं।

- संसार के सात अजूबों में से पिरामिड को एक अजूबे के रूप में क्यों माना गया? (प्रश्नात्मक)।
- पौधे और जानवरों में चार अंतर बताइए (कथनात्मक)।

3.4.1 अति लघु प्रश्न-उत्तर

- लघु प्रश्नों का प्रयोग वार्षिक/यूनिट परीक्षाओं में किया जा सकता है।
- लगभग सभी वस्तुनिष्ठ अध्ययनों में इसका प्रयोग किया जा सकता है।
- यह छात्रों में सही तथ्यों के संगठन और समझने के विकास में सहायता करता है।
- इस प्रकार के प्रश्नों की अपेक्षा अधिक वस्तुनिष्ठता और विश्वसनीयता होती है।
- इस तरह के प्रश्न अधिक से अधिक पाठ्यक्रम को शामिल करने में सहायता करेंगे क्योंकि कुछ निबंधात्मक प्रश्नों के स्थान पर अधिक लघु-प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इससे प्रश्नपत्र की वैधता में भी सुधार आएगा।

3.5 अति लघु प्रश्न-उत्तर

- अति लघु प्रश्न-उत्तर वे हैं जिनके द्वारा निश्चित परीक्षा बिंदु जाना जाता है और वस्तुनिष्ठता को चिह्नित किया जा सकता है।
- इन प्रश्नों से ज्यादातर विषय-वस्तु के मूल को समझा जा सकता है और अधिक विश्वसनीयता व वैधता को बनाया जा सकता है।
- परीक्षार्थी से शब्द, पदबंध अथवा अलंकार और वाक्य पूछकर प्रश्नों के उत्तरों को जाना जा सकता है।
- इससे उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दिया जा सकता है।
- इनके उत्तर देने में ज्यादा से ज्यादा एक से दो मिनट लगेंगे और आधा से 1 नंबर दिया जा सकेगा।
- अति लघु प्रश्न-उत्तरों का प्रयोग सभी विद्यालयी विषयों में किया जा सकता है।
- बहुत प्रकार के अति लघु प्रश्न-उत्तरों में से कुछ नीचे दिए गए हैंः

3.5.1 रिक्त स्थान पूर्ति प्रकारः यह भाषा ज्ञान में अभिव्यक्ति को जानने में सहायक होगा।

प्रश्नः मैं बहुत परेशान था..........

3.5.2 समानार्थक प्रकार

प्रश्नः चूना संगमरमर कोयला

3.5.3 स्थानीय प्रकारः भूगोल में नक्शा कौशल को मापने के लिए इन प्रश्नों का प्रयोग किया जा सकता है।

प्रश्नः नक्शे में सिडनी, क्लोराडो, रेगिस्तान दर्शाएं।

भाषा में अनुच्छेदों में दिए गए विचार, शब्द, वाक्य, समानार्थक व विलोम शब्दों को चुनने के लिए भी इनका प्रयोग किया जा सकता है।

रूपांतरण प्रकारः इस प्रकार का प्रयोग केवल भाषा को जांचने के लिए होता है। इस तरह के प्रश्नों के द्वारा कथ्य, वाच्य, संश्लेषण व वाक्य-रूपांतरण आदि को जांचा जा सकता है।

3.6 चित्रात्मक

प्रश्नः नीचे दिए गए लोगों का क्या व्यवसाय है?

	व्यक्ति	**व्यवसाय**
क.	बढ़ई	चित्र
ख.	कुम्हार	
ग.	नर्स	

3.7 निर्वचनात्मक करनाः

3.7 निर्देशः बस की समय-सारणी को पढ़े और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर देंः

हिमाचल प्रदेश सड़क परिवहन बस सेवा समय सारणी

मार्ग	दिल्ली से जाने का समय	दूसरी तरफ से जाने का समय	दूरी	किराया (रुपयों में)
दिल्ली-बैजनाथ	1815	1730	539	77.00
दिल्ली-चंबा	2000	1400	626	84.00
दिल्ली-धर्मशाला	2145	1930	513	71.50

- बस की समय-सारणी का शीर्षक क्या है?
- समय-सारणी में कितने मार्गो की सूची दी गई है?

3.7.2 रिक्त स्थान प्रकार

इस प्रकार के प्रश्नों में एक कथन दिया जाता है जिसमें कि एक शब्द या दो शब्दों को उनके स्थान से हटा दिया जाता

है और छात्रों को इन रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरने को कहा जाता है। इसका एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

- सभी प्राणी .... प्राप्त करने के लिए सांस लेते हैं। (ऊर्जा)

3.8 चयनात्मक प्रकार के प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को विकल्प के रूप में उत्तर दिए जाते हैं, जिनमें से उन्हें सही उत्तर का चयन करना होता है। इन प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ प्रश्न कहा जाता है। ये विकल्प के तौर पर बारी-बारी से होते हैं, इनके कई प्रकार होते हैं, यथा, विकल्पात्मक उत्तर, मिलान, बहु विकल्पात्मक आदि।

चयन प्रकार के प्रश्न सभी वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न ही होते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में एक सही उत्तर दिया होता है, जिसे छात्रों को दिए गए विकल्पों में से चुनकर बताना होता है। क्योंकि विद्यार्थियों को वस्तुनिष्ठता के आधार पर उत्तर चुनना होता है, अतः इस प्रकार के प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ प्रश्न कहा जाता है। इसका अर्थत यह हुआ कि परीक्षार्थी को उतने ही नंबर मिलेंगे, भले ही कोई भी उनका मूल्यांकन करे। इस प्रक्रिया से वह यंत्रवत् अंक प्राप्त कर सकता है। ये उस स्थिति में लोकप्रिय हैं जब बड़ी संख्या में उम्मीदवार परीक्षा देते हैं। नीचे वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों के विभिन्न रूप दिए गए हैंः

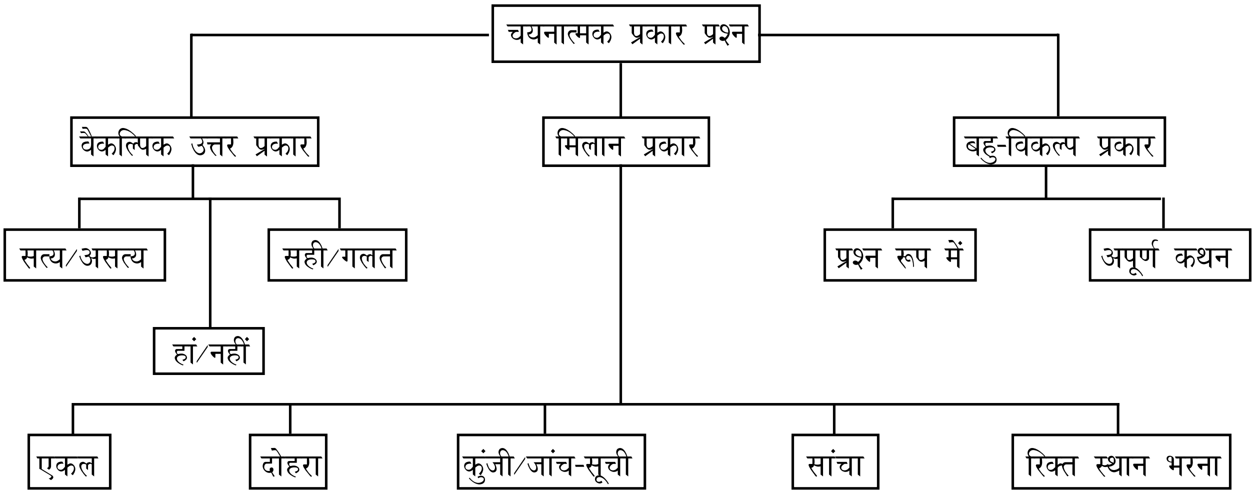

3.8.1 वैकल्पिक उत्तर प्रकारः

इस तरह के प्रश्नों में छात्रों को विकल्प के रूप में दिए गए दो में से किन्हीं एक सही उत्तर का चयन करना होता है। विभिन्न प्रकार के वैकल्पिक प्रश्न-उत्तर इस प्रकार हैंः

क) सत्य-असत्य और हां-नहीं प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों में एक कथन दिया जाता है और छात्रों को यह बताना होता है कि कथन सत्य है या असत्य। सत्य/असत्य वाले प्रश्न सरलता से बनाए जा सकते हैं और आसानी से निरीक्षित किए जा सकते हैं।

ये विद्यार्थियों की समझ को भली-भांति विश्वसनीय ढंग से मापते हैं। विशेष रूप से कक्षा में ली जाने वाली परीक्षाओं में।

ख) कथन अगर सत्य है तो 'स' लिखें, यदि असत्य है तो 'अ' लिखें

- जानवर और पौधे दोनों जीवनपूर्ण हैं।
- सभी जानवर छोटे जानवरों को खाते हैं।

ग) सही/गलत प्रकार व हां/नहीं प्रकारः

सही कथन के समक्ष (✓) का चिह्न लगाएं, गलत के सामने (×) का

- द्रव का निश्चित आकार नहीं होता।
- बर्फ पानी से हल्की होती है।

ख) मिलान प्रकारः

मिलान प्रकार के प्रश्न दो खाने में होते हैं। शब्द व कथन एक खाने में दिए जाते हैं, जिनका मिलान दूसरे खाने में दिए गए उत्तरों से करना होता है। मिलान प्रकार के प्रश्न नीचे दिए गए हैं।

ग) एकल मिलानः

इस प्रकार के प्रश्नों में दो खाने दिए जाते हैं। बाएं खाने में प्रश्न पूछे जाते हैं और दूसरे में उत्तर दिया जाता है। छात्रों से पूछे गए प्रश्नों का मिलान करके उत्तर देना होता है।

घ) निर्देशः

खाने क और खाने ख में दिए गए शब्दों का मिलान करें (सरल)।

	खाना (क)	**खाना (ख)**
क)	सुबह	तारे
ख)	रात	24 घंटे
ग)	दिन	सूर्य का प्रकाश

ड.) निर्देशः

खाने (क) में दिए शब्दों का मिलान खाने (ख) में दिए अर्थों के अनुसार करें। (कठिन)

क	ख
नाई	ब्रेड/बिस्कुट बनाने वाला
बैरा	स्थान की देखरेख करने वाला
बेकर	लोगों के बाल काटने वाला
वास्तुविद	होटल में खाना परोसने वाला
रखवाला	इमारतों व पुलों का रेखांकन करने वाला

च) दोहरा मिलानः

इस प्रकार के प्रश्नों में दो क्षेत्रों की जानकारी के लिए एक सूची दी जाती है, जिसमें दो के बजाय तीन खानों का प्रयोग किया जाता है। मध्य खाने में उत्तर देना होता है और बाएं व दाएं दोनों तरफ उसके उत्तर दिए होते हैं।

यहां तीन खाने दिए गए हैं। दूसरे खाने में चार जानवरों की सूची दी गई है, जबकि पहले खाने में जानवरों का व्यवहार और तीसरे खाने में भोजन के प्रकार हैं, जिन्हें वे सामान्यतः खाते हैं।

खाने दो और तीन से सही उत्तर चुनें।

खाना 1 (व्यवहार)	**खाना 2 (जीव-जंतु)**	**खाना 3 (भोजन)**
1. दिन का प्रकाश पसंद करते हैं लेकिन रात में सक्रिय होते हैं	क) चूहा	क. प्राणी
2. दिन का प्रकाश पसंद करते हैं लेकिन दिन में सक्रिय होते हैं	ख) कीड़ा	ख. फूलों का मकरंद
3. दिन का प्रकाश पसंद नहीं करते	ग) घर	ग. जानवरों का मांस
4. दिन का प्रकाश पसंद नहीं करते लेकिन रात और दिन दोनों में सक्रिय रहते हैं	घ) छिपकली	घ. पौधों के पत्ते
		ड. रोटी
		च. कार्बनिक वस्तु का भार
		छ. लकड़ी
		ज. सांप

छ) कुंजी सूची और जांच-सूची

इसमें छात्रों को कुंजी के रूप में दो/तीन विकल्प दिए जाते हैं जिसमें उसे कुंजी सूची के आधार पर उत्तर देना होता है।

नीचे दिए गए तत्त्वों के बारे में बताइये कि कौन-सा ठोस (ठो), द्रव (द्र), गैस (गै) हैः

विषय	**स्थिति**
जल	
पारा	
वाष्प	
लोहा	

ज) सांचा मदेंः

यह दोहरे मिलान वाले प्रकार के विस्तार के रूप में होते हैं, जिसमें किसी प्रेरक के लिए दो से अधिक उत्तर दिए जाते हैं। इस प्रकार के पूछे गए प्रश्न खड़ी लाइनों में होते हैं और उत्तर खाने में देना होता है। छात्रों को प्रत्येक खाने को जांचकर उत्तर देना होता है।

विटामिन और उनकी कमी से होने वाले रोग

विटामिन	अधिक रक्त प्रवाह (1)	बेरी-बेरी (2)	सूखा रोग (3)	रक्ताल्पता (4)	खुजली (5)	रतौंधी (6)
ए						
बी$_1$						
बी$_{12}$						
सी						
डी						
के						

रिक्त स्थान प्रकारः

- एक .... बोल सकता है (कौआ/तोता)

(i) बहु-विकल्पात्मक

सभी वस्तुनिष्ठात्मक प्रकार के प्रश्नों में बहुविध चयनात्मक प्रश्न बहुत उपयोगी प्रयोग होते हैं। इस तरह के प्रश्नों में एक अधूरा कथन दिया होता है और उसके लिए चार/पांच वैकल्पिक उत्तर दिए होते हैं। विकल्पों में से छात्रों को सही उत्तर देना होता है। इसमें बहु-वैकल्पिक प्रश्न दो प्रकार के होते हैं।

(i) प्रश्न रूपः

(परीक्षण अनुदेशात्मक वस्तुनिष्ठ - व्याख्या)

क) इनमें से कौन-सी बीमारी छूत की बीमारी नहीं है?

1. चेचक
2. हृदयघात
3. मलेरिया
4. हैजा

ख) अधूरे कथन के रूप मेंः

(वस्तुनिष्ठ अनुदेशनात्मक परीक्षणः संबंधों की पहचान कीजिए)

व्हेल और चमगादड़ दोनों में निम्नलिखित बातें समान होती हैंः

1. बाल
2. पंख
3. अंग
4. गर्दन

ऊपर चर्चित प्रश्नों के इस रूप का प्रयोग विभिन्न परीक्षणों और छात्रों द्वारा सफलता प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यदि परीक्षा में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया जाए तो यह निश्चित तौर पर वस्तुनिष्ठ और संतोषजनक होगा। दूसरी तरफ विश्वसनीय और विधिमान्य तरीका भी होगा। यह सही है कि इन विभिन्न रूपों की भी कुछ सीमा है। इसलिए रूपों का चयन करते समय अध्यापक को सभी पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है ताकि इन रूपों का प्रयोग सही तरीके से हो सके।

4. जांच-सूची

4.1 जांच सूची के लाभ

- कार्यान्वियन में शीघ्र और सरल।
- विशिष्ट उद्देश्य के बारे में विशिष्ट सूचना देती है।
- इस प्रवृत्ति का पता चलता है कि बच्चे और बच्चों के समूह ने कैसे और कब कौशल अर्जित किए।

4.2 जांच-सूची से सम्बद्ध कुछ तथ्य

- कौशल के सूचक के रूप में सीमित सूचना।
- विभिन्न स्थितियों में बच्चे के उत्तर का सूचक नहीं होता है या उत्तर के लिए विशेष उदाहरण ही उपलब्ध हो पाते हैं।
- प्रसंग के बारे में सूचना नहीं दी जाती है।
- विशिष्ट मदों की संख्या के कारण कई बार यह सीमित हो सकता है।

4.3 जांच-सूची

टिप्पणियों का कॉलम जोड़ें ताकि जांच-सूची में चिह्नित करने के लिए सूचना में मूल्य जोड़ा जा सके।

इस साधन का प्रयोग मूल्यांकन के अन्य तरीकों के साथ किया जाए।

यदि अन्यों के द्वारा तैयार किया गया है तो यह सूची उस उद्देश्य के अनुकूल नहीं हो सकती है, जो अध्यापक के रूप में मन में है या जो आप किसी समूह के लिए प्रयोग में लाना चाहते हो।

मूल्यांकन के विशेष पहलू पर ध्यान केंद्रित करना निष्कर्ष निकालने विशेषतः व्यवहार/कार्य/प्रक्रिया/परिणाम/दृष्टिकोण/समस्या का पता लगाने का उत्कृष्ट तरीका है।

4.3.1 जांच-सूची के उदाहरण

जीवन-कौशल का मूल्यांकन करने के लिए जांच-सूची का क्रम नीचे दिया जा रहा हैः

चिंतन कौशल

- क्या विद्यार्थी कक्षा क्रियाकलापों में सृजनशीलता का प्रदर्शन करता/करती है? क्या वह चुनौतियों को उत्साह से स्वीकार करता/करती है?
- क्या वह नए विचार या नई संकल्पना देने की कोशिश करता/करती है और परिस्थितिजन्य स्थितियों से बाहर जाने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह सौंपे गए कार्य से संबंधित प्रश्न पूछता/पूछती है।
- क्या वह सौंपे गए कार्य से बाहर की बातों के बारे में असंगत प्रश्न पूछकर संदेह पैदा करता/करती है?
- क्या वह दूसरों की सहायता करने की कोशिश करता/करती है या समूह क्रियाकलापों में अन्यों को अभिप्रेरित करता/करती है।

- क्या वह विशेष कार्य को स्वेच्छा से करने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह एक ही क्रियाकलाप को विभिन्न तरीकों से करने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह निर्धारित सीमा से बाहर सोचना पसंद करता/करती है?
- क्या वह नई स्थितियों में ज्ञान और कौशल को लागू करने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह कार्य शुरू करने से पहले उसके सभी संभावित विकल्पों के बारे में सोचता/सोचती है?

सामाजिक कौशल - जांच-सूची

- क्या वह समूह कार्य के दौरान ऐसे धैर्य का प्रदर्शन करता/करती है कि अपना काम धीरे से करने वाले शिक्षार्थी भी अपना कार्य पूरा कर सकें?
- क्या वह अपने ऐसे सहपाठियों की मदद करने की कोशिश करता/करती है, जो अपना कार्य धीमी गति से करते हैं या कार्य करने में असमर्थ हैं?
- क्या वह दूसरों के विचारों और गुणों की सराहना करता/करती है?
- क्या वह अन्य लोगों के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान करने में सहजता महसूस करता/करती है?
- क्या बच्चा चाहता है कि हमेशा उसकी सराहना की जाए?
- क्या वह उन गलतियों को ठीक करने के लिए अध्यापक के पास आता/आती है और उनसे उन गलतियों के बारे में पूछता/पूछती है जो गलतियां अध्यापक द्वारा उसके कार्य में बताई गई हैं?
- क्या वह आंख मिलाने में सहजता महसूस करता है?
- क्या विद्यार्थी अपनी बात कहकर/अपनी राय देकर/या बिना मांगे सलाह देकर कार्य में बाधा डालता/डालती है।
- क्या वह अशिष्ट भाषा बोलकर कार्य की व्यवस्था के नियमों को तोड़ने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह नकारात्मक व्यवहार का प्रदर्शन करने की कोशिश करता/करती है और दूसरों को अप्रसन्न करता/करती है।

संवेगात्मक कौशल - जांच-सूची

- क्या किसी क्रियाकलाप/प्रतियोगिता के बारे में बच्चा प्रायः यह कहता है कि 'मैं कभी नहीं जीतूंगा/जीतूंगी, मैं इतना खुशकिस्मत कहां?
- क्या वह समूह कार्य के दौरान अपने क्षमता के अनुसार क्रियाकलाप/कार्य का चयन करता/करती है?

- क्या वह उस समय सहपाठियों पर चीखता है जब वह गुस्से में हो या उसके कार्य में बाधा डाली जाए?
- क्या वह दुबारा उस कार्य को करने की कोशिश करता/करती है यदि पहले प्रयास में वह सफल नहीं हो पाता/पाती है?
- क्या वह नियमित अभ्यास करके अपनी कमज़ोरियों में सुधार करने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह तनाव की स्थिति में उससे निकलने का प्रयास करता/करती है?
- क्या वह तनाव की स्थिति में पढ़ना, बागवानी करना या खेलना जैसे कुछ स्वस्थ क्रियाकलाप करने की कोशिश करता/करती है?
- क्या वह चर्चा के दौरान तर्क-वितर्क करने लगता/लगती है?
- क्या वह कक्षा/विद्यालय की व्यवस्था या अनुशासन के प्रति अनादर प्रदर्शित करता/करती है?

5. विवरण

विद्यार्थी के कुछ समय के कार्य का नमूना एकत्र करना। यह नमूना दिन-प्रतिदिन के कार्य से भी किया जा सकता है या शिक्षार्थी के बेहतरीन कार्य से भी किया जा सकता है?

5.1 विवरण का लाभ

- संचित रिकार्ड उपलब्ध करें। इस प्रक्रिया में यह दिखाएं कि किस प्रकार कौशल और ज्ञान का विकास होता है।
- इससे विद्यार्थी अपने अधिगम और प्रगति का दूसरों को प्रदर्शन कर सकता/सकती है।
- क्या बच्चा अधिगम और मूल्यांकन में सक्रिय प्रतिभागी बनता है?

5.2 विवरण संबंधी

- विवरण में रखे जाने वाले चयनित कार्य का विशेष कारण होना चाहिए।
- कार्य के सभी कागज़-पत्रों/मदों को शामिल नहीं करना होता है। इससे अव्यवस्था हो जाएगी।

5.3 विवरण के कार्यान्वयन संबंधी सुझाव

- विवरण की विषय-वस्तु के चयन में विद्यार्थी की प्रतिभागिता को प्रोत्साहित किया जाए और विषय-वस्तु के चयन के मापदंड तय किए जाएं।
- बच्चे के विकास के साथ-साथ उसके विवरणों को भी अद्यतन किया जाता रहे।

- जिन बातों का प्रदर्शन किया जाना है, उनके साथ विवरण संबंधी सामग्री चिंतापूर्वक रखी जानी चाहिए।
- सहज संदर्भ के लिए विषय-वस्तु पर स्पष्ट 'लेबल' लगाना चाहिए और उस पर संख्या अंकित की जानी चाहिए।

6. वर्णनात्मक रिकार्ड

अध्यापक/बच्चे के साथी शिक्षार्थी के अनुभव का वर्णनात्मक विवरण लिखें। इससे बच्चे के जीवन-कौशल के प्रत्येक पहलू का पता लगाने में उन्हें अवसर दिया जाता है और वे शिक्षार्थी की और अधिक संपूर्ण छवि का सृजन करने के लिए उसके पिछले विवरण के साक्ष्य के रूप में उसका उपयोग कर सकते हैं और इसे संचयी रिकार्ड तैयार करने में उपयोग में लाया जा सकता है।

7. फोटोग्राफ

इससे शिक्षार्थी के अनुभवों का उस समय का एक दस्तावेज तैयार होता है जब वे कार्य कर रहे हों। यह फोटोग्राफ तैयार उत्पाद, प्रोजेक्ट मॉडल्स आदि के भी हो सकते हैं।

7.1 फोटोग्राफ के लाभ

- घटनाओं की सही याद दिलाता है।
- इससे बच्चे की सोच और चर्चा करने के बारे में गहराई में पता चलता है।
- इससे परिवार के साथ सूचना का आदान-प्रदान करने में सुविधा होती है।
- इससे बच्चे के संवेगात्मक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलू के विकास की गहरी जानकारी मिलती है।

7.2 फोटोग्राफ संबंधी पहलू

- सौंदर्यपरक गुण आलोचनात्मक नहीं हो सकता है।
- अपनी टिप्पणियां और सुझाव देकर कैमरे के सामने बच्चे को आत्म-बोध न होने दें।

7.3 फोटोग्राफ के कार्यान्वयन के लिए सुझाव

- किसे रिकार्ड करना है, इसके चयन में सावधानी बरतें। बाद में इसका विश्लेषण करना आवश्यक है।
- बच्चों को उपस्करों की जानकारी और उनके प्रति सहजता का अवसर देना एक अच्छी सोच है।

8. कलात्मक प्रयासों की पेंटिंग और अन्य उदाहरण

शिक्षार्थी की क्षमता, विचार और अभिवृत्ति का साक्ष्य प्रस्तुत करें। तैयार उत्पाद, परियोजना मॉडल आदि को बच्चे के विवरणों में शामिल किया जा सकता है ताकि शिक्षार्थी की क्षमता का साक्ष्य प्रस्तुत किया जा सके।

9. दृश्य

दृश्य शिक्षार्थी के उन अनुभवों का दस्तावेज प्रस्तुत करता है जब वह कार्य/परियोजना में कार्य कर रहा होता/होती है। ये दृश्य तैयार उत्पाद, परियोजना के मॉडलों आदि के भी हो सकते हैं।

9.1 दृश्यों के लाभ

- इसमें भाषा और उसके प्रयोग की यथार्थता को दर्शाया जाता है।
- संचलन और ध्वनि से इसमें हो रहे कार्य की समझ भी पैदा की जाती है।
- इससे विद्यार्थियों के स्पष्टीकरण को समझने में मदद मिलती है जिससे सोच के विभिन्न तरीकों का पता चलता है।

9.2 दृश्यों से संबंधित पहलू

- इनका विश्लेषण करने में काफी समय लगता है।
- बच्चे कभी-कभार कैमरे के सामने "कार्य" करते हैं।
- यह बहुत खर्चीला कार्य है क्योंकि इसमें तकनीकी विशेषज्ञता अपेक्षित है।

9.3 वीडियो के कार्यान्वयन के लिए सुझाव

- किसे रिकार्ड करना है, इसके चयन में सावधानी बरतें। बाद में इसका विश्लेषण करना आवश्यक है।
- बच्चों को उपस्करों की जानकारी और उनके प्रति सहजता का अवसर देना एक अच्छी सोच है।

10. 'रेटिंग' माप

'रेटिंग' के जरिए एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का मूल्यांकन करता है। रेटिंग शब्द का तात्पर्य है किसी स्थिति, वस्तु या चरित्र के बारे में अपनी राय व्यक्त करना या निर्णय देना। राय हमेशा सामान्यतः माप या मूल्यांकन द्वारा व्यक्त की जाती है। रेटिंग की तकनीक वह तरीका है, जिसके द्वारा ऐसे निर्णय की मात्रा आंकी जा सकती है।

रेटिंग माप एक ऐसा तरीका है, जिसके जरिए कमियों के बारे में व्यवस्थित तरीके से राय व्यक्त की जाती है। यह रेटिंग माता-पिता, अध्यापक किसी साक्षात्कार बोर्ड और किसी निर्णायक या स्वयं के द्वारा भी किया जा सकता है।

रेटिंग माप की दो विशेषताएं हैंः

- उस विशेषताओं का विवरण, जिनका माप लिया जाना है, और
- कुछ ऐसे तरीके, जिनके जरिए उस मात्रा, बारंबारता या प्रत्येक मद के माप का उल्लेख किया जाता है।

इससे शिक्षार्थी की उपलब्धियों के स्तर का तुलनात्मक रिकार्ड रखा जाता है और प्रति उत्पादी हो सकता है। इनका प्रयोग बुद्धिमत्ता और विवेकपूर्ण तरीके से किया जाना चाहिए।

11. पिछले विवरण का रिकार्ड

पिछले विवरण का रिकार्ड बच्चे के उस व्यवहार का विवरण होता है, जिसे पहले देखा गया है। इसमें आचरण की कुछ महत्वपूर्ण बातों का रिकार्ड होता है, बच्चे के जीवन की घटनाओं का रिकार्ड होता है, विद्यार्थी के कार्य करते हुए लिए गए चित्रों का रिकार्ड होता है, घटनाओं का रिकार्ड होता है, ऐसी घटनाओं का विवरण होता है, जिनमें बच्चे ने कुछ कार्य करने के लिए योगदान दिया हो और जो उसके व्यक्तित्व के लिए महत्त्वपूर्ण हों।

पिछले विवरण का रिकार्ड अध्यापक और परामर्शदाता द्वारा उसके व्यवहार के वास्तविक उदाहरणों का सतत संचित विवरण होता है, जो उनके द्वारा परखा गया है। व्यवहार के विवरण के बाद अध्यापक द्वारा उसके संबंध में टिप्पणी की जाती हैं। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जाएगी।

11.1 पिछले विवरण के रिकार्ड का उदाहरण

स्थानः अंग्रेजी की कक्षा।

उद्देश्यपूर्ण विवरणः मैं यह देख रहा हूं कि रवि/रशीदा प्रतिदिन पुस्तकालय में जाकर पत्रिकाएं पढ़ता/पढ़ती है। इसके बावजूद, उसके पास कभी भी अंग्रेज़ी के कार्य को सही करने, संशोधित करने और पुनः देखने का समय नहीं होता है।

टिप्पणीः रवि/रशीदा लिखना पसंद नहीं करता/करती है लेकिन पढ़ना पसंद करता/करती है। मैंने पुस्तकालयाध्यक्ष से कहा है कि उन्हें खाली पीरियड में पुस्तकालय में तब तक न आने दें जब तक मैं यह न कह दूं कि रवि/रशीदा ने अपना काम कर लिया है।

11.2 रिकार्ड तैयार करने और प्रयोग करने संबंधी दिशानिर्देश

हम, इस संबंध में कोई संख्या तय नहीं कर सकते हैं कि पिछले विवरणों का कितना रिकार्ड रखा जाएगा। यह उस समय पर निर्भर करेगा जो अध्यापक या परामर्शदाता के पास हो। इन रिकार्डों के संबंध में निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जाना चाहिएः

- ये अन्य रिकार्डों के पूरक हैं और इन्हें अन्य रिकार्डों का प्रतिस्थानी नहीं समझा जाना चाहिए।
- व्यवहार के लक्ष्यात्मक विवरण को विषयात्मक टिप्पणियों के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए।
- कक्षा में विद्यालय में या विद्यालय से बाहर किसी महत्त्वपूर्ण व्यवहार का रिकार्ड रखा जाना चाहिए।
- यह व्यवहार उचित है/अनुचित है या उस बच्चे के लिए ठीक है या नहीं, इसका रिकार्ड रखा जाना चाहिए।
- पिछले विवरण में प्रस्तुत तथ्यों को अंतरित किया जाना चाहिए और उन्हें इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि वे एक-दूसरे के संदर्भ में पढ़े जा सकें।
- रिकार्ड गोपनीय रखा जाना चाहिए। यह गैर-ज़िम्मेदार लोगों के पास नहीं जाना चाहिए।

11.3 पिछले रिकार्ड का एक नमूना

स्कूल का नाम	
उस विद्यार्थी का नाम, जिसका प्रेक्षण किया गया	कक्षा
पर्यवेक्षक	तारीख और स्थान
संक्षिप्त विवरण	पर्यवेक्षक की टिप्पणियां

11.4 पिछले विवरणों के रिकार्ड का मूल और उपयोग

- इनमें व्यक्तित्व का विशेष विवरण दिया जाता है और सामान्यीकरण कम हो जाता है।
- इनसे विपरीत स्थितियों में बच्चे के व्यवहार को समझने में बहुत मदद मिलती है।
- इनमें सतत रिकार्ड दिया जाता है।
- इनमें स्व-मूल्यांकन हेतु प्रयोग के लिए शिक्षार्थी के आंकड़े दिए जाते हैं।
- इन रिकार्डों का सारांश उस समय बहुमूल्य हो जाता है जब विद्यार्थी का एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय में स्थानांतरण होने पर उसे यह रिकार्ड भी भेजा जाता है।

- स्टाफ के नए सदस्य भी इन रिकार्डों का उपयोग कर सकते हैं और विद्यार्थी के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं।
- ये रिकार्ड नैदानिक सेवाओं के लिए भी सहायक होते हैं
- इनसे अध्यापकों को रिकार्ड का प्रयोग करने की प्रेरणा मिलती है।

12. निबंध आदि

इनसे विद्यार्थी की अभिव्यक्ति का पता लगाने, उसकी क्षमताओं, विचारों और अभिवृत्ति से संबंधित योग्यताओं का पता चलता है। शिक्षार्थी के विवरणों में तैयार उत्पाद परियोजना मॉडल आदि शामिल किए जा सकते हैं ताकि शिक्षार्थी की क्षमता का पता लगाया जा सके।

13. विद्यार्थी का साक्षात्कार और मौखिक परीक्षा

- शिक्षार्थी को अधिगम मूल्यांकन प्रक्रिया में भाग लेने दें।
- इनसे स्वर-शैली, लहजे जैसी क्षमताओं की परीक्षा ली जा सकती है।
- विद्यार्थी अध्यापकों को धोखा नहीं दे सकते हैं क्योंकि उनसे प्रतिप्रश्न पूछे जा सकते हैं।
- मौखिक परीक्षा उन मदों की नहीं होनी चाहिए, जिन्हें लिखित परीक्षा के माध्यम से परखा जाता है।
- मौखिक परीक्षा अलग-अलग होती हैं और इनमें समय बहुत लगता है।

14. स्व-मूल्यांकन प्रपत्र

इसे शिक्षार्थी के विवरणों में शामिल किया जा सकता है ताकि शिक्षार्थी के स्व-मूल्यांकन का साक्ष्य रहे।

15. सहपाठी मूल्यांकन शीट

यह शीट क्रियाकलाप सामाजिक परियोजना और साथियों से संबंधित व्यवहार के आधार पर दल/समूह में मूल्यांकन करने के लिए उत्कृष्ट हो सकता है। इसे शिक्षार्थी के विवरणों में शामिल किया जा सकता है ताकि शिक्षार्थी के सामाजिक जीवन-कौशल का साक्ष्य दिया जा सके।

16. विद्यार्थी रिपोर्टिंग पत्र - फीडबैक फार्म

यह विद्यार्थी के शिक्षा के विशेष पहलू के संबंध में विद्यालय में अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में और शिक्षार्थी की अभिवृत्ति के संबंध में विद्यार्थी से फीडबैक लेने के लिए उत्कृष्ट पत्र है। इसे शिक्षार्थी के विवरण में शामिल किया जा सकता है।

17. बातचीत

इससे हम यह सीखते हैं कि विद्यार्थी कैसे और क्या सोचता है, जानता है और कल्पना करता है। इससे हमें सुनने और बोलने के कौशल को जानने में मदद मिलती है।

18. परीक्षा, परीक्षण, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

इससे हमें शिक्षार्थी के बारे में यह जानकारी मिलती है कि उसे क्या सिखाया गया है और उसने क्या सीखा है।

19. वर्णनात्मक रिपोर्ट

यह विचार कि विद्यार्थी को केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं किया जाना चाहिए। इसमें समग्र तरीके से शिक्षार्थी की और अधिक व्यापक रिपोर्ट की जा सकती है। ये रिपोर्टें विवरणों में शामिल की जा सकती हैं। लेकिन कोई एक निर्धारण साधन/तरीका शिक्षार्थी की प्रगति और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षण के लिए सूचना/साक्ष्य देने में समर्थ नहीं होता। पढ़ाते समय, अध्यापक यह महसूस करता है कि शिक्षार्थी को देखकर, सुनकर उनसे अनौपचारिक चर्चा करके और उसके सहपाठियों, माता-पिता और अन्य अध्यापकों से चर्चा करके उसके लिखित कार्य (कक्षा कार्य और गृह कार्य) की समीक्षा करके या शिक्षार्थी द्वारा स्वयं अपना मूल्यांकन करके बहुत कुछ समझा जा सकता है। अध्यापक विभिन्न तरीकों का प्रयोग करते हैं। लेकिन जिसकी सबसे बड़ी अपेक्षा है, वह है अपनाए जाने वाले विभिन्न साधनों का विवेकपूर्ण तरीके से पूर्व निर्धारित संयोजन से यह कार्य किया जाए ताकि बच्चे के संबंध में यथासंभव सही सूचना मिल सके।

इन साधनों में से कुछ के कार्यान्वयन के संबंध में लाभ, कमियां और सुझाव सतत एवं व्यापक मूल्यांकन अनुबंध-1 में दिए गए हैं।

ऐसा प्रस्ताव है कि **विद्यालय आधारित मूल्यांकन का यह प्रमाण-पत्र** संस्था के प्रधान द्वारा कक्षा X के अंत में प्रत्येक विद्यार्थी को दिया जाना चाहिए ताकि शिक्षा और शिक्षा से जुड़े अन्य क्षेत्रों, दोनों में उसकी उपलब्धियों और संवृद्धि के मूल्यांकन को प्रमाणित किया जा सके।

शिक्षार्थी की संवृद्धि से जुड़े सहशैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन प्रेक्षण तकनीकों से काफी हद तक देखा जा सकता है। पिछले विवरणों का रिकार्ड, स्वास्थ्य रिकार्ड, उपस्थिति और ग्रेडिंग माप इस मूल्यांकन के महत्त्वपूर्ण साधन हैं।

सहशैक्षिक क्रियाकलापों (समूह 3-क और 3-ख) में शिक्षार्थी के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन करने के लिए स्पष्ट विस्तृत प्रक्रिया तैयार कर दी गई है ताकि इसका उद्देश्य और एकरूपता बनी रहे। प्रत्येक क्रियाकलाप को तीन-पांच घटकों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक घटक के लिए ग्रेडिंग माप तैयार कर दिए गए हैं (अनुबंध 3)। किसी क्रियाकलाप विशेष में किसी विद्यार्थी का मूल्यांकन करने के लिए अध्यापक उसका समय-समय पर निरीक्षण करता है या उसके सीखे गए ज्ञान का प्रदर्शन करने के लिए प्रतियोगी स्थिति उपलब्ध करता है। वह प्रत्येक घटक के संबंध में प्रत्येक अवधि (प्रति सत्र दो बार) में एक बार विद्यार्थी का मूल्यांकन करता है और रिपोर्ट कार्ड में औसत रेटिंग या अंतिम ग्रेड को दर्ज करता है। इस अंतिम ग्रेड का उल्लेख संचित रिकार्ड फार्म में किया जाता है। (स्कूल आधारित मूल्यांकन का प्रमाणपत्र)

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रमाणपत्र माध्यमिक परीक्षा पास करने पर विद्यालय द्वारा सभी विद्यार्थियों को दिया जाता है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन योजना में शिक्षा और शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों में उद्देश्य-आधारित अनुदेशों पर बल दिया गया है, जिसमें पूर्व आयोजित उद्देश्य को पूरा करने में सतत संवृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए अपनाया गया है।

बोर्ड द्वारा तैयार किए गए स्कूल-आधारित मूल्यांकन संबंधी अध्यापकों के मेनुअल में इस बात पर बल दिया गया है और इसमें इस स्कीम की योजना, गठन और कार्यान्वयन संबंधी विस्तृत सूचना दी गई है। इसमें मूल्यांकन प्रक्रिया संबंधी अनुदेश भी दिए गए हैं और शिक्षार्थी के संवृद्धि के विभिन्न पहलुओं के संबंध में रिकार्डिंग, व्याख्या और आंकड़ों का उपयोग करने पर बल दिया गया है ताकि संपूर्ण कार्यक्रम के संबंध में फीडबैक मिल सके। इस प्रकार, इस योजना का मुख्य उद्देश्य, उद्देश्य-आधारित शिक्षा, सतत मूल्यांकन, नैदानिक परीक्षण और उपचारात्मक शिक्षा को शिक्षार्थी की संवृद्धि के सभी क्षेत्रों में शामिल किया गया है।

विद्यार्थियों का मूल्यांकन तभी किया जाएगा जब एक या एक से अधिक कारणों से प्रेक्षण के आधार पर उसके उल्लेखनीय साक्ष्य हों।

मूल्यांकन को व्यापक बनाने के लिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रयास बच्चे के व्यक्तित्व, व्यवहार और कार्य-निष्पादन की प्रत्येक संगत पहलों को शामिल करना है, जो अधिगम की विभिन्न स्थितियों के अंतर्गत आती हों। इसमें पुरानी, प्रभावी साइकोमोटन डोमेन को शामिल करके समग्र विकास के 'कार्डिनियल' सिद्धांत को तरजीह दी गई है ताकि दिमाग, दिल और हाथ का समुचित विकास किया जा सके। इसलिए इसे शैक्षिक और शिक्षा से जुड़े पहलुओं, दोनों में शामिल किया जाता है। भाषा, सामाजिक विज्ञान, गणित, विज्ञान, शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा आदि जैसे विषयों के साथ-साथ कार्य का अनुभव, कला शिक्षा, कंप्यूटर अध्ययन को भी शामिल किया गया है। विद्यार्थियों का जीवन-कौशल, अभिवृत्ति और शिक्षा से जुड़े विभिन्न बाह्य क्रियाकलापों में भाग लेने के संबंध में भी मूल्यांकन किया जाता है।

अनिवार्य तत्त्वों में सतत और व्यापक दोनों तरीकों से संवृद्धि का मूल्यांकन किया जाता है। इससे शिक्षार्थी की शक्ति और कमज़ोरी का पता लगाने में मदद मिलती है। अतः आवश्यक शिक्षा और वांछित समृद्धि के बारे में निर्णय लिया जाता है। इस प्रकार मूल्यांकन एक अंतिम उपाय है लेकिन अपने-आप में अंतिम नहीं है।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन शिक्षार्थी की शैक्षिक संवृद्धि को बढ़ाने के अलावा विद्यार्थी के जीवन-कौशल व वांछित अभिवृत्ति का निर्माण और शिक्षा से जुड़े विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेने का अवसर देने और क्षमता हासिल करने में सहायक होता है।

> समावेशी शिक्षा को संभव बनाने के लिए और विभिन्न शिक्षण योग्यताओं सहित विद्यार्थियों को बेहतर बनाने के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली शैक्षिक परिपाटियों को और लचीला, अधिक समावेशी और अधिक सहयोगी बनाने की आवश्यकता है।
>
> विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी.

अध्याय 6

विद्यालयों के लिए निहितार्थ

आज परीक्षा प्रणालियां बड़ी जटिल हैं। वे बहुत-से पणधारियों और बहुत-से कार्यों की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। परीक्षा के कई विभिन्न प्रयोजन हो सकते हैं, जैसे प्रमाणपत्र देना अथवा चयन करना, संस्थात्मक उत्तरदायिता अथवा सामाजिक परिवर्तन का साधन मुहैया करना।

प्रायः यह बहुत से कार्यों का सम्मिश्रण होती है। जो लोग शैक्षिक सुधार के कार्य में लगे हैं, उन्हें पणधारियों की सारी आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इन आवश्यकताओं में काफी अधिक मात्रा में सुसंगति स्थापित की जाए।

सुधार, जो विद्यालय-आधारित निर्धारण को प्रोत्साहन देते हैं, उत्तरदायिता पर नए दबाव उत्पन्न करते हैं और समय की मांग के अनुसार अध्यापकों के व्यावसायिक विवेक पर अधिक भरोसा करते हैं। यह ज़रूरी नहीं है कि उन शिक्षा-शास्त्रीय प्रणालियों का, जो कदाचित अधिक विशाल संसाधनों के स्तर वाले और कक्षा के इष्टतम आकार वाले किसी एक शैक्षिक संदर्भ में कार्य करती हैं, स्थानांतरण अन्य संदर्भ में किया जा सकता हो। प्रभावकारी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए नीति-निर्माताओं और अध्यापकों के बीच व्यापक और गहन संवाद होना जरूरी है। व्यावसायिक विकास, सेवाकालीन प्रशिक्षण और आदर्श सामग्री और पुस्तिकाओं के लिखे जाने के जरिए मार्गदर्शन के अवसर प्राप्त होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा सुधार, जो नए शिक्षा-शास्त्रों की - पाठ्यचर्या में आई.सी.टी. को शामिल करने और ई-शिक्षा-प्राप्ति को प्रोत्साहन देने की मांग करते हैं, अध्यापकों को बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण देने की वचनबद्धता के द्वारा ही संभव हो सकते हैं।

निर्धारण के तरीके शिक्षा-प्राप्ति के प्रति अन्वेषणात्मक पद्धतियां अपनाने और कौशलों, ज्ञान और जानकारी को उपयोग में लाने पर बल देते हैं। यह पद्धति स्वीकार करती है कि आज के तेज़ी से होने वाले परिवर्तनों वाले संसार में व्यक्तियों के लिए 'पुनः स्मरण' करना एक अपेक्षाकृत कम उपयोगी कौशल बन जाता है, और इसकी बजाय समझना, अनुप्रयोग, विश्लेषण करना, मूल्यांकन करना और सृजन करना - अर्थात् ब्लूम के वर्गीकरण-विज्ञान के उच्च स्तर के कौशल अधिक संगत बन जाते हैं।

बच्चों की शिक्षा में शामिल सभी लोगों में, अध्यापकों को सबसे अधिक ज़िम्मेदार समझा जाता है। यह बात उनकी इस इच्छा से प्रकट होती है कि वे बच्चों को ज्ञान, कौशल, सकारात्मक अभिवृत्तियां और मूल्य प्राप्त करने में और जीवन का सामना विश्वास के साथ करने में सहायता देना चाहते हैं। यह पता लगाने के लिए कि बच्चे विद्यालयों में किस प्रकार कार्य कर रहे हैं, अध्यापक बच्चों का निर्धारण करने में बहुत अधिक समय खर्च करते हैं। अधिकतर अध्यापक यह समझते हैं कि निर्धारण उनके विद्यालय के प्रतिदिन के कार्य का एक महत्त्वपूर्ण भाग है और इस प्रकार वे दैनिक आधार पर जो कुछ करते हैं, इसका एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। ऐसा क्यों है?

अध्यापक इसके कई कारण बताते हैं। एक महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि यह जानना बहुत ज़रूरी है कि क्या बच्चे ने वह सीखा है, जिसे सीखने की उससे अपेक्षा की जाती थी। दूसरा कारण यह पता लगाना है कि खास अथवा कुछ समय में बच्चे की क्या प्रगति हुई है। किंतु, एक तीसरा कारण और है, जिसकी ओर न केवल अध्यापकों द्वारा, बल्कि हम सब लोगों द्वारा भी अधिक ध्यान दिया गया है अर्थात् यह पता लगाना कि विभिन्न विषय क्षेत्रों में बच्चे द्वारा क्या प्राप्त किया गया है। ऐसा हो सकता है, क्योंकि हम सब 'अच्छी गुणवत्ता' वाली शिक्षा मुहैया करने के बारे में चिंतित हैं और महसूस करते हैं कि इसे सुनिश्चित करने का एक तरीका यह है कि बच्चे को जिन विषयों की शिक्षा दी जा रही है, उनमें उसकी उपलब्धि का मूल्यांकन परीक्षाओं द्वारा किया जाए। परीक्षा लेने का एक अपना प्रयोजन होता है, लेकिन यदि हम वास्तव में बच्चे को बेहतर सीखने में सहायता देना चाहते हैं, तो हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि बच्चे परीक्षाओं में जो अंक अथवा ग्रेड प्राप्त करते हैं, वे हमें बच्चे की शिक्षा-प्राप्ति अथवा प्रगति के बारे में क्या बताते हैं।

बच्चों का आकलन करते समय उनके बीच के अंतरों को समझना और इस तथ्य को सम्मान देना महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे शिक्षा-प्राप्ति करते समय विभिन्न तरीकों से समझेंगे और उनकी अनुक्रिया भिन्न-भिन्न होगी।

बच्चे 'खाली बर्तन' अथवा 'अनलिखी स्लेटें' नहीं हैं, और जैसाकि विश्वास किया जाता है, उन्हें सूचना और ज्ञान द्वारा भरा जाना है, जो केवल विद्यालय प्रदान कर सकता है। यह महत्त्वपूर्ण है कि उस अनुभव के ऊपर निर्माण किया जाए, जिसे बच्चा विद्यालय में लेकर आता है। इस प्रकार नए अधिगम अथवा शिक्षा का विकास उस आधार पर किया जाना ज़रूरी है, जो बच्चा पहले से जानता है और समझता है।

कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू ये हैंः

- प्रत्येक बच्चा सीख सकता है, यदि उसे स्वयं अपनी गति से ऐसा करने दिया जाए और शिक्षा-प्राप्ति के स्वयं अपने तरीके का पालन करने दिया जाए।
- बच्चे खेलों/क्रियाकलापों के जरिए अधिक सीखते हैं और एक-दूसरे से बेहतर रूप से सीखते हैं और यदि वे वास्तव में कार्य 'करते' हैं।
- शिक्षा-प्राप्ति अथवा सीखना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस प्रकार, बच्चे की शिक्षा-प्राप्ति विद्यालय में नहीं होती। इसलिए, कक्षा की शिक्षा-प्राप्ति को उससे जोड़ा जाना चाहिए, जो कक्षा से बाहर और घर में होता है।
- बच्चे स्वयं अपने ज्ञान का 'निर्माण' करते हैं और केवल उस समय और केवल वह नहीं सीखते, जब और जो अध्यापक सिखाता है। इसका अर्थ यह है कि बच्चे का जिस सूचना से सामना कराया जाता है, वह उसका अर्थ अपने पिछले अनुभवों और अधिगम के आधार पर लगाता है। केवल तब बच्चा स्वयं अपनी समझ और निष्कर्ष पर पहुंचता है। प्रत्येक बच्चे का ज्ञान प्राप्त करने का एक अपना निराला तरीका और मार्ग होता है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है।
- बच्चे प्राथमिक स्तर पर अनुभवों, खेलों, छान-बीन के जरिए, विभिन्न चीज़ों का परीक्षण करके और विभिन्न कार्यों को वास्तविक रूप से 'करके' बेहतर रूप से और अधिक सरलता से सीखते हैं।

- बच्चे सर्पिल रूप से सीखते हैं, रेखीय रूप से नहीं। इस प्रकार, पुनः दर्शन की संकल्पनाएं उन्हें बेहतर रूप से समझने में बार-बार सहायता देती हैं। शिक्षा-प्राप्ति के इस कार्य में देखे गए/अनुभव किए गए और बच्चों द्वारा समझे गए तथ्यों के बीच संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया शामिल होती है। इसलिए, नई शिक्षा-प्राप्ति न केवल पूर्ववर्ती तथ्यों और सूचना पर आधारित की जानी ज़रूरी है, बल्कि विद्यालय, घर अथवा अन्यत्र बहुत पहले प्राप्त की गई चीज़ों के साथ भी उसका संबंध स्थापित किया जा सकता है। इसलिए, शिक्षा-प्राप्ति रेखीय तरीके से आगे नहीं बढ़ती।

- बच्चे अपनी गलतियों से और अपने द्वारा की गई भूलों से सीखते हैं।

- शिक्षण संपूर्ण तरीके से होता है। इसलिए शिक्षण के संबंध में एकीकृत दृष्टिकोण बेहतर होता है।

शिक्षा-प्राप्ति के परिणामों को आंकने का काम अध्यापन-शिक्षाप्राप्ति की प्रक्रिया के साथ सतत तरीके से होता रहता है। संपूर्णतावादी निर्धारण करने के लिए, शिक्षा-प्राप्ति के सभी पहलुओं को समुचित मान्यता दी जानी ज़रूरी है। किंतु तरीके और क्रियाविधियां भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। यद्यपि अध्यापक बच्चों की प्रगति का नियमित रूप से प्रेक्षण करते रहते हैं, किंतु कुछ नियतकालिकता होनी आवश्यक है। इसका तात्पर्य है प्रत्येक बच्चे का रेखाचित्र रखना। यह चिंतन करने, 'फीडबैक' प्राप्त करने और बच्चे की शिक्षा को समृद्ध बनाने और उसमें वृद्धि करने के उपायों की योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने के लिए ज़रूरी है। इसके लिए एक विवेकयुक्त चक्र का अनुसरण किए जाने की आवश्यकता है। इस तथ्य को आंखों से ओझल नहीं किया जा सकता कि यद्यपि अनौपचारिक रूप से प्रेक्षण किया जाता रहता है, किंतु बच्चों में शिक्षा-प्राप्ति को बढ़ावा देने के लिए पाक्षिक रूप से पीछे मुड़कर देखने और तिमाही समीक्षाएं करने की सिफारिश सामान्य रूप से की जाती है।

इस प्रकार, निर्धारण निम्न रूप से हो सकते हैः

- दैनिक आधार पर - बच्चों के साथ पारस्परिक-क्रिया और कक्षा के अंदर और बाहर दोनों स्थितियों में उनका सतत रूप से निर्धारण करते रहना।

- नियतकालिकता - प्रत्येक 3-4 महीनों में एक बार, अध्यापक एकत्र की गई सूचना की जांच कर सकते हैं और उस पर विचार कर सकते हैं। किंतु यह परीक्षण/परीक्षा के रूप में नहीं बल्कि विचार करने के प्रयोजन से होना चाहिए

निर्धारण के तरीके

कोई तरीका चुनने से पहले यह निश्चय करना ज़रूरी है कि जिस किस्म की सूचना की आवश्यकता है, उसके लिए किस किस्म के प्रबंध सर्वाधिक अनुकूल होंगे। निर्धारण करने के चार बुनियादी तरीके हैं, अर्थात्‌ः

- वैयक्तिक निर्धारण - इसमें एक बच्चे पर उस समय ध्यान केंद्रित किया जाता है, जब वह किसी गतिविधि/कार्य में संलग्न होता है और इस प्रकार वैयक्तिक कार्य और उपलब्धियों को मान्यता दी जाती है।

- सामूहिक निर्धारण - इसमें बच्चों के एक समूह की शिक्षा-प्राप्ति और प्रगति पर उस समय ध्यान केंद्रित किया जाता है, जब वे किसी कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से इकट्ठे मिलकर कार्य कर रहे होते हैं। सामाजिक कौशलों, सहकारी शिक्षा-प्राप्ति प्रक्रियाओं और बच्चे के व्यवहार के मूल्यों से संबंधित अन्य आयामों का निर्धारण करने के लिए, आयोजन का यह तरीका अधिक उपयोगी पाया जाता है।

- स्व-निर्धारण - इसका संबंध बच्चे की अपनी शिक्षा-प्राप्ति, ज्ञान, कौशलों में वृद्धि, प्रक्रियाओं, रुचियों, अभिवृत्तियों, आदि के अपने स्वयं के निर्धारण से है।

- समकक्ष निर्धारण - इसका तात्पर्य एक बच्चे द्वारा दूसरे बच्चों का निर्धारण किया जाना है। यह युग्मों में अथवा समूहों में किया जा सकता है।

सभी विद्यालयों में यह देखा गया है कि निर्धारण के दौरान जो तरीके सर्वाधिक सामान्य रूप से उपयोग में लाए जाते हैं, वे स्वयं अध्यापकों द्वारा विकसित किए गए तरीके होते हैं। इनमें कागज़-पैंसिल परीक्षाएं/कार्य, लिखित/मौखिक परीक्षाएं, चित्रों के बारे में प्रश्न, प्रेरित क्रियाकलाप और विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप शामिल है। अधिकतर अध्यापकों द्वारा लघु कक्षा परीक्षाओं का उपयोग बच्चों की शिक्षा-प्राप्ति की प्रगति का निर्धारण करने के त्वरित और सरल रूप में किया जाता है। ये परीक्षाएं सामान्य रूप से यूनिट/महीने के अंत में ली जाती हैं। इसमें संदेह नहीं कि ये उपयोगी होती हैं, लेकिन इनका उपयोग बहुत ध्यानपूर्वक किया जाना चाहिए। जिस किस्म के प्रश्नों और मदों का उपयोग किया जाए, जहां तक संभव हो, उनके कोई पूर्व-निर्धारित उत्तर नहीं होने चाहिएं, लेकिन उन्हें शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया जाना चाहिए कि बच्चों को अपने-अपने वैयक्तिक विचार विभिन्न प्रकार के तरीकों के सृजन करने और व्यक्त करने की गुंजाइश प्राप्त हो। उन परीक्षा-मदों को शामिल किए जाने की आवश्यकता है, जो पाठ्यपुस्तकों की सामग्री को याद करने की बजाय चिंतन और विश्लेषण करने को बढ़ावा दें। संक्षेप में, ऐसी मदों होनी चाहिएं, जो बच्चों को विभिन्न प्रकार के प्रत्युत्तरों की गुंजाइश प्रदान करें।

३. यह संभव है - आप इसे संभव बना सकते हैं

निर्धारण एक उपयोगी और रोचक प्रक्रिया बन सकती है। इसे प्राप्त करने के लिए यह ज़रूरी है कि आप इन बातों का ध्यान रखेंः

- इस बारे में स्पष्ट होना चाहिए कि आप बच्चे को निर्धारण क्यों कर रहे हैं।
- बच्चों के बीच तुलना करना अथवा बच्चों को धीमा, कमज़ोर, बुद्धिमान, मंदबुद्धि के रूप में वर्गीकृत न करना।
- बच्चे की शिक्षा-प्राप्ति और विषयों तथा पाठ्यक्रम से बाहर के क्रियाकलापों में उसकी प्रगति के बारे में सूचना एकत्र करने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल करना।
- सूचना लगातार एकत्र करते रहना और उसे अभिलेखबद्ध करना।
- प्रत्येक बच्चे के अनुक्रिया के तरीके और शिक्षा-प्राप्ति के तरीके और उसके द्वारा इसमें लिए जाने वाले समय को महत्त्व देना।

- निरंतर आधार पर रिपोर्ट लिखना और प्रत्येक बच्चे की प्रतिक्रियाओं के बारे में संवेदनशील होना।
- निर्धारण के दौरान अथवा बच्चे को, माता-पिता को अथवा अन्य लोगों को 'फीडबैक' देते समय नकारात्मक वक्तव्य न देना अथवा तकनीकी भाषा का उपयोग न करना।
- 'फीडबैक' स्पष्ट और सरल शब्दों में मुहैया करना, जिसके परिणामस्वरूप सकारात्मक कार्रवाई की जा सके और बच्चे को बेहतर कार्य करने में सहायता मिले।

4. समावेशी

विद्यालय टीमें बनाकर, जिनमें विद्यालय-सलाहकार, कक्षा-अध्यापक और समकक्ष परामर्शदाता अथवा साथी शामिल हों, विभिन्न योग्यताओं वाले विद्यार्थियों से निपट सकता है। नीचे दो इतिवृत्तात्मक अध्ययन दिए गए हैं, जिनमें विभिन्न योग्यताओं वाले बच्चों की सहायता की गई है।

अध्ययन-1

रतीश बहुत-सी रुचियों और योग्यताओं वाला एक बुद्धिमान लड़का है। उसने 2008 में एक विद्यालय में कक्षा 7 में प्रवेश लिया। वह कई बार अपने आपको कमज़ोर और हताश अनुभव करता था और सीखने का प्रयास करना छोड़ देता था।

ध्यान/एकाग्रता

स्थिति प्रविष्टि

उसके ध्यान/उसकी एकाग्रता में बहुत-अधिक घट-बढ़ होती रहती थी।

हस्तक्षेप

विभिन्न कार्यनीतियों/सहायता/पुनरावृत्ति/अनुस्मारकों के जरिए उसे एकाग्र बनाया गया।

मौजूदा स्थिति

जब कार्य बहुत लंबा होता था, तो वह उसमें रुचि नहीं लेता था।

सामाजिक/शैक्षिक

स्थिति

जब उसने दाखिला लिया, तो वह मुश्किल से श्रवणीय था, सामाजिक बारीकियों को समझने में असमर्थ था।

हस्तक्षेप

यहां टीम (अध्यापक, शिक्षाविद्, साथी) ने उसे मित्र बनाने और उन्हें बनाए रखने में सहायता दी।

मौजूदा स्थिति

अब वह अन्य लोगों के साथ परस्पर कार्य करता है और मौखिक तथा गैर-मौखिक तरीकों से उनके साथ संवाद करता है।

मौखिक

संक्षिप्त बात/वार्तालाप।

चुटकुलों में हिस्सा लेना

हिस्सा लेना/चर्चा करना (खेल/संगी/चल-चित्र/कार्टून)।

गैर-मौखिक

सक्रिय रूप से सुनना।

देह भाषा

उसने स्कूल के नाटक क्लब में भी भाग लिया और एक सक्रिय सदस्य है।

आत्म-सम्मान

आत्म-सम्मान एक बुनियादी मानवीय आवश्यकता है और यह जीवन की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है, लेकिन रतीश में इसकी कमी थी, क्योंकि उसे अपने परिवार से पर्याप्त समर्थन नहीं मिलता था। अब उसमें काफी आत्म-विश्वास है।

शैक्षिक

रतीश एक अच्छा दृश्य शिक्षार्थी है।

- उसे विद्यालय में लिखने का कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- विद्यालय की टीम (अध्यापक/शिक्षा-विद्/साथी) द्वारा बार-बार याद दिलाकर उसकी सहायता की जाती है। परीक्षा में उसे उत्तर पुस्तिका प्रस्तुत करने से पहले प्रूफ-रीडिंग करने के लिए कहा जाता है।
- उसे निरंतर समर्थन दिया जाता है और हस्तक्षेप किया जाता है (फ्लो चार्टों/वेब चार्टों के रूप में संरचित उपचारी योजनाएं)।
- उसे अभी भी प्रत्यक्ष अनुदेशों और व्यापक मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

वर्ष 2008:	रतीश को अभिप्रेरित करने के लिए, उसका निर्धारण एक पूरे शैक्षिक वर्ष के लिए।
(VII)	60 प्रतिशत मौखिक और 40 प्रतिशत लिखित आधार पर किया गया था।
वर्ष 2009:	रतीश को अभिप्रेरित करने के लिए, उसका निर्धारण एक पूरे शैक्षिक वर्ष के लिए
(VIII)	60 प्रतिशत मौखिक और 40 प्रतिशत लिखित आधार पर किया गया था।

अध्ययन-II

इसका संबंध शान्तनु से है, जो प्रमस्तिष्काघात (सेरेब्रल पालसी) से ग्रस्त है।

शान्तनु कड़ी मेहनत करने वाला एक ज़िम्मेदार लड़का है। उसमें क्षमता है, क्योंकि उसमें बढ़िया संज्ञानात्मक कौशल/योग्यताएं हैं।

एकाग्रता

- वह कार्य पर ध्यान केंद्रित करने में समर्थ है।
- उसे शिक्षा-प्राप्ति के लिए हिदायतों और सहायता की आवश्यकता है।
- उसमें प्रबंधन-कौशल कम है।

व्यवहार

ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करने वाला व्यक्ति है।

कई बार आलसी हो जाता है और कड़ी मेहनत नहीं करना चाहता।

जब कभी उसे बिना काम के पाया जाता है, तो उसे अंगूठा चूसते हुए देखा जाता है।

सामाजिक/भावात्मक

वह बहुत अधिक बातूनी है और अपने समकक्षों के साथ परस्पर कार्य करता है। वह मौखिक और गैर-मौखिक दोनों तरीकों से पारस्परिक कार्रवाई करता है और विचारों का आदान-प्रदान करता है।

आत्म-सम्मान

पहले वह अधिक आत्म-विश्वासी नहीं था, लेकिन अब वह विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है और अपने बारे में बात कर सकता है (अध्यापक/अन्य)।

शैक्षिक

मौजूदा स्थिति

वह मुख्यधारा वाले पाठ्यक्रम को संपन्न करने में समर्थ था।

हस्तक्षेप

उसके कार्य को सरल बनाने के लिए उसकी सहायता संशोधित पेपरों से की गई थी।

यदि आवश्यक हो तो संशोधित पेपर उसी स्तर के हो सकते हैं।

उसे उपचारी अध्यापन के रूप में निरंतर समर्थन और सहायता दी जाती है।

सह-शैक्षिक पहलुओं का निर्धारण

बच्चों के सह-शैक्षिक कौशलों का निर्धारण करने में सभी अध्यापकों को शामिल किए जाने की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों का निर्धारण कक्षा-अध्यापक के अलावा अन्य अध्यापकों द्वारा क्यों किया जाना चाहिए?

- यह आत्म-परकता को घटाता है।
- सभी अध्यापकों को शामिल करता है।
- सभी अध्यापकों को उत्तरदायी बनाता है।
- पक्षपात को दूर करता है।
- कार्य-भार का बंटवारा अध्यापकों से करता है।
- कक्षा-अध्यापक के कार्य-भार को घटाता है।
- नियमित रूप से रखे जाने वाले रिकार्ड (कम्प्यूटर पर) से कार्य सरल हो जाता है।
- सभी अध्यापकों को संदर्भ-स्थल मुहैया करता है।

निर्धारण किस प्रकार किया जाना चाहिए?

- फार्म का अभिलिखित प्रारूप (रिकार्ड-फ़ारमेट)।
- कक्षा अध्यापक द्वारा संग्रह

सह-शैक्षिक कौशलों का रिकार्ड रखना

विद्यार्थी मूल्यांकन फार्म
(शैक्षिक वर्ष ....)

बच्चे का नाम : ....

रोल नंबर : ....

अध्यापक की टिप्पणियांः

शैक्षिक ख

कार्य अनुभवः

....

....

कला शिक्षाः

....

....

शारीरिक शिक्षाः

....

....

सह-शैक्षिक कौशल

क्रियाकलाप प्रभारी..

1. सृजनात्मक/साहित्यिकः

....

....

2. वैज्ञानिकः

....

....

3. अभिनय कलाः

....

....

4. क्लब का प्रभारीः

....

....

कक्षा अध्यापक की टिप्पणियां (जीवन-कौशल और अभिवृत्तियां तथा मूल्य)

....

....

....

....

कक्षा अध्यापक का नाम और हस्ताक्षर

टिप्पणीः विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों का रिकार्ड दस वर्ष की अवधि के लिए रखा जाना चाहिए।

6. अध्यापकों का सशक्तीकरण

अध्यापकों का अभिमुखीकरण

कोई शैक्षिक स्कीम तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक कि अध्यापक उसे कार्यान्वित करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार न हों और उन्हें उसके गुण अथवा मूल्य में विश्वास न हो। इस तैयारी में यह मान लिया जाएगा कि एक वास्तविकतावादी स्कीम की अभिकल्पना की गई है और इसके प्रचालन और कार्यान्वयन के लिए व्यापक प्रक्रियाएं तय की गई हैं। अध्यापकों को इस स्कीम के बारे में अभिमुखीकरण कराया जाना जरूरी है। अभिमुखीकरण कराने के लिए प्रशिक्षित संशोधन व्यक्तियों की व्यवस्था की जानी आवश्यक है।

ऐसे प्रशिक्षण/अभिमुखीकरण कार्यक्रमों की विषय-वस्तु में, शिक्षार्थी की संवृद्धि के शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिए। मूल्यांकन के उन्नत साधनों का विकास और उनका उपयुक्त उपयोग, इन पाठ्यक्रमों का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। जहां तक शैक्षिक क्षेत्रों का संबंध है, इसका अर्थ वस्तुपरक प्रश्नों और संतुलित प्रश्न-पत्रों को तैयार किया जाना, उत्तर-पुस्तिकाओं के अंक देना और विश्लेषण और परिणाम घोषित किया जाना हो सकता है। जहां तक सह-शैक्षिक क्षेत्रों का संबंध है, इन पाठ्यक्रमों में श्रेणी निर्धारित करने के पैमाने (रेटिंग स्केल्स) तैयार करना और उनका इस्तेमाल करना, सूचियों (इन्वेंटरीज़), जांच-सूचियों, अनुसूचियों और प्रक्रियाओं और उनके जरिए निर्धारित किए जाने वाले कौशलों के विभिन्न क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षार्थियों के विकास के साक्ष्य को एकत्र करने, अभिलेखबद्ध करने, संकलित करने और उसका निर्वचन करने के तरीके इस प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण पहलू होंगे।

अनुबंध-1

अध्ययनों की स्कीम - 2010

3.1 अध्ययन के विषय

शिक्षा-प्राप्ति के क्षेत्रों में ये शामिल होंगेः

(1) और (2) निम्नलिखित भाषाओं में से कोई दो भाषाएंः

हिंदी, अंग्रेज़ी, असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मणिपुरी, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, लेपचा, लिम्बू, भूटिया, अरबी, फारसी, फ्रांसीसी, जर्मन, पुर्तगाली, रूसी, स्पेनिश, नेपाली, तिब्बती, और मिज़ो (कृपया टिप्पणियों को देखें) (i), (ii), और (iii)।

(1) गणित

(2) विज्ञान

(3) समाज विज्ञान

(4) कार्य शिक्षा अथवा पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा

(5) कला शिक्षा

(6) शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा

3.2 अतिरिक्त विषय

विद्यार्थी निम्नलिखित में से किसी एक का चुनाव अतिरिक्त विषय के रूप में कर सकते हैंः

दो अनिवार्य भाषाओं से भिन्न कोई अन्य भाषा (अध्ययन के विषयों के रूप में प्रस्तुत)

अथवा

वाणिज्य, चित्रकला, संगीत, गृह विज्ञान अथवा परिचायक सूचना प्रौद्योगिकी।

टिप्पणियां

(i) यह अपेक्षा की जाती है कि सभी विद्यार्थियों ने कक्षा VIII तक तीन भाषाएं पढ़ी होंगी। जो विद्यार्थी कक्षा VIII में तीसरी भाषा को उत्तीर्ण न कर सके हों और जिन्हें कक्षा IX में चढ़ा दिया गया हो, उनकी परीक्षा कक्षा IX के अंत में संबंधित विद्यालय द्वारा कक्षा VIII के लिए यथाविहित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में फिर से ली जाएगी। जो विद्याथी कक्षा X के अंत में तीसरी भाषा में उत्तीर्ण होने में तब भी असफल रहेंगे, उन्हें कक्षा X में एक अवसर और प्रदान किया जा सकता है। कोई भी ऐसा विद्यार्थी, जो तीसरी भाषा में उत्तीर्ण न हुआ होगा, कक्षा X के अंत में बोर्ड की माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में बैठने के लिए पात्र नहीं होगा।

(ii) जैसा कि उपर्युक्त टिप्पणी (i) में कहा गया है, प्रस्तुत की जाने वाली तीन भाषाओं में हिंदी और अंग्रेजी अवश्य शामिल होनी चाहिए। यह जरूरी है कि हिंदी और अंग्रेजी का अध्ययन कक्षा VIII तक अवश्य किया गया हो।

(iii) कक्षा IX और X में पढ़ी जाने वाली दो भाषाओं में एक भाषा हिंदी अथवा अंग्रेज़ी अवश्य होनी चाहिए। हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों एक साथ भी ली जा सकती हैं। विद्यार्थियों की अलग-अलग पृष्टभूमियों को देखते हुए, हिंदी और अंग्रेज़ी में, कक्षा IX और X के लिए दो पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की गई है। कोई विद्यार्थी या तो अभिव्यक्तिशील - अंग्रेज़ी (विषय कोड 101) का अथवा अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य (विषय कोड 184) को चुन सकता है। इसी प्रकार, हिंदी में, कोई विद्यार्थी हिंदी क अथवा हिंदी ख में से किसी एक का चुनाव कर सकता है।

3.3 शिक्षा का समय

यह मानते हुए कि अकादमिक सप्ताह में 40-40 मिनटों के 45 पीरियड होंगे, प्रति सप्ताह पीरियडों का स्थूल रूप से विवरण इस प्रकार होगाः

विषय	कक्षा X के लिए सुझाए गए पीरियड
भाषा I	7
भाषा II	6
गणित	7
विज्ञान	9
समाज विज्ञान	9
कार्य शिक्षा अथवा पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा (कृपया पृष्ठ 109 पर दी गई टिप्पणी को देखें)	3 + 3*/6
कला शिक्षा	2
शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा	2

स्कूल के समय के बाहर बिताने की अपेक्षा है।

टिप्पणीः पाठ्यक्रमों को तैयार करते समय, यह अनुमान लगाया गया है कि लंबी छुट्टियों, सार्वजनिक छुट्टियों और अन्य संभाव्यताओं को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक सत्र में वास्तविक शिक्षण के लिए कम से कम 30 सप्ताह का अध्ययन उपलब्ध होगा। तदनुसार, यूनिटों और यूनिटों के अनुसार पीरियडों का विभाजन किया गया है, जो केवल सुझाव के रूप में है। विद्यालय प्रत्येक विषय/क्षेत्र के लिए पीरियडों की कुल संख्या को बरकरार रखते हुए, अलग-अलग यूनिटों के सापेक्ष महत्व के अनुसार उनके लिए कम अथवा अधिक संख्या में पीरियड निर्धारित कर सकता है यदि ऐसा करना ज़रूरी समझा जाए। लेकिन प्रत्येक यूनिट के लिए अंकों का वितरण (यूनिट-वार भारांश) आदेशात्मक है, इसलिए उसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

3.4 विशेष प्रौढ़ शिक्षा अभियान

भारत सरकार के विशेष साक्षरता मिशन के उद्देश्यों के अनुसरण में, बोर्ड ने अकादमिक सत्र, 1991-92 से विशेष प्रौढ़ शिक्षा कार्य को हाथ में लिया है, जो विद्यार्थियों को व्यापक रूप से शामिल करके निरक्षरता को दूर करने के एक विशेष उपाय के रूप में कक्षा IX और XI से शुरू किया गया है। इसे विशेष प्रौढ़ शिक्षा अभियान का नाम दिया गया है। इस अभियान को विहित पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनाया गया है और उसे कार्य-शिक्षा में एक मूल संघटक के रूप में शामिल किया गया है। विशेष प्रौढ़ शिक्षा अभियान का ढांचा परिशिष्ट 'क' में दिया गया है।

3.5 विशेष व्यवस्थाएं

3.5.1 पत्राचार विद्यालय के उम्मीदवारों के लिए व्यवस्था

(क) पत्राचार विद्यालय के उम्मीदवारों को गणित और विज्ञान के स्थान पर गृह विज्ञान और वाणिज्य की पढ़ाई करने के अनुमति दी गई है।

(ख) लेकिन पत्राचार विद्यालय के दिल्ली से बाहर के उम्मीदवारों को ऐसे विषयों की परीक्षा देने की अनुमति नहीं है, जिनमें प्रयोग करने का कार्य शामिल है।

3.5.2 दृष्टि और श्रवण अशक्तता वाले उम्मीदवारों के लिए व्यवस्था

कक्षा IX-X के लिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की रूपरेखा

निर्धारण के साधनों/ तकनीकों की किस्में	लाभ	अध्यापकों के लिए सतर्कता	कार्यान्वयन के बारे में सुझाव
1. **प्रेक्षण** बच्चों के बारे में सूचना 'प्राकृतिक' वातावरण में एकत्र की जा सकती है। कुछ अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों के बारे में होते हैं। कुछ क्रियाकलापों/ कार्यों के बारे में विद्यार्थियों के योजनाबद्ध और सोद्देश्य प्रेक्षण पर आधारित होते हैं।	• प्रेक्षण के जरिए व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं का निर्धारण किया जा सकता है। • इसका उपयोग व्यक्तियों और इसके अलावा समूहों का निर्धारण करने के लिए किया जा सकता है। • निर्धारण विभिन्न समयों के पीरियडों में किया जा सकता है। • बच्चे के कार्य-निष्पादन/ज्ञान का साक्ष्य उसी मौके के रिकार्ड पर आधारित होता है। • समय पाकर, व्यवहार और रुचियों, चुनौतियों, पद्धतियों/प्रवृत्तियों का विस्तृत प्रेक्षण होता है, जिससे अध्यापक बच्चे के एक व्यापक चित्र/ दृश्य का निर्माण कर सकता है।	• अनुमान लगाने/अर्थ निकालने अथवा अति शीघ्रता से निष्कर्षों पर पहुंचने से बचें। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जो कुछ वास्तव में दिखाई देता है, उससे अधिक ग्रहण करें। • प्रेक्षक के कौशल पर निर्भर, जो यह तय करता है कि 'क्या' देखा गया है। • जिस तरीके से प्रेक्षण किया जाता है, उसमें संवेदनशीलता और सतर्कता होनी चाहिए। प्रेक्षण विभिन्न स्थितियों में विभिन्न क्रियाकलापों के बारे में कुछ अधिक किए जाने चाहिएं।	• ब्यौरा अभिलेखबद्ध करना, जो न केवल कार्यों का वर्णन करता है, बल्कि यह भी प्रकट करता है कि बच्चा जो कर रहा है, उसके बारे में क्या महसूस करता है, इस बात का ब्योरा कि वह जो करता है, उसे कैसे करता है, अन्य लोगों के साथ उसके संबंधों की गुणवत्ता क्या है और वह क्या कहता है, आदि। • उन प्रक्रियाओं के आधार पर, जिनका अनुमान बाद में लगाया जा सकता है, बच्चे के व्यवहार के बारे में टिप्पणियां कोष्ठकों में दर्ज करना।

निर्धारण के साधनों/ तकनीकों की किस्में	लाभ	अध्यापकों के लिए सतर्कता	कार्यान्वयन के बारे में सुझाव
2. **जांच-सूचियां** विशिष्ट व्यवहार/ कार्य के अभिलेखबद्ध करने के सुनियोजित तरीके से विशेष पहलुओं की ओर ध्यान केंद्रित करने में सहायता मिलती है।	• कार्यान्वयन का त्वरित और सरल तरीका। विशिष्ट उद्देश्यों के बारे में विशिष्ट सूचना प्रदान करता है। • बच्चे द्वारा और बच्चों के समूह द्वारा कौशल कैसे और कब प्राप्त किए गए हैं, उसकी प्रवृत्ति की जानकारी दे सकता है।	• सीमित सूचना, केवल किसी कौशल के होने की जानकारी/विभिन्न स्थितियों में बच्चे की अनुक्रिया के बारे में जानकारी नहीं देता अथवा अनुक्रिया के विशिष्ट उदाहरण मुहैया नहीं करता। संदर्भ के बारे में जानकारी नहीं देता। • यदि कई बार बहुत-सी विशिष्ट मदें होने के कारण बहुत बोझिल बन सकता है। • यदि अन्य लोगों द्वारा विकसित किया गया हो, तो हो सकता है कि वह उन उद्देश्यों के लिए, जो अध्यापकों के रूप में आपके मन में हों, अथवा उन समूहों के लिए, जिनके साथ आप इसका उपयोग करना चाहते हैं, उपयुक्त न हों।	• जांच-सूची के अंकन में सूचना के मूल्य को बढ़ाने के लिए ''टिप्पणियां'' स्तंभ जोड़ें। • इस साधन का उपयोग निर्धारण के अन्य तरीकों के साथ करें।

निर्धारण के साधनों/ तकनीकों की किस्में	लाभ	अध्यापकों के लिए सतर्कता	कार्यान्वयन के बारे में सुझाव
३. नियत कार्य प्रसंग-आधारित कार्यो को कक्षा के कार्य और/अथवा घर के काम के रूप में पूरा किया जाना है। बिना सिरे वाले अथवा संरचित हो सकते हैं। कुछ पाठ्यपुस्तकों के बाहर के संदर्भो पर आधारित हो सकते हैं।	• विद्यार्थियों को सूचना की तलाश करने, अपने विचारों का निर्माण स्वयं करने और कुछ विचारों को मौखिक/लिखित और/अथवा दृश्य अभिव्यक्तियों द्वारा व्यक्त करने का अवसर मुहैया करता है। • शिक्षा-प्राप्ति के उद्देश्यों और विषय-वस्तु की व्यापक श्रेणी का निर्धारण करने में सहायता देता है। • विद्यार्थियों को स्कूल के अंदर और बाहर के अधिगम से जुड़ने और संश्लेषण करने का अवसर प्रदान करता है।	• बहुत अधिक घर का काम अथवा कक्षा का काम नहीं दिया जाना चाहिए, जो कि आजकल की सामान्य पद्धति है। • सौंपे जाने वाले कार्य इस प्रकार के होने चाहिएं कि उनका प्रबंध विद्यार्थी स्वयं कर सकें। • यह निर्धारण का एकमेव तरीका नहीं बन जाना चाहिए।	• नियम कार्यों के संग्रहण से आगे जाना और इसके बाद विश्लेषण, चर्चा और मनन करना। • विद्यार्थियों की सृजन-क्षमता को बढ़ावा देना। • विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों से आगे जाने के लिए प्रोत्साहित करना। • समूह कार्य को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। यह 'पोर्टफोलियो' का भाग बन सकता है।
4. पोर्टफोलियो एक अवधि में विद्यार्थियों के कार्य का संग्रह/ यह दिन-प्रतिदिन का कार्य हो सकता है अथवा शिक्षार्थी के सर्वोत्तम का चयन हो सकता है।	• यह संचित रिकार्ड मुहैया करता है। इस प्रक्रिया में, यह चित्र उभर कर सामने आता है कि कौशल अथवा ज्ञान के क्षेत्र का विकास कैसे होता है। • यह विद्यार्थी को	• कार्य को पोर्टफोलियो में शामिल करने के लिए चुनने का कोई विशिष्ट कारण होना चाहिए • सभी पेपरों/कार्य की सभी मदों को	• 'पोर्टफोलियो' की विषय-वस्तु के चयन में विद्यार्थी की भागीदारिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इसके अलावा विषय-वस्तु के चयन के मानदंडों के बारे में भी। • बच्चे के बड़े होने के साथ-साथ पोर्टफोलियो का

निर्धारण के साधनों/ तकनीकों की किस्में	लाभ	अध्यापकों के लिए सतर्कता	कार्यान्वयन के बारे में सुझाव
	अपने अधिगम और प्रगति का प्रदर्शन दूसरों के समक्ष करने में समर्थ बनाता है। • बच्चा शिक्षा-प्राप्ति और निर्धारण में एक सक्रिय प्रतिभागी बन जाता है।	शामिल नहीं किया जाना है। इसे संभालना मुश्किल हो जाएगा।	निरंतर अद्यतनीकरण। • 'पोर्टफोलियो' की सामग्री और उसके साथ एक चिंतनशील विवरण की संरचना बहुत ध्यान से करना। • सरल संदर्भ के लिए विषय-वस्तु को स्पष्ट रूप से चिह्नित और संख्यांकित करना।
5. परियोजनाएं ये किसी समयावधि में हाथ में ली जाती हैं और इनमें सामान्य रूप से डाटा का संग्रह और विश्लेषण करना शामिल होता है। परियोजनाएं प्रसंग-आधारित शिक्षा-प्राप्ति में उपयोगी होती हैं।	• अन्वेषण करने, अपने हाथों से काम करने, प्रेक्षण करने, डाटा एकत्र करने, विश्लेषण करने, गठित करने और डाटा का अर्थ-निर्णय करने और सामान्यीकरण करने के अवसर मुहैया करता है। • समूहों में और जीवन की वास्तविक स्थितियों में काम करने का अवसर प्रदान करता है। • समूह कार्य, जानकारी को एक-दूसरे के साथ बांटने और एक-दूसरे से सीखने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित	• परियोजनाओं का स्वरूप और कठिनाई का स्तर ऐसा होना चाहिए कि विद्यार्थी उन्हें स्वयं कर सकें। • परियोजना के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री स्कूल में, पड़ोस में अथवा घर में उपलब्ध होनी चाहिए। इनसे माता-पिता के ऊपर वित्तीय बोझ नहीं पड़ना चाहिए। • प्रत्येक विद्यालय किसी संसाधन केन्द्र में जा सकता है, जिसके पास स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री होनी चाहिए।	• परियोजनाओं के विषयों का फैसला/चुनाव, उनकी योजना बनाने का काम और उन्हें कार्यान्वित करने का काम विद्यार्थियों द्वारा मुख्य रूप से अध्यापक के साथ मिलकर किया जाना चाहिए, जिसे मार्गदर्शक के रूप में कार्य करना चाहिए। • समूह परियोजनाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ये विद्यार्थियों को इकट्ठे मिलकर काम करने, अपने अनुभव बांटने और एक-दूसरे से सीखने में सक्षम बनाएंगी। परियोजनाएं विद्यार्थियों को छान-बीन करने, तफतीश करने और समूहों में काम करने के अवसर प्रदान करती रहती हैं। बच्चों को सामग्रियों का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करने और इस्तेमाल के बाद उन्हें

निर्धारण के साधनों/ तकनीकों की किस्में	लाभ	अध्यापकों के लिए सतर्कता	कार्यान्वयन के बारे में सुझाव
	करने में सहायता देता है।		संभाल कर रखने के लिए उत्साहित किया जा सकता है।
6. स्तर निर्धारण के पैमाने (रेटिंग स्केल) इनका उपयोग विद्यार्थियों के कार्य की गुणवत्ता को अभिलेखबद्ध करने और उसके बाद गुणवत्ता को विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर आंकने के लिए किया जा सकता है। संपूर्णतावादी स्तर-निर्धारण पैमानों के लिए किसी कार्य के एकल, समूचे निर्धारण की आवश्यकता होती है।	• विकास के विभिन्न पहलुओं का निर्धारण किया जा सकता है। • इसका उपयोग अलग-अलग व्यक्तियों का और समूहों का भी निर्धारण करने के लिए किया जा सकता है। • निर्धारण परिवर्ती समय वाले पीरियडों में और विभिन्न पर्यावरणिक स्थितियों में किया जा सकता है। • बच्चे के कार्य-निष्पादन/ज्ञान का साक्ष्य 'तत्काल' रिकार्ड पर आधारित होता है। • समय पाकर, व्यवहार और रुचियों/चुनौतियों, पद्धतियों/प्रवृत्तियों के विस्तृत प्रेक्षण उभरते हैं, जिससे अध्यापक बच्चे के एक व्यापक चित्र/दृश्य का	• अनुमान लगाने/अर्थ-निर्णय करने और फैसला करने से बचें। जो दिखाई देता है, उसे नोट करने पर ध्यान केंद्रित करें। • प्रेक्षक का कौशल यह निर्धारित कर सकता है कि क्या देखा गया है। • जिस तरीके से प्रेक्षण किया जाता है, उसमें संवेदनशील और सतर्क रहें। इसका अनिवार्य रूप से यह अर्थ नहीं कि आप दूरी बनाए रखें। • प्रेक्षण विभिन्न स्थितियों में विभिन्न क्रियाकलापों के बारे में कुछ अवधि तक किए जाने चाहिएं।	• उस ब्योरे को अभिलेखबद्ध करें, जो न केवल कार्य का विवरण देता है, बल्कि यह भी प्रकट करता है कि बच्चा जो कुछ कर रहा है, उसके बारे में क्या महसूस करता है। • सुधारात्मक उपायों के सुझाव भी दें। • उन प्रक्रियाओं के आधार पर जिनका अनुमान बाद में लगाया जा सकता है, टिप्पणियां नोट की जा सकती हैं।

निर्धारण के साधनों/ तकनीकों की किस्में	लाभ	अध्यापकों के लिए सतर्कता	कार्यान्वयन के बारे में सुझाव
	निर्माण कर सकता है।		
7. घटनाएं और परामर्शक अभिलेख बच्चे के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के प्रेक्षणात्मक वर्णनात्मक विवरण मुहैया करते हैं।	• विकास के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में सूचना का भंडार मुहैया करता है। • बच्चे के सामाजिक, भावात्मक विकास, पसंद, रुचियों और संबंधों, आदि को नोट करने में सहायता देता है। • बच्चों की शक्तियों और कमज़ोरियों की पहचान करता है और किसी अवधि में बच्चों द्वारा की गई प्रगति का निर्धारण करता है।	• कोई एकल घटना समूची सूचना उपलब्ध नहीं करती। • केवल 'समस्यात्मक' स्थितियों को देखा जा सकता है। निर्णय देने की बजाय घटनाओं का विवरण देना बेहतर होगा। • कक्षा की बहुत सी दिलचस्प घटनाओं में से कुछ घटनाओं को चुनना और सबको शामिल न करना। • सामान्य टिप्पणियां करने से बचना।	• बच्चों के जीवन में जो नाजुक बातें घटित हो रही हैं, उनमें से निरंतर दिलचस्पी वाली घटनाओं को चुनना और उनके किस्से तैयार करना। इससे कक्षा की विभिन्न स्थितियों में बच्चों के व्यवहार/ उनकी प्रतिक्रियाओं को समझने में सहायता मिलती है। • विभिन्न बच्चों से विभिन्न किस्म के किस्से एकत्र करने, जो समूह के सोच-विचार और अनुभूतियों को प्रकट करते हैं। • घटना होने के बाद यथासंभव शीघ्र उसे अभिलेखबद्ध करना ताकि उस घटना के सर्वोत्तम, सही और महत्त्वपूर्ण ब्योरे को बाद के निर्वचन के लिए शामिल किया जा सके।
8. फोटोग्राफ बच्चे के अनुभवों को, जब वे काम कर रहे होते हैं, अभिलेखबद्ध करने की व्यवस्था करते हैं। वे तैयार उत्पाद परियोजना के मॉडल आदि भी हो	• घटनाओं को सही रूप से याद करने में सहायता देते हैं। • बच्चों के सोचने और पारस्परिक कार्रवाई करने के तरीकों के बारे में गहरी दृष्टि प्रदान	• हो सकता है कि सौदर्यबोधी गुणवत्ता विवरणात्मक न हो। • बच्चों को अपनी टिप्पणियों और सुझावों के जरिए कैमरे के आगे बहुत अधिक संवेदनशील	• जिस उत्पाद का फोटो लिया जा रहा है, उसके अनुभवों और प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण ब्योरा चित्र में शामिल होना चाहिए। • इस बात का चयन करना कि अन्य साधनों की अनुपूर्ति करने के लिए

निर्धारण के साधनों/ तकनीकों की किस्में	लाभ	अध्यापकों के लिए सतर्कता	कार्यान्वयन के बारे में सुझाव
सकते हैं	करते हैं। • परिवारों के साथ सूचना को बांटने में सहायता देते हैं। • बच्चों के विकास के भावात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझने में सहायता देता हैं।	बनाने से बचें।	फोटोग्राफों की आवश्यकता कहां है। • बाद मतें किसी समय बच्चों के साथ उनके बारे में चर्चा करने के लिए फोटोग्राफों का इस्तेमाल करना।
9. श्रव्य-दृश्य रिकार्डिंग विशिष्ट स्थितियां अथवा महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाओं/ पहलुओं को अभिलेखबद्ध किया जा सकता है और बाद में उनका विश्लेषण किया जा सकता है।	• ये दोनों भाषा को और उसके तरीके सही रूप से ग्रहण किए जाने में सहायता देते हैं। • गति और ध्वनि घटित हो रही घटनाओं को समझने में सहायता देते हैं। • इससे बच्चे के स्पष्टीकरण को समझने में सहायता मिलती है जिससे सोचने के भिन्न तरीकों का पता चलता है।	• विश्लेषण में काफी समय लगता है। • बच्चे कभी-कभी कैमरे के लिए 'अभिनय' कर रहे होते हैं। • चूंकि इसके लिए तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता है, इसलिए यह खर्चीला है।	• जो कुछ रिकार्ड किया जाना है, उसका चयन बहुत ध्यानपूर्वक किया जाना चाहिए क्योंकि बाद में उसका विश्लेषण करना जरूरी होता है। • बच्चों को इस बात का समय दें कि वे उपस्कर के साथ सुपरिचित हो सकें और उसे सहज रूप से ले सकें; यह एक बहुत अच्छा विचार है।
10. प्रश्नोत्तरी, खेल और क्रियाकलाप इनका उपयोग भी समय-समय पर बच्चों का निर्धारण करने के लिए किया जा सकता है।			

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में मूल्यांकन के साधन

3.1 अध्ययन के विषय

पिछले रिकार्ड फार्म का प्रारूप (फार्मेट)

विद्यार्थी का नाम .... कक्षा .... अनुभाग .... सत्र.........................

अवसर और स्थान	अध्यापक का वास्तविक विवरण/ अध्यापक द्वारा देखी गई स्थिति	अध्यापक के सुझाव/ टिप्पणियां

3.2 'रेटिंग' माप

क. अभिवृत्ति का मूल्यांकन

निम्नलिखित के प्रति अभिवृत्ति			मूल्यांकन के सूचक		
अध्यापकों के प्रति	• हमेशा आदर करता/करती है और सहायता करता/करती है।	• आवश्यक होने पर सहायता करता/करती है।	• आदर करता/ करती है और प्रायः सहायता करता/करती है।	• सामान्यतः आदर करता/करती है और सहायता करता/करती है।	सामान्य रूप से आदर करता/ करती है और कहने पर कार्य करता/करती है।
विद्यालय के साथियों के प्रति	• बहुत ही सहायता करता/करती है। • विनम्रता के साथ और कुशलता के साथ कार्य कर सकता/सकती है।	• मदद करता/ करती है और प्रायः सहयोग करता/करती है। • प्रायः शिष्टता से कार्य करता है।	• सहायता करता/करती है और प्रायः सहयोग करता/ करती है। • कभी-कभी कार्य करता/ करती है, लेकिन शिष्टता के साथ नहीं	• सामान्यतः सहायता और सहयोग करता/ करती है।	• हमेशा सहायता करता/करती है, लेकिन कभी-कभी सहयोग करता/करती है।

विद्यालय के कार्यक्रमों, स्कूल/ सार्वजनिक संपत्ति के प्रति	• बहुत उत्साही है और विद्यालय के क्रियाकलापों में स्वेच्छा से भाग लेता/ लेती है। • हमेशा ध्यान रखता/रखती है और दूसरों को भी नष्ट करने के रोकता/ रोकती है।	• प्रायः विद्यालय के कार्यक्रमों में स्वेच्छा से भाग लेता/ लेती है। • प्रायः संपत्ति का ध्यान रखता/रखती है और दूसरों को भी उसे नष्ट करने से रोकता/रोकती है।	• कभी-कभी विद्यालय के कार्यक्रम में भाग लेता/ लेती है। • सामान्यतः संपत्ति का ध्यान रखता/ रखती है और दूसरों को नुकसान करने से रोकता/रोकती है।	• आवश्यक होने पर ही विद्यालय के कार्यक्रम में भाग लेता/लेती है। • सामान्यतः संपत्ति का ध्यान रखता/ रखती है और दूसरों को नष्ट करने से रोकता/ रोकती है।	• कभी-कभी भाग भाग लेता/ लेती है। • सामान्यतः संपत्ति का ध्यान रखता/ रखती है। दूसरों को नष्ट करने से नहीं रोकता/ रोकती।
पर्यावरण	• बहुत सतर्क और जागरूक है। अपने आसपास की जानकारी रखता/ रखती है और पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए सजग प्रयास करता/करती है।	• बहुत सतर्क और जागरूक है। आसपास सफाई रखने का प्रयास करता/करती है।	• अपने आसपास की अच्छी जानकारी रखता/रखती है, लेकिन उत्साह की कमी है।	• जागरूकता की कमी है और उसे और अधिक रुचि लेने और जागरूक रहने की आवश्यकता है।	• जागरूकता की कमी है।
(आंचलिक, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर के खेलों और खेलकूद	• टीम भावना है और हमेशा जीतने के लिए खेलता/खेलती है।	• कौशल का उत्कृष्ट विकास है और प्रायः उच्च कार्य-निष्पादन का	• प्रयास करता/ करती है, लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर।	• प्रायः टीम में सौहार्द का प्रदर्शन करता/ करती है। • कौशल का	• विद्यार्थी टीम का खिलाड़ी नहीं है। • कौशल का विकास

में बार-बार और गुणता के साथ भाग लेता/लेती है। टीम भावना और प्रतिभा (शक्ति, सामर्थ्य और गति) है।	• कौशल का सर्वोत्कृष्ट विकास है और उच्च कार्य-निष्पादन का प्रदर्शन करता/करती है।	प्रदर्शन करता/करती है। • टीम भावना है और प्रायः जीतने के लिए खेलता/खेलती है।	• कौशल का विकास बहुत अच्छा है, लेकिन कार्य-निष्पादन कभी-कभी करता/करती है।	• औसत विकास है।	धीमा है।
साहित्यिक क्रियाकलाप			**मूल्यांकन के सूचक**		
वाद-विवाद (विषय-वस्तु, आयोजन और प्रस्तुतीकरण)।	• बहुत सुसंगत है और बहुत बेहतरीन तरीके से आयोजन करता/करती है। • समुचित हाव-भाव के साथ बहुत प्रवाहपूर्ण प्रस्तुती।	• विषय-वस्तु और आयोजन बहुत अच्छा है। • समुचित हाव-भाव के साथ बहुत प्रवाहपूर्ण प्रस्तुतीकरण।	• प्रायः सुसंगत और समुचित क्रम में विषय-वस्तु और आयोजन। • कुछ हद तक प्रवाहपूर्ण और समुचित हाव-भाव।	• सामान्यतः सुसंगत और विषय-वस्तु का सहज रूप से संतोषजनक है। • प्रस्तुतीकरण प्रवाहपूर्ण और समुचित है।	• बहुत सुसंगत नहीं। • हल्की विषय-वस्तु।
कविता पाठ (उच्चारण, हाव-भाव और पुनः प्रस्तुतीकरण)।	• सही उच्चारण करता/करती है। • बहुत अच्छा भाव-भंगिमा है। विषय-वस्तु बहुत ही निष्ठा से प्रस्तुत करता/करती है।	• बहुत ही अच्छी भाव-भंगिमा है। विषय को पुनः प्रस्तुत करने में बहुत निष्ठावान है।	• उच्चारण सही है और भाव-भंगिमा अनावश्यक रूप से ठीक है। • विषय को निष्ठा से प्रस्तुत करता है।	• हालांकि विषय को प्रस्तुत करने में निष्ठावान है, लेकिन सही उच्चारण और समुचित भाव-भंगिमा की कमी है।	• रुचि की कमी है और उच्चारण भी समुचित नहीं है।

सृजनात्मक लेखन (विषय-वस्तु, भाषा, प्रस्तुतीकरण)	• बहुत अच्छी सुसंगतता है और विषय-वस्तु भी बहुत अच्छी है। • विचारों में मौलिकता है और प्रभावी प्रस्तुतीकरण है।	• प्रायः विषय-वस्तु सुसंगत है, और विचारों में मौलिकता दिखाई देती है। • प्रस्तुतीकरण प्रभावी है।	• विषय-वस्तु सुसंगत है, लेकिन बहुत अच्छी नहीं। • प्रस्तुतीकरण प्रभावी है, लेकिन बहुत मौलिक नहीं।	• कभी-कभी कुछ मौलिकता के साथ विषय-वस्तु में सुसंगतता है, लेकिन प्रभावी प्रस्तुतीकरण की कमी है।	• सुसंगत विषय-वस्तु बहुत कम। • विचारों में मौलिकता नहीं। • बार-बार मार्गदर्शन करने की ज़रूरत है।
सांस्कृतिक क्रियाकलाप (संगीत, रुचि, लय और ताल)	• लय-ताल का अच्छा ज्ञान है और गाना गाता है/गाती है और ठीक तरीके से वाद्य यंत्रों का प्रयोग करता है। • लय का अच्छा ज्ञान है और थाप में अंतर रखता/रखती है।	• गाने में आनंद लेता है और वाद्य यंत्रों के बारे में कुछ जानकारी है। • ताल का अच्छा ज्ञान है, लेकिन कभी-कभी भटक जाता/जाती है। • सीखने और जानने में बहुत रुचि लेता/लेती है और वाद्य यंत्रों के साथ गाता है।	• सीखने और शुरू करने में थोड़ा बताने की जरूरत होती है। • कभी-कभी थाप में अंतर कर देता है, लेकिन फिर ठीक कर देता है।	• कहने पर गाता/गाती है, लेकिन वाद्य यंत्रों को बजाना नहीं जानता।	• समूह में गा लेता/लेती है, लेकिन वाद्य यंत्रों की जानकारी नहीं है। • ताल का ज्ञान नहीं है।
नृत्य (रुचि, ताल, आंगिक कौशल और	• ठीक तरीके से स्वयं ही भाग लेने में हमेशा	• सीखने में बहुत रुचि लेता/लेती है	• अध्यापक के कहने पर कुछ कर पाता/	• समूह में नृत्य कर सकता/सकती है।	• ज़्यादा रुचि नहीं दिखाता/दिखाती है।

चेहरे का आव-भाव	रुचि लेता/ लेती है। • ताल का अच्छा ज्ञान है और थापों में अंतर रखता/रखती है। • आंगिक क्रियाएं और मुख्य की अभिव्यक्ति प्रभावी है।	और प्रायः वाद्य यंत्रों के साथ गाना गाती है। • ताल का अच्छा ज्ञान है, लेकिन थापों के बीच अंतर रखने में चूक कर देता/देती है। • आंगिक क्रियाएं और मुख की अभिव्यक्ति प्रभावी हैं।	पाती है और सहपाठियों के साथ कुछ सीखता/ सीखती है और शुरू करता/करती है। • कभी-कभी थाप में चूक कर देता/देती है। • आंगिक क्रियाओं और मुख की अभिव्यक्ति सीमित है क्योंकि संकोच करता/करती है और विश्वास की कमी है।	• कभी-कभी थाप में भटक जाती है और उभर नहीं पाता/पाती। • आंगिक क्रियाओं और मुख्य की अभिव्यक्ति अलग-अलग स्थितियों में करने के संबंध में अध्यापक से मार्गदर्शन की ज़रूरत पड़ती है।	• नृत्य करने में संकोच करता/ करती है। • अध्यापक द्वारा लगातार निर्देश देने और प्रस्तुति की ज़रूरत पड़ती है।
नाटक (रुचि, स्क्रिप्ट लेखन, नाटक करने का कौशल, चित्रकला, माडलिंग और अन्य मंच शिल्प, क्रियाकलाप)	• बहुत ही रचनात्मक, ऐसी स्क्रिप्ट लिख सकता/सकती है, जो समाज या विद्यालय के मुद्दों पर आधारित हों। • नाटक के विभिन्न रूपों में भाग लेने में काफी उत्साही है और एकांकी,	• रचनात्मक और सुझाए गए विषय पर स्क्रिप्ट तैयार करता/करती है। • नाटक के चुने गए रूपों में उत्साह से भाग लेता/लेती है।	• थोड़ा कहने पर नाटक के चुने हुए रूपों में भाग ले सकता/सकती है। • अध्यापक से मार्गदर्शन मिलने पर स्क्रिप्ट तैयार	• काफ़ी कहने और अध्यापक के मार्गदर्शन में नाटक के चुने हुए रूपों में कभी-कभी भाग लेता/ लेती है। • स्वयं स्क्रिप्ट नहीं लिख	• भाग लेने में विश्वास की कमी है और क्रियाकलाप तथा भंगिमाएं बहुत सीमित हैं और रुचि की कमी है।

निम्नलिखित के प्रति अभिवृत्ति	मूल्यांकन के सूचक				
	नुक्कड़ नाटक, बैले और सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों आदि में सही तरीके से भाग लेता/लेती है। • स्थानीय संसाधनों से उन्नत वेशभूषा तैयार करने में मदद करता/करती है।	• विद्यमान स्क्रिप्ट, वेशभूषा आदि में सुधार के लिए सुझाव देता/देती है।	कर सकता/सकती है। • कभी-कभी संवाद, वेशभूषा, मंच तैयार करने आदि में सुधार करने के लिए सुझाव देता/देती है।	सकता/सकती है। • संवाद, क्रियाकलाप और भंगिमाएं आदि सीमित हैं।	
कलात्मक क्रियाकलाप (ड्राइंग/पेंटिंग/रुचि/रचनात्मकता/कौशल)	• ड्राइंग/पेंटिंग में हमेशा बहुत आनंद और अभिरुचि का प्रदर्शन करता/करती है। • कार्य में मौलिकता और नवीनता है। • अपने कार्य में भावनात्मकता और अभिव्यक्ति का प्रदर्शन करता/करती है।	• प्रायः ड्राइंग/पेंटिंग में बहुत आनंद लेता/लेती है। • ड्राइंग में मौलिकता और कार्य में नवीनता है। • प्रायः अपनी भावना और अभिव्यक्ति का प्रदर्शन करता/करती है।	• प्रायः ड्राइंग/पेंटिंग का आनंद लेता/लेती है और कभी-कभी कल्पना-शीलता और रचनात्मकता का प्रदर्शन करता/करती है। • पुनः प्रस्तुतीकरण में अच्छा/अच्छी है। • विचारों का संप्रेषण करते	• अध्यापक से मार्गदर्शन की आवश्यकता है और अपनी कल्पनाशीलता का प्रयोग कम है। • विचारों को प्रभाव और अपील के साथ संप्रेषित कर सकता/सकती है।	• जो कुछ देखा, उसे पुनः प्रस्तुत करना पसंद करता/करती है। • लगातार देखरेख की ज़रूरत पड़ती है। • रचनात्मकता की कमी है और अध्यापक से विचार और अनुदेश प्राप्त करना चाहता/चाहती है।

			समय अपने कार्य में भावना और संवेगों का प्रदर्शन करता/करती है।		
अपशिष्ट सामग्री से चीज़े बनाना	• बहुत कौशलपूर्ण है और अपशिष्ट सामग्री का प्रयोग करके चीजें बनाने के लिए उत्साही है। • अपशिष्ट सामग्री को स्वयं उत्पादक चीज में बदलने की सोच है। इसमें कम कीमत का प्रयोग करता/करती है और सही तरीके से तकनीक का इस्तेमाल करता/करती है।	• कौशलपूर्ण है और अपशिष्ट सामग्री का प्रयोग करके वस्तुएं बनाने के लिए उत्साही है। • प्रायः अपने कार्य में कल्पनाशीलता का प्रयोग करता/करती है। • इस बारे में जागरूक है कि कीमती सामग्री और तकनीक का प्रयोग न किया जाए।	• अध्यापक के कहने से अपशिष्ट सामग्री से उपयोगी वस्तुएं बनाने में रुचि लेता/लेती है। • कम कीमती सामग्री/तकनीक का उपयोग करने में कभी-कभी कल्पनाशीलता का प्रयोग करता/करती है। • थोड़े से मार्गदर्शन से अच्छी वस्तुएं बना सकता/सकती है।	• अध्यापक से मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण की आवश्यकता है। • अपने कार्य में कम कल्पना-शीलता और कौशल का उपयोग करता/करती है।	• रुचि में कमी है। • अध्यापक से लगातार मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण की आवश्यकता है। • कल्पनाशीलता का प्रयोग नहीं करता/करती है।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शैक्षिक शाखा, शिक्षा सदन,
17, राउज़ एवेन्यू, नई दिल्ली-110002

सं. सीबीएसई/डी(ए)/पीए/04 **परिपत्र सं. 05/07**

13 फरवरी, 2007

प्रिय प्रधानाचार्य

विषयः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के बारे में

कृपया केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से बधाई स्वीकार करें। जैसा कि आपको ऊपर मुद्रित पते से पता चला होगा कि शैक्षिक शाखा के पते में परिवर्तन हो गया है। यह अब पुराने भवन 17बी, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली से शिक्षा सदन नामक अपने भवन में अंतरित हो गया है, जिसका पता ऊपर दिया गया है। आपसे अनुरोध है कि आप इस परिवर्तित पते को नोट करने की कृपा करें। बोर्ड को पूरी आशा है कि शैक्षिक शाखा के अपने भवन में अवस्थित होने से शैक्षिक क्रियाकलापों की ओर ध्यान देने में सुविधा रहेगी जिससे संबद्ध विद्यालय, ज्ञान से परिपूर्ण समाज में सार्थक यात्रा करके सक्रिय और प्रगामी रूप से भाग ले सकेंगे।

जैसा आप भली भांति जानते हैं, बोर्ड कई शैक्षिक मुद्दों पर चर्चा करता है ताकि शिक्षण की प्रक्रिया में अपनी समग्र संभावनाओं का विद्यार्थी पता लगा सकें। बोर्ड का हमेशा यह विश्वास है कि शिक्षण एक आनंदपूर्ण अनुभव है और इसके द्वारा विद्यार्थी जीवन की सकारात्मक और महत्त्वपूर्ण बातों का पता लगाता है। इससे ज्ञान के अथाह समुद्र का भी पता चलता है और यह शिक्षार्थी में प्रतिभा और सकारात्मक संभावनाओं को पैदा करता है। आनंदपूर्ण शिक्षण वातावरण में जिज्ञासा, उद्यमशीलता की भावना और साहसिक कार्यों, रचनात्मक इच्छाओं, सहयोग की इच्छा और सह-अस्तित्व की भावना पैदा होती है। ऐसी स्थिति में शिक्षार्थी में डरने की भावना कम होती है और वह निर्भय और तनावमुक्त वातावरण में कार्य करता है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षण का यह उद्देश्य और शिक्षण का तरीका उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित होता है।

अभी हाल में परीक्षा की संकल्पना को अनावश्यक बताए जाने पर अत्यधिक बल दिया गया है और ऐसा पता चला है कि इससे भय की कृत्रिम और अस्वास्थ्यकर प्रतियोगिता पैदा होती है। इसके कारण शैक्षिक प्रक्रिया के मूलभूत उद्देश्य को ही नकार दिया जाता है और परीक्षा में अंक प्राप्त करने के लिए सूचना के प्रसार के कई महत्त्वपूर्ण संघटक निरर्थक हो जाते हैं और शिक्षण की प्रक्रिया को अर्जित करने की क्षमता भी निरर्थक हो जाती है। प्राथमिक स्तर पर

उत्तीर्ण और अनुत्तीर्ण की संकल्पना से वांछित नैदानिक भूमिका नहीं निभाई गई है। इसके विपरीत आनंदपूर्ण शिक्षण में मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा करके उसे मुख्यधारा से भटका दिया गया है।

कई मामलों में शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक मंचों में कई सफलता की कहानियां होने के बावजूद, शिक्षार्थी को ऐसे विषय में अंक न ले सकने के कारण अनुत्तीर्ण कर दिया जाता है, जिस विषय में किसी कारणवश उसकी कोई अभिप्रेरण नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि अब उस उद्देश्य का पता चल चुका है, जिस उद्देश्य को अभी तक विद्यार्थी नहीं समझ पाए थे और जो शैक्षिक प्रक्रिया में एक मौलिक आवश्यकता है।

बोर्ड का पक्का विश्वास है कि सतत शिक्षण की प्रक्रिया के प्रसंग में शिक्षार्थी का मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है, क्योंकि यह सहज और समर्थनकारी भूमिका निभाता है। परीक्षा का भय और डर कम से कम करना होगा ताकि शिक्षण तनावमुक्त वातावरण में किया जा सके। इस प्रसंग में बोर्ड ने अपने हाल ही के परिपत्र संख्या 7 दिनांक 09 फरवरी, 2003 के जरिए विद्यालयों का ध्यान आकर्षित किया था कि वे कक्षा V तक आवधिक परीक्षा न ली जाए और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया कक्षा VIII तक लागू की जाए। बोर्ड को यह नोट करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि संबद्ध विद्यालयों ने उपर्युक्त दृष्टिकोण को पूरी सकारात्मकता के साथ स्वीकार किया है और कई विद्यालयों ने इसे पहले ही लागू कर दिया है। यह बात दोहराई जाती है कि इस महत्त्वपूर्ण शैक्षिक पहल को तत्काल करने की आवश्यकता है ताकि सभी संबद्ध विद्यालयों के विद्यार्थियों को आवश्यक समान तनावमुक्त वातावरण मिल सके। विद्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे आवधिक परीक्षा के आधार पर विद्यार्थियों का मूल्यांकन करना छोड़ दें और जहां तक संभव हो सके, बिना उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण किए विद्यार्थियों के सतत और व्यापक मूल्यांकन की ओर बढ़ा जाए। यदि कोई विद्यार्थी शिक्षण के न्यूनतम स्तर को प्राप्त नहीं कर पाता है, तो उसे प्रगामी तरीके से बाद की कक्षा में दोहराया जा सकता है।

जैसा कि हाल के परिपत्र में सूचित किया गया था, वही बात पुनः दोहराई जाती है कि विद्यालयों को चाहिए कि वे कक्षा II तक के विद्यार्थियों को गृह कार्य देना बंद कर दें ताकि विद्यार्थी परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत करके उस समय उपयोग करें और इससे पारस्परिक संबंधों और संवेगात्मक पहलुओं को समृद्ध करे। बोर्ड इस संबंध में विद्यालयों के लिए कुछ दिशानिर्देश तैयार करने पर भी कार्य कर रहा है और ये दिशानिर्देश यथासमय विद्यालयों को उपलब्ध करा दिए जाएंगे।

बोर्ड यह महसूस करता है कि विद्यालयों को चाहिए कि वे स्वतंत्र कला, जिसमें संगीत, पेंटिंग, नृत्य और लोक-कलाएं शामिल हैं, विद्यालय में प्राइमरी स्तर पर करने का अधिक और बेहतर अवसर प्रदान करें ताकि ऐसा व्यापक शिक्षण हो, जिसमें शिक्षार्थी की संवेगात्मक प्रतिभा को समृद्ध किया जा सके। यह व्यक्ति और समाज के स्तर पर भोगवादी आवश्यकता से लड़ने के लिए सहायक होगा।

भारतीय शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का समग्र विकास करना है और वह सशक्त मूल्यों पर आधारित होता है। सभी संबद्ध विद्यालयों को सहायता देकर केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

ज्ञान से परिपूर्ण समाज में नेतृत्व का अर्जन करने में हमें सकारात्मक और रचनात्मक कदम उठाने होंगे। इसमें मानव संसाधन को अपेक्षित क्षमता अर्जित करनी होगी ताकि हमारा कार्य-निष्पादन टिकाऊ हो। सभी संबद्ध विद्यालय इस दायित्वपूर्ण कार्य में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साझेदार हैं। हमें पक्का विश्वास है कि संबद्ध विद्यालय मानव संसाधनों का विकास करने में हमें ऐसा सहयोग देंगे कि जिससे हम भावी पीढ़ियों को वैश्विक प्रतियोगिता की स्थिति में सफल बना सकें।

भवदीय,

(जी. बालासुब्रामणियन)
निदेशक (शैक्षिक)

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शैक्षिक शाखा, शिक्षा सदन,
17, राउज़ एवेन्यू, नई दिल्ली-110002

डी(ए)/सीसीई/04 **परिपत्र सं. 18/04**

29 मार्च, 2004

सेवा में,

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के संस्थानों
से संबद्ध सभी प्रमुख

प्रिय प्रधानाचार्य

विषयः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के बारे में

जैसा आप भली भांति जानते हैं, बोर्ड ने प्राथमिक कक्षाओं में सतत और व्यापक मूल्यांकन लागू करने की आवश्यकता और अनिवार्यता हाल ही की अधिसूचनाओं के माध्यम से पहले ही अधिसूचित कर दी है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य शैक्षिक क्रियाकलापों पर ध्यान केंद्रित करने का कार्य शिक्षार्थी के समग्र व्यक्तित्व को समृद्ध करने की ओर है और इससे विद्यार्थी पुराने, प्रभावी और 'साइकोमोटर डोमेन' के अंतर्गत शिक्षण के कई पहलुओं को समझ सके। यह शिक्षण पर दबाव को कम करने में भी मदद करेगा ताकि आवधिक परीक्षाओं पर अनुचित रूप से ध्यान केंद्रित न किया जाए।

हालांकि अपने विद्यालयों की 'रिपोर्टिंग' प्रणाली में कई विद्यालयों ने इन बातों को अपने स्तर पर ही शामिल करने के लिए कदम उठा लिए हैं, तथापि यह महत्त्वपूर्ण है कि बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों में कुछ हद तक एकरूपता स्थापित की जाए। इस प्रसंग में, मुझे यह कहना है कि बोर्ड ने प्राथमिक कक्षाओं के लिए विद्यालय-उपलब्ध 'रिकार्ड' का 'मॉडल' तैयार कर लिया है। बोर्ड ने दो अलग-अलग प्रारूप निधारिरित किए हैं, जिनमें से एक कक्षा I और II के लिए और दूसरा कक्षा III से V के लिए। इन प्रारूपों को तैयार करते समय, इन कक्षाओं में पढ़ने वालों की विभिन्न क्षमता अपेक्षाओं को ध्यान में रखा गया है। हाल ही में यह भी सूचित किया गया था कि संबद्ध विद्यालय कक्षा I और II के लिए उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण करने की प्रणाली को बंद कर दें और कक्षा III से V के लिए सतत और व्यापक मूल्यांकन शुरू कर दें। विद्यालयों को चाहिए कि वे धीरे-धीरे कक्षा V तक उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण करना बंद कर दें। यह उल्लेखनीय है कि विद्यालयों को चाहिए कि वे शिक्षार्थी की अभिवृत्ति और प्रवृत्ति का पता लगाने के लिए पर्याप्त समय और अवसर

निकालें ताकि उन्हें उस विषय में मदद की जा सके, जिन्हें वे कर सकें न कि उन्हें वह काम सौंपा जाए जिसे वे नहीं कर पा रहे हैं।

बोर्ड ने इन प्रारूपों के अंतिम पृष्ठ पर कुछ मोटे-मोटे दिशानिर्देश भी दिए हैं। विद्यालयों को सलाह दी जाती है कि वे उन्हें उसी आकार में अपने विद्यालयों में छपवाएं, जैसे ये छपे हुए हैं। इस योजना के सफल कार्यान्वयन में विद्यालयों के सहयोग से इस देश के शैक्षिक परिदृश्य में वांछित परिवर्तन लाने में मदद मिलेगी।

भवदीय,

(जी. बालासुब्राणियन)
निदेशक (शैक्षिक)

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शैक्षिक शाखा, शिक्षा सदन,

17, राउज़ एवेन्यू, नई दिल्ली-110002

डी(ए)/सीसीई/04 **परिपत्र सं. 18/04**

दिनांक 12 जून, 2004

सेवा में,

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के संस्थानों
से संबद्ध सभी प्रमुख

प्रिय प्रधानाचार्य

विषयः कक्षा I से V के लिए उपलब्ध रिकार्ड के बारे में।

जैसा कि आप जानते हैं, बोर्ड ने विद्यालयों को सुझाव दिया था कि वे कक्षा I से V के लिए सतत और व्यापक मूल्यांकन लागू कर दें। इसका उद्देश्य समग्र रूप से शिक्षार्थी का मूल्यांकन करना था ताकि प्रतिभा की क्षमता उनकी रिपोर्ट में समुचित रूप से दर्शाई जाए। इससे उनके सकारात्मक रवैये की पहचान करने में मदद मिलेगी और उन्हें उस कार्य के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा, जिसे वे कर सकते हों।

मुझे आपको इस विषय पर दो प्रारूप देने में प्रसन्नता हो रही है। इनमें से एक प्रारूप कक्षा I से II के लिए और दूसरा प्रारूप कक्षा III से V के लिए है। आपसे अनुरोध है कि आप अपने विद्यालय के लिए इन्हें समुचित रूप से छपवाएं। बेहतर होगा कि इन्हें 130 ग्राम के आर्ट कार्ड पेपर पर ए-4 प्रारूप में छपवाया जाए ताकि स्कूलों में इसे एकसमान रूप से रखा जा सके। आप अपने विद्यालय के लिए उपयुक्त रूप से मोटा कागज़ चुन सकते हैं। बेहतर होगा कि इनमें से कक्षा I और II के लिए एक रंग का कागज़ हो और कक्षा III से V के लिए दूसरे रंग का कागज़ हो। बोर्ड को पूरी आशा है कि इस प्रणाली के लागू करने से विद्यालयों में शिक्षण के वातावरण पर परिणामी प्रभाव पड़ेगा और इससे शिक्षार्थियों का अधिक संपूर्ण तरीके से विकास होगा।

भवदीय,

(जी. बालासुब्राणियन)
निदेशक (शैक्षिक)

विद्यालय का नाम

उपलब्धि रिकार्ड

(शैक्षिक वर्ष .... से .... तक)

कक्षा I और II

नाम	:	....
कक्षा	:	.... अनुभाग ....
जन्म तिथि	:	....
प्रवेश संख्या	:	....
आवासीय पता	:	....
दूरभाष सं.	:	....
माता-पिता/संरक्षक के नमूना हस्ताक्षर	:	....

क. भाषा

अंग्रेजी	**मूल्यांकन 1**	**मूल्यांकन 2**	**मूल्यांकन 3**
01 **पठन कौशल** • उच्चारण • प्रवाह • बोध			
02 **लेखन कौशल** • सृजनात्मक लेखन • लिखावट • व्याकरण • वर्तनी • शब्दभंडार			

अंग्रेजी	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
03 **वाक कौशल** • बातचीत • कविता पाठ			
04 **श्रवण कौशल** • बोध			

हिंदी/मातृभाषा	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
01 **पठन कौशल** • उच्चारण • प्रवाह • बोध			
02 **लेखन कौशल** • सृजनात्मक लेखन • लिखावट • व्याकरण • वर्तनी • शब्दभंडार			
03 **वाक कौशल** • बातचीत • कविता पाठ			
04 **श्रवण कौशल** • बोध			

ख. गणित

दृष्टिकोण	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
• संकल्पना • क्रियाकलाप • पहाड़े • मानसिक क्षमता			

ग. पर्यावरण विज्ञान

दृष्टिकोण	**मूल्यांकन 1**	**मूल्यांकन 2**	**मूल्यांकन 3**
• पर्यावरणीय संवेदनशीलता • क्रियाकलाप/परियोजना • समूह चर्चा			

घ. शिक्षा से जुड़े क्रियाकलाप

दृष्टिकोण	**मूल्यांकन 1**	**मूल्यांकन 2**	**मूल्यांकन 3**
• उत्साह • अनुशासन • टीम भावना • प्रतिभा			

कला/शिल्पकला	**मूल्यांकन 1**	**मूल्यांकन 2**	**मूल्यांकन 3**
• रुचि • रचनात्मकता • कौशल			

संगीत/नृत्य	**मूल्यांकन 1**	**मूल्यांकन 2**	**मूल्यांकन 3**
• रुचि • ताल • लय			

ङ. व्यक्तिगत विकास

व्यक्तिगत और सामाजिक विशेषता	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
01 • शिष्टता			
02 • विश्वास			
03 • अपनी चीज़ों का ध्यान रखना			
04 • स्वच्छता			
05 • नियमितता और समय की पाबंदी			
06 • पहल			
07 • आदान-प्रदान और देखभाल			
08 • दूसरों की संपत्ति का सम्मान			
09 • आत्म नियंत्रण			

च. स्वास्थ्य

दृष्टिकोण	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
• कद (सेंटीमीटर)			
• वजन (किलोग्राम)			

मूल्यांकन 1

विशिष्ट प्रतिभागिता

सामान्य टिप्पणी

उपस्थिति

कक्षा अध्यापक **प्रधानाचार्य** **माता-पिता**

मूल्यांकन 2

विशिष्ट प्रतिभागिता

सामान्य टिप्पणी

उपस्थिति

कक्षा अध्यापक **प्रधानाचार्य** **माता-पिता**

मूल्यांकन 2

विशिष्ट प्रतिभागिता

सामान्य टिप्पणी

उपस्थिति

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

बधाई, कक्षा .... में प्रोन्नत। नया सत्र .... से शुरू।

कक्षा अध्यापक **प्रधानाचार्य** **माता-पिता**

विद्यालयों के लिए दिशानिर्देश

1. इस उपलब्ध रिकार्ड का उद्देश्य विद्यालय में तनावरहित वातावरण में सुलभ संपूर्ण शिक्षण है।
2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पूरे वर्ष किया जाएगा और वर्ष के दौरान कम से कम तीन मूल्यांकन किए जाने चाहिएं।
3. मुख्य ध्यान शिक्षार्थी की प्रतिभा का पता लगाने में केंद्रित किया जाना चाहिए और उसे सकारात्मक ज्ञान देकर सशक्त बनाया जाना चाहिए।
4. मूल्यांकन प्रारूप (फार्मेट) में कोई नकारात्मक टिप्पणी नहीं की जाएगी।
5. बोर्ड ने निम्नलिखित क्रम में उपलब्धियों का उल्लेखन करने के लिए 5 बिंदु माप की सिफारिश की हैः

   ए+ सर्वोत्कृष्ट

   ए उत्कृष्ट

   बी बहुत अच्छा

   सी अच्छा

   डी औसत

विद्यालय का नाम

उपलब्धि रिकार्ड

(शैक्षिक वर्ष .... से .... तक)

कक्षा III, IV और V

नाम	:	....
कक्षा	:	.... अनुभाग ....
जन्म तिथि	:	....
प्रवेश संख्या	:	....
आवासीय पता	:	....
		....

दूरभाष सं.	:	....
माता-पिता/संरक्षक के नमूना हस्ताक्षर	:	....

क. भाषा

अंग्रेजी	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
01 **पठन कौशल** • उच्चारण • शुद्धता • बोध			
02 **लेखन कौशल** • सृजनात्मक लेखन • लिखावट • व्याकरण • वर्तनी • शब्दभंडार			
03 **वाक कौशल** • बातचीत • कविता पाठ			
04 **श्रवण कौशल** • बोध			
05 **अतिरिक्त कौशल**			
06 **क्रियाकलाप परियोजना**			

हिंदी/मातृभाषा	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
01 **पठन कौशल** • उच्चारण • प्रवाह • बोध			

02 **लेखन कौशल** • सृजनात्मक लेखन • लिखावट • व्याकरण • वर्तनी • शब्दभंडार			
03 **वाक् कौशल** • बातचीत • कविता पाठ			
04 **श्रवण कौशल** • बोध			
05 **अतिरिक्त कौशल**			

ख. गणित

दृष्टिकोण	**मूल्यांकन 1**	**मूल्यांकन 2**	**मूल्यांकन 3**
• संकल्पना • क्रियाकलाप • पहाड़े • मानसिक क्षमता • लिखित कार्य			

ग. पर्यावरण विज्ञान/विज्ञान

पर्यावरण विज्ञान	**मूल्यांकन 1**	**मूल्यांकन 2**	**मूल्यांकन 3**
• पर्यावरणीय संवेदनशीलता • क्रियाकलाप/परियोजना • समूह चर्चा • लिखित कार्य			

विज्ञान	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
• संकल्पना • क्रियाकलाप/परियोजना • वैज्ञानिक कौशल • समूह चर्चा			

घ. कम्प्यूटर

दृष्टिकोण	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
• कौशल • अभिवृत्ति			

ड. शिक्षा से जुड़े क्रियाकलाप

खेल	मूल्यांकन 1	मूल्यांकन 2	मूल्यांकन 3
• उत्साह • अनुशासन • टीम भावना • प्रतिभा			

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

2, सामुदायिक केंद्र, प्रीत विहार, दिल्ली-110092

सं. डी(ए)/पीए/सीसीई/2004 15 सितंबर, 2004

परिपत्र सं. 31/2004

सेवा में,

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध
सभी संस्थानों के प्रमुख

विषयः प्राथमिक कक्षाओं में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के बारे में।

परिपत्र सं. 6. दिनांक 8.2.2003, परिपत्र सं. 5/04 दिनांक 5.2.04

जैसा कि आप भली भांति जानते हैं, बोर्ड समय-समय पर विद्यालय के प्राथमिक अनुभागों में विद्यार्थियों को तनावमुक्त शिक्षा देने की अनिवार्यता के संबंध में हाशिये में दिए गए परिपत्रों के माध्यम से विद्यालयों का ध्यान आकर्षित करता रहा है। हालांकि तनाव देने के कई कारण

हैं, लेकिन उनमें से कुछ बहुत ही ठोस हैं। इसलिए ऐसे उपाय करना संभव है कि इस तनाव को कम किया जा सके, भले ही अभी उन्हें पूरी तरह समाप्त न किया जा सके।

इनमें से एक प्रमुख कारण है, बस्ते का बड़ा होना। इस बात की ओर यशपाल समिति की रिपोर्ट में पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया गया है। कुछ संस्थानों द्वारा विद्यार्थियों के लिए, विशेषतः कक्षा I और II के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों को बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखते हुए, बोर्ड ने हमेशा यह महसूस किया कि कक्षा I और II के लिए निर्धारित पुस्तकों और 'नोट बुकों' की संख्या यथासंभव कम की जानी चाहिए। यहां तक कि ये पुस्तकें और 'नोट बुक' विद्यालय के कक्षा 'रूम' में ही रखी जानी चाहिएं ताकि विद्यार्थी इन पुस्तकों को अपने घर उठा कर न ले जाएं। विद्यालयों को सलाह दी जाती है कि वे विद्यालय परिसर में ऐसी व्यवस्था करें कि प्रतिदिन के प्रयोग के लिए इन विद्यार्थियों के बस्ते को विद्यालय में ही सुरक्षित रखा जाए।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि पाठ्यपुस्तकों को घर न ले जाने से मनोवैज्ञानिक भार कम होगा और विद्यार्थियों को अन्य आधारभूत जीवन-कौशलों का विकास करने का अवसर मिलेगा और वे अपने माता-पिता के साथ पर्याप्त भावात्मक संपर्क स्थापित कर सकेंगे। बोर्ड ने यह सिफ़ारिश भी की है कि उन्हें गृह कार्य न दिया जाए। यह महसूस किया गया कि इस अवस्था में शिक्षण यथासंभव अनौपचारिक और आनंदपूर्ण हो ताकि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का पोषण करने के लिए समय और संभावना हो। यह भय कि विद्यार्थी तब तक प्रभावी ढंग से नहीं सीखेंगे जब तक उन्हें औपचारिक शिक्षण न दिया जाए, निरर्थक पाया गया है। विद्यालयों को चाहिए कि वे माता-पिता को उनके बच्चों के अधिक हित में बदलते हुए प्रतिमानों को समझाएं।

इस संबंध में काफ़ी तर्क दिए गए हैं कि प्राथमिक कक्षाओं में उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण प्रणाली को समाप्त कर दिया जाए। बोर्ड इस बात से पूर्णतः सहमत है कि इससे छोटे-छोटे बच्चों के मन से भय को कम किया जा सकेगा। कभी-कभी कोई बच्चा एक विषय में पर्याप्त रूप से अच्छा नहीं कर पाता है या किसी अन्य कार्य को अच्छी तरह कर पाता है क्योंकि शिक्षार्थी के पास कुछ न कुछ प्रतिभा होती है और शिक्षण प्रणाली की यह ज़िम्मेदारी है कि वह उस प्रतिभा का पता लगाए और उसे आगे बढ़ाए।

इसलिए विद्यालय के स्तर पर की जाने वाली कुछ कार्रवाई का उल्लेख संक्षेप में नीचे दिया जा रहा हैः

1. विद्यार्थी को अपने घर से बस्ता लादने की जरूरत नहीं है और बस्ते को विद्यालय में डेस्क में रखा जाना चाहिए।

2. कक्षा II तक कोई गृह कार्य न दिया जाए।

3. कक्षा V तक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए और उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण का मापदंड न रखा जाए। विद्यार्थी की उपलब्धियों का रिकार्ड तद्नुसार रखा जाए और इस संबंध में बोर्ड ने अपने परिपत्र संख्या 25/04 दिनांक 12.06.2004 के जरिए पहले ही दो फार्मेट भेजे थे। इनमें से एक 'फार्मेट' कक्षा I और II के लिए था और दूसरा

'फार्मेट' कक्षा III से V के लिए था। इसलिए कक्षा II तक विद्यार्थी का दो वर्ष का विवरण रखा जाए और कक्षा III से V तक के विद्यार्थियों के संबंध में तीन वर्ष का विवरण रखा जाए।

विद्यालय, विद्यार्थियों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित कर सके, इसे सुकर बनाने के लिए बोर्ड ने कक्षा I से V तक के विद्यार्थियों के संबंध में विद्यालयों के लिए दिशानिर्देश तैयार किए हैं, जो ''गृह कार्य के विकल्प'' के रूप में हैं। इस पुस्तक का समूल्य संस्करण (75/- रुपए) है, जो सभी संबद्ध विद्यालयों को मानार्थ प्रति के रूप में भेजी जा रही है। यदि विद्यालयों को अतिरिक्त प्रतियों की आवश्यकता हो, तो वे केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के मुख्यालय के बुक स्टोर से या क्षेत्रीय कार्यालयों से इसकी खरीद कर सकते हैं। जैसाकि इस पुस्तक से देखा जा सकता है, बोर्ड ने ऐसे क्रियाकलापों की श्रृंखला दी है, जिनसे विद्यार्थियों में विश्वास और क्षमता का विकास करने में सहायता मिलेगी। जीवन-कौशल और मूल मूल्य विद्यार्थियों में विकसित करने होंगे और इस कठिन कार्य में माता-पिता और परिवार का दायित्व कम करने के नहीं आंका जा सकता है। विद्यालयों को यह सुनिश्चित करना होगा कि मानव संसाधन विकास के इस कार्य का निर्वहन करने में माता-पिता का सहयोग लिया जाता है।

बोर्ड ने विद्यालयों को यह भी सलाह दी है कि वे विद्यार्थी को उपलब्ध रिकार्ड के निर्धारित फार्मेट में दर्शाएं। विद्यार्थी के विवरण को पांच बिंदुओं के माप में प्रदर्शित किया जा सकता है, जैसाकि फार्मेट में बताया गया है। शैक्षिक मूल्यांकन के समग्र अंकों को ग्रेड में बदला जा सकता है। समग्र अंकों को ग्रेड में बदलने के संबंध में दिशानिर्देश शीघ्र ही परिचालित किए जाएंगे। उपर्युक्त अनुदेशों का सभी विद्यालयों द्वारा पालन करना होगा क्योंकि ये व्यापक रूप से भारत सरकार की सुपरिभाषित शैक्षिक नीतियों के पूर्णतः अनुकूल हैं।

बोर्ड के इन निर्णयों को अलग से नहीं देखा जाना चाहिए, अपितु शैक्षणिक सुधार की सतत प्रक्रिया में बोर्ड द्वारा की गई पहलों की श्रृंखला के भाग के रूप में देखा जाना चाहिए। बोर्ड को इस बात की प्रसन्नता होगी यदि विद्यालय माध्यमिक विद्यालय स्तर (कक्षा VI से VIII तक के लिए) पर भी इसे लागू करें। बोर्ड कक्षा VI से VIII के लिए भी उपलब्ध रिकार्ड का फार्मेट शीघ्र ही तैयार कर देगा, जो सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की संकल्पना तथा सात बिंदु मान पर आधारित होगा।

इन अनुदेशों का अपने-अपने विद्यालयों में शीघ्र और प्रभावी कार्यान्वयन में स्कूल का सहयोग नई पीढ़ी को विचारशील, कल्पनाशील, सृजनशील और रचनात्मक बनाने के हमारे प्रमुख लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायत सिद्ध होगा।

भवदीय,

(जी. बालासुब्राणियन)
निदेशक (शैक्षिक)

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केंद्र, 2, सामुदायिक केंद्र, प्रीत विहार, दिल्ली-110092

अकादमिक/निदेशक (अकादमिक)/2004 | 12 अप्रैल, 2005

परिपत्र सं. 21/2005

सेवा में,

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध सभी
संस्थानों के प्रमुख

प्रिय प्रधानाचार्य

जैसा आप जानते हैं, बोर्ड ने अपने परिपत्र सं. 25/04 दिनांक 12 जून, 2004 के जरिए कक्षा I से II और कक्षा III से V के लिए उपलब्ध रिकार्ड के दो फार्मेट भेजे थे, जिनमें प्राथमिक स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन लागू करने के महत्त्व को बताया गया था।

इस योजना के माध्यमिक स्तर पर हाल ही में लागू किए जाने से विद्यालयों के लिए प्राथमिक स्तर पर इस योजना को कार्यान्वित करना सरल हो गया है। हालांकि इस योजना की मुख्य-मुख्य विशेषताएं वही रहेंगी, तथापि बोर्ड और दिशानिर्देश भेज रहा है ताकि प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने में आपको सहायता मिले। उनमें दिए गए रेटिंग मापों से ग्रेड देने के लिए विभिन्न शैक्षिक और शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों में विद्यार्थी के कार्य के अनुसार उसे समुचित रूप से रखने में सहायता मिलेगी।

मैं, इस बात को दोहराना चाहूंगा कि इस योजना को लागू करने का मुख्य उद्देश्य बच्चे की संवृद्धि के कई पहलुओं का पोषण और उसे आगे बढ़ाना है। हम सब मिलकर यह प्रयास करेंगे कि बचपन के विकास के वर्षों में शिक्षण में प्रसन्नता और आनंद लाया जा सके।

शुभकामनाओं सहित

भवदीय,

(जी. बालासुब्राणियन)
निदेशक (शैक्षिक)

प्राथमिक स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी दिशानिर्देश

पृष्ठभूमि

काफी लंबे समय से शिक्षाशास्त्री और अन्य संबंधित व्यक्ति इस बात की आवश्यकता महसूस कर रहे थे कि शिक्षा सामान्य शिक्षा प्रणाली और विशेषतः मूल्यांकन प्रणाली में सुधार किया जाए। उनकी यह चिंता शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति (एन.पी.ई.), 1986 कार्यान्वयन कार्यक्रम (पी.ओ.ए.), 1992 में भी परिलक्षित हुई है, जब शिक्षा की गुणवत्ता पर राष्ट्र का ध्यान केंद्रित हुआ। इस नीति की एक सिफ़ारिश यह थी कि विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आरंभ किया जाए। यह बात विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे, 2000 में भी विद्यालय आधारित मूल्यांकन के रूप में शामिल की गई, जिसमें सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की संकल्पना की जड़ें थीं। सतत और व्यापक मूल्यांकन, जैसाकि इसके नाम से ही स्पष्ट है, मूल्यांकन की विकासशील प्रक्रिया है, जो दो उद्देश्यों पर बल देती है - एक ओर सततता और मूल्यांकन और दूसरी ओर अनुदेशीय परिणामों की व्यापक 'रेंज' का मूल्याकन।

शुरुआत

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने पहले अप्रैल, 1998 में कक्षा IX के शैक्षिक स्तर से माध्यमिक स्तर पर विद्यालय-आधारित मूल्यांकन की शुरुआत की थी।

बोर्ड के माध्यमिक विद्यालय प्रमाणपत्र के पूरक के रूप में पिछले विकासों के अलावा शारीरिक विकास, भावात्मक विकास और सौंदर्यबोध विकास के क्षेत्र पर आधारित विद्यार्थी को उपलब्धियों का मूल्यांकन प्रमाणपत्र रिकार्ड दिया गया। उसके व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों, अभिवृत्ति और रुचि को स्वीकार करते हुए, उसकी सराहना करते हुए और उसका मूल्यांकन करते हुए, बोर्ड उन्हें प्रेरित करने की ओर और निकट आया ताकि वे अपने अंदर के गुणों और अपनी वास्तविक संभावना का पता लगा सकें।

प्राथमिक स्तर पर इस योजना का विस्तार

इस प्रयास की सफलता से प्रोत्साहित होने पर बोर्ड ने इस योजना को प्राथमिक स्तर तक बढ़ाने का निर्णय लिया है और विद्यालयों को सलाह दी कि वे आवधिक परीक्षा के आधार पर विद्यमान उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण प्रणाली को बंद कर दें। बोर्ड ने इस प्रणाली को अपनाने के लिए मॉडल के रूप में उपलब्धि रिकार्ड की एक प्रति विद्यालयों को भी परिचालित की। विद्यालयों को यह भी ढील दी गई कि वे स्थानीय अपेक्षाओं के अनुकूल इसमें आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं।

इस दस्तावेज़ का उद्देश्य शिक्षार्थी की समग्र तसवीर पेश करना था और शिक्षार्थी के कार्य-निष्पादन के बारे में नकारात्मक टिप्पणी देना नहीं था। इसका उद्देश्य लगातार अंतर का निदान करके और शिक्षण की कठिनाइयों और उपचारात्मक शिक्षा के माध्यम से शिक्षक की मदद करके शिक्षार्थी के कार्य-निष्पादन में लगातार सुधार लाना है।

विद्यार्थी की उपलब्धियों की रिपोर्ट

विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों की उपलब्धियों की रिपोर्ट तैयार करते समय समग्र ज्ञान में अप्रत्यक्ष ग्रेडिंग के पांच बिंदुओं का प्रयोग किया जा सकता है। इन ग्रेडों में अंकों का वितरण इस प्रकार किया जाएगाः

ए+	सर्वोत्कृष्ट	90%–100%
ए	उत्कृष्ट	75%–89%
बी	बहुत अच्छा	56%–74%
सी	अच्छा	35%–55%
डी	औसत	35% से कम

बच्चे का ग्रेड उपलब्धि कार्ड में दर्शाया जाएगा, जो प्रतिशतता की उपर्युक्त श्रेणी में व्यवहार के सूचक के अनुसार प्रतिशतता पर आधारित होगा। इसके अलावा, शैक्षिक और शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों और बच्चे की उपलब्धि के स्तर के संबंध में कुछ टिप्पणियां दर्ज की जा सकती हैं। ये टिप्पणियां शिक्षण के क्षेत्र में प्रयास करने के लिए माता-पिता और बच्चे के लिए सहायक होंगी।

इस प्रकार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, सतत निदान, उपचार, प्रोत्साहन और सराहना करके विद्यार्थी की उपलब्धियों में सुधार लाने के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इसके लिए प्रधानाचार्य, अध्यापक और माता-पिता को अभिमुखी और ठोस प्रयास करने होंगे ताकि बच्चे के व्यक्तित्व का चहुंमुखी विकास हो सके।

ऐसी आशा है कि संलग्न रेटिंग मान से विभिन्न ग्रेडों के रूप में विद्यार्थियों को उचित रूप से रखने में अध्यापक को मदद मिलेगी।

अनुलग्नक-4

रेटिंग माप

क. भाषा (कक्षा I और II)

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता	उप-कौशल	ए+	ए	बी	सी	डी
01 पठन कौशल	उच्चारण (ज़ोर से पढ़ना)	पढ़ सकता/सकती है, नए-नए शब्दों का उच्चारण स्वयं कर सकता/सकती है।	पढ़ सकता/सकती है और प्रायः नए-नए शब्दों का उच्चारण कर सकता/सकती है	पढ़ सकता/सकती है और नए-नए शब्दों का उच्चारण अध्यापक की देखरेख में कर सकता/सकती है।	पढ़ नहीं सकता/सकती है और प्रायः नए-नए शब्दों का उच्चारण नहीं कर सकता/सकती है।	पढ़ नहीं सकता/सकती है और अध्यापक की देखरेख के बिना नए-नए शब्दों का उच्चारण बिल्कुल नहीं कर सकता/सकती है।
	धारा प्रवाह बोलना	साधारण वाक्यों को उचित गति, अभिव्यक्ति और उच्चारण के साथ प्रवाहपूर्ण तरीके से पढ़ सकता/सकती है।	साधारण वाक्यों को तेजी से प्रवाहपूर्ण तरीके से पढ़ सकता/सकती है, लेकिन कभी-कभी उसे तेज़ी से पढ़ने के लिए कहना पड़ता है।	साधारण वाक्यों को पढ़ सकता/सकती है, लेकिन प्रत्येक शब्द को पढ़ने में समय लगाता/लगाती है। प्रवाह, गति और अभिव्यक्ति की कमी है।	साधारण वाक्यों को बिना मार्गदर्शन के या कहने के नहीं पढ़ सकता/सकती है।	साधारण वाक्यों को पढ़ते समय अटकता/अटकती है। एक शब्द को एक बार में पढ़ता/पढ़ती है।
	बोध	कहानी/वाक्यों को पढ़ और समझ सकता/सकती है और सभी	अधिकांश प्रश्नों का सही उत्तर दे सकता/सकती है।	अध्यापक की मदद से कुछ समझ सकता/सकती है।	स्वयं किसी पैराग्राफ को नहीं समझ सकता/सकती है,	बिल्कुल भी नहीं समझता/समझती है। हमेशा अध्यापक की

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता	उप-कौशल	ए+	ए	बी	सी	डी
		प्रश्नों का सही उत्तर दे सकता/सकती है।			प्रायः मदद की ज़रूरत पड़ती है।	मदद की ज़रूरत पड़ती है।
02 लेखन कौशल	सृजनात्मक लेखन	दिए गए विषय पर शुद्धता के साथ 3, 4 या 5 वाक्य लिख सकता/सकती है और उसमें कुछ मौलिकता होती है। उदाहरणार्थ संज्ञा के साथ विशेषज्ञों का प्रयोग कर सकता/ सकती है, नए शब्दों का प्रयोग करने की कोशिश करता/करती है।	दिए गए विषय पर तीन या चार वाक्य सही लिख सकता/ सकती है, लेकिन स्वयं नए शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकता/सकती है।	दिए गए विषय पर कुछ वाक्य लिख सकता/सकती है, लेकिन बार-बार कहना पड़ता है और मार्गदर्शन देना पड़ता है।	दिए गए विषय पर तीन या चार वाक्य लिख सकता/सकती है। हमेशा कहना पड़ता है।	हमेशा अध्यापक की मदद की ज़रूरत पड़ती है।
	लिखावाट (घसीट)	स्वच्छ और सुपाठ्य है। सभी अक्षर सही लिखता/लिखती है और शब्दों के बीच में समुचित अंतर रखता/रखती है और नकल सही करता/ करती है।	स्वच्छ और सुपाठ्य। कभी-कभी अक्षरों और जगह छोड़ने में कमी कर देता/देती है। नकल करने में कोई भूल नहीं करता/ करती है।	सुपाठ्य है, लेकिन उसके स्तर के अनुसार नहीं है और अक्षरों की नकल करने में चूक कर देता/ देती है।	न तो सुपाठ्य है और न ही समान। नकल करने में गलतियां कर देता/ देती है।	मुख्यतः लिखने की समझ नहीं है और गलत लिखता/लिखती है।

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता	उप-कौशल	ए+	ए	बी	सी	डी
	व्याकरण	वाक्यों को ढीक ढंग से लिख सकता/सकती है और साधारण विराम चिह्नांकन और चिह्नों का उचित रूप से प्रयोग करता/करती है।	अधिकांशतः वाक्यों को सही ढंग से लिख सकता/सकती है। साधारण विराम चिह्नांकन चिह्नों का प्रयोग करने में यदाकदा अटक जाता/जाती है।	वाक्यों को कुछेक त्रुटियां किए बिना लिख ही नहीं सकता। कभी-कभी विराम चिह्नांकन चिह्नों का प्रयोग करने में अटक जाता है।	कुछ शुद्धता के साथ छोटे-छोटे वाक्य लिख सकता/सकती है। प्रायः सहायता की आवश्यकता होती है।	शुद्धता के साथ लिख सकता है। बहुत सहायता की आवश्यकता होती है।
	वर्तनी	पाठ्यपुस्तकों से सभी शब्दों की वर्तनी लगभग सही लिख सकता/सकती है, सदृश शब्दों को लिखने के लिए अपने उच्चारण संबंधी ज्ञान का प्रयोग कर सकता/सकती है।	यदा-कदा होने वाली त्रुटियों के साथ शब्दों को पाठ्यपुस्तक से सही लिखता/लिखती है। सदृश शब्दों को लिखने के लिए अपने उच्चारण संबंधी ज्ञान का प्रयोग कर सकता/सकती है।	शब्दों को लिखते समय कुछ गलतियां करता/करती है। सदृश शब्दों को लिखने में कभी-कभी अपने उच्चारण संबंधी ज्ञान का प्रयोग करता/करती है।	शब्दों को लिखते समय ढेर सारी गलतियां करता/करती है। नए शब्दों को लिखने के लिए अपने उच्चारण संबंधी ज्ञान का प्रयोग नहीं कर सकता/सकती।	ढेर सारी वर्तनी की गलतियां करता है।
	शब्द भंडार	शब्द भंडार का एक अच्छा भंडार रखता/रखती है। सदैव लिखने में नए शब्दों का प्रयोग करता/करती है।	शब्द भंडार का एक अच्छा भंडार रखता/रखती है। कई बार नए शब्दों का प्रयोग करने का प्रयास करता/करती है।	कभी-कभी नए शब्दों का प्रयोग करता/करती है।	नए शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करता/करती है। ज्ञान पहले पढ़ाए गए शब्दों तक ही सीमित है।	अल्प शब्द भंडार है।

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता	उप-कौशल	ए+	ए	बी	सी	डी
03. वाक् कौशल	वार्तालाप	धारा प्रवाह तथा स्वतः बोलता है/बोलती है। उचित रूप से तथा सही ढंग से स्थिति का मुकाबला करता/करती है।	अधिकांशतः धारा प्रवाह तथा स्वतः बोलता/ बोलती है। स्थिति का सही ढंग से मुकाबला करता/करती है, परंतु यदा-कदा शब्दों का घालमेल करता/करती है।	स्वतः धारा प्रवाह तक सही ढंग से बोलने की कमी होती है। समय पर जवाब देता/देती है, परंतु लंबा समय लगाता/लगाती है। अधिकांशतः तत्परता की आवश्यकता है।	आरंभिक स्तर पर बातचीत ही कर सकता/सकती है।	अधिकांशतः सहायता की आवश्यकता होती है।
	कविता पाठ	उचित गति, अभिव्यक्ति तथा उच्चारण के साथ किसी कविता को सुना सकता/सकती है।	उचित गति और अभिव्यक्ति के साथ कविता को सुना सकता/सकती है, परंतु उच्चारण में यदा-कदा चूक करता/करती है या शब्दों को भूल जाता/जाती है, इत्यादि।	यदा-कदा तत्परता के साथ कविता को सुना सकत/सकती है। अभिव्यक्ति बिल्कुल दमदार और प्रभावकारी नहीं है।	अधिकांशतः तत्परता से पूरी कविता को सुना सकता/सकती है। उचित उच्चारण और अभिव्यक्ति का अभाव है।	छोटी और साधारण कविताओं को ही सुना सकता/सकती है और वह भी तत्परता के साथ।
04. श्रवण कौशल	बोध	मौखिक प्रश्नों, अनुदेशों और कहानियों/ कविताओं को समझ सकता/सकती है।	मौखिक प्रश्नों, अनुदेशों, कहानियों और कविताओं को अधिकांशतः समझता/ समझती है	अनुदेशों, कहानियों या कविताओं को समझने में कठिनाई होती है। बहुधा मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।	अनुदेशों और कहानियों को समझने में कठिनाई होती है। अधिकांशतः सरलीकरण या अनुवाद की आवश्यकता होती है।	कक्षा अनुदेशों को समझने में बहुत देर लगती है। सदैव मातृभाषा में अनुवाद की आवश्यकता होती है

क. भाषा (कक्षा III, IV, V)

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता		ए+	ए	बी	सी	डी
01. पठन कौशल (ऊंचे स्वर में पढ़ना)	उच्चारण	स्वयमेव छोटी-छोटी कविताओं/लेखों/शब्दों को पढ़ सकता है और नए शब्दों का उच्चारण करने के लिए ध्वन्यात्मक कौशल का प्रयोग करता/करती है।	अधिकांशतः छोटी-छोटी कविताओं/लेखों/शब्दों को पढ़ सकता/सकती है। अधिकांशतः नए शब्दों का उच्चारण करने के लिए ध्वन्यात्मक कौशल का प्रयोग करता/करती है।	अधिकांशतः घटती-बढ़ती गति और किए गए मार्गदर्शन के साथ छोटी-छोटी कविताओं को प्रायः पढ़ सकता/सकती है।	अधिकांशतः घटती-बढ़ती गति और किए गए मार्गदर्शन से कविताओं को पढ़ सकता/सकती है।	अध्यापक द्वारा सहायता तथा प्रेरणा की आवश्यकता सदैव रहती है।
	धारा प्रवाह बोलना	उचित गति, अभिव्यक्ति और उच्चारण के साथ साधारण/जटिल उद्धरणों को धारा प्रवाह रूप से पढ़ सकता/सकती है।	तेज़ी से साधारण/जटिल उद्धरणों को धारा प्रवाह पढ़ सकता/सकती है, परंतु यदा-कदा तत्परता की आवश्यकता होती है।	साधारण उद्धरणों को पढ़ सकता/सकती है, परंतु प्रत्येक शब्द को पढ़ने में समय लेता/लेती है। धारा प्रवाह, गति और अभिव्यक्ति का अभाव है।	अधिकांशतः मार्गदर्शन से या तत्परता से साधारण उद्धरणों को पढ़ सकता है।	साधारण वाक्यों को पढ़ते हुए भी घालमेल करता/करती है। सदैव सहायता की आवश्यकता होती है।
	बोध	मूल पाठ को पढ़ सकता/सकती है और उसे समझ सकता/सकती है और प्रश्नों का उत्तर सही दे सकता/सकती है।	मूल पाठ को पढ़ सकता/सकती है और समझ सकता/सकती है। अधिकतर प्रश्नों का उत्तर सही ढंग से दे सकता/सकती है।	मूल पाठ को पढ़ सकता/सकती है और उसे समझ सकता/सकती है और कुछ प्रश्नों का सही ढंग से उत्तर दे सकता/सकती है।	मूल पाठ को अध्यापक की सहायता से पढ़ सकता/सकती है और समझ सकता/सकती है।	मूल पाठ को बिल्कुल ही समझ नहीं सकता/सकती।

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता		**ए+**	**ए**	**बी**	**सी**	**डी**
02. लेखन कौशल	सृजनात्मक लेखन	वाक्य रचना और शब्दभंडार के प्रयोग में लघु उत्तरों, कहानियों और अनुच्छेदों को शुद्धता के साथ और मौलिकता के साथ लिख सकता/सकती है। विचारों को तर्कसंगत रूप से क्रमबद्ध किया जाता है।	किसी दिए गए विषय पर छोटी-छोटी कहानियों और अनुच्छेदों को शुद्धता की उचित मात्रा के साथ लिख सकता/सकती है। कभी-कभी मौलिकता का प्रदर्शन करता/करती है। विचारों को तर्कसंगत रूप से क्रमबद्ध किया जाता है।	कहानियों और पैराओं को लिखता/लिखती है, परंतु कुछ त्रुटियां करता/करती है।	स्वयमेव कुछ व्याकरणीय त्रुटियों के साथ लघु संपृक्त व्याख्यात्मक वाक्यों को लिख सकता/सकती है।	स्वयमेव छोटे-छोटे वाक्यों को भी लिखता/लिखती है। बहुत सारी गलतियां करता/करती है।
	हस्तलेख	स्वच्छ और सुपाठ्य है। सभी अक्षर और हल्के स्पर्श संगत और सही ढंग से जुड़े होते हैं। प्रतिलेखन त्रुटि रहित होता है।	स्वच्छ और सुपाठ्य है। यदा-कदा अक्षरों और हल्के स्पर्शो की बनावट में असंगतता देखी गई है। प्रतिलेखन त्रुटिरहित होता है।	सुपाठ्य है परंतु कभी-कभी उसके हल्के स्पर्शो और अक्षरों में असंगतता होती है।	हस्तलेख बहुत स्वच्छ नहीं है। प्रतिलेखन में बहुत सी त्रुटियां होती हैं।	न तो सुपाठ्य है और न ही संगत है।
	व्याकरण	वाक्यों को सही ढंग से लिख सकता/सकती है।	अधिकांशतः वाक्यों को सही ढंग से लिख सकता/सकती है।	वाक्यों को कुछ त्रुटियों के साथ लिख सकता/सकती है।	वाक्यों को बहुत सारी गलतियों के साथ लिख सकता/सकती है।	शुद्धता के साथ नहीं लिख सकता/सकती। बहुधा सहायता की आवश्यकता होती है।

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता		ए+	ए	बी	सी	डी
	वर्तनी	सभी शब्दों को सही लिख सकता/सकती है। नए शब्द लिखने का प्रयास करता/ करती है।	अधिकांशतः सभी शब्दों को सही लिखता/ लिखती है। यदा-कदा अटकता/अटकती है।	शब्दों को सही लिख सकता/सकती है, परंतु कभी-कभी गलतियां करता/करती है।	बहुत सारी वर्तनियों की गलतियां करता/ करती है।	शब्दों को उचित रूप से लिख नहीं सकता/सकती है। सहायता करनी पड़ती है।
	शब्द भंडार	प्रचुर शब्दभंडार रखता/ रखती है/प्रायः लिखित तथा बोलने की अवस्था में नए शब्दों तथा वाक्यांशों का प्रयोग करता/करती है।	शब्दभंडार और वाक्यांशों का भंडार रखता/रखती है। अधिकांशतः केवल नए शब्दों का प्रयोग करता/करती है।	शब्दभंडार का एक अच्छा भंडार रखता/ रखती है। कभी-कभी नए शब्दों का प्रयोग करता/करती है।	शब्दभंडार केवल उन शब्दों तक ही सीमित है, जो कक्षा में पढ़ाए गए हैं।	शब्दभंडार का अपर्याप्त भंडार रखता/रखती है।
03. वाक् कौशल	वार्तालाप	धारा प्रवाह और स्वतः बोलता/बोलती है। स्थिति का मुकाबला उचित और सही ढंग से करता/करती है। घटनाओं/किस्सों को सुना सकता/सकती है और सहजतः दिए गए विषय पर चर्चा में भाग ले सकता/ सकती है।	अधिकांशतः धारा प्रवाह और स्वतः बोलता/ बोलती है। स्थिति का सही रूप से मुकाबला करता/करती है, परंतु यदा-कदा शब्दों का घालमेल करता/करती है। घटनाओं/किस्सों को सुना सकता/ सकती है और चर्चा में सक्रियता से भाग ले सकता/सकती है।	स्वतः धारा प्रवाह बोलने और शुद्धता के साथ बोलने में कभी-कभी पीछे रह जाता/जाती है। समय पर जवाब देता/देती है, लेकिन समय अधिक लेता/ लेती है। अधिकांशतः प्रेरित करने की जरूरत है।	स्वतः धारा प्रवाह और सही बोलने में पीछे रह जाता/जाती है।	अधिकांशतः सहायता की आवश्यकता होती है।

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता		ए+	ए	बी	सी	डी
	कविता पाठ	उचित गति, कथन शैली से अभिव्यक्ति और स्तर से कविता या कहानी सुना सकता/सकती है।	उचित गति या अभिव्यक्ति के साथ किसी कविता या कहानी को सुना सकता/सकती है, परंतु यदा-कदा गलतियां करता/करती है।	कविता या कहानी को यदा-कदा तत्परता के साथ सुना सकता/सकती है। अभिव्यक्ति बहुत सुस्पष्ट नहीं है।	प्रेरित किए बिना, संपूर्ण कविता या कहानी को सुना नहीं सकता/सकती। उच्चारण अभिव्यक्ति	कविता पाठ कमज़ोर है। अभिव्यक्ति का अभाव है।
04 श्रवण कौशल	बोध	मौखिक प्रश्नों अनुदेशों, कहानियों, कविताओं को समझ सकता/सकती है।	अधिकांशतः मौखिक प्रश्नों, अनुदेशों, कहानियों, कविताओं को समझता/समझती है।	अनुदेशों, कहानियों या कविताओं को समझने में कुछ कठिनाई होती है। बहुधा मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।	सुपरिचित स्थिति में साधारण वाक्य रचनाओं को समझ सकता/सकती है। अधिकांशतः सरलीकरण या अनुवाद की आवश्यकता होती है।	अनुदेशों को नहीं समझ सकता/सकती। हर समय सहायता की आवश्यकता होती है।
	अतिरिक्त पठन	संपूर्ण बोध के साथ अपने आनंद के लिए लघु कहानियों/कविताओं को पढ़ करता/सकती है। राय बना सकता/सकती है तथा पात्रों और	आनंद के लिए कहानियां/कविताएं पढ़ता/पढ़ती है। कभी-कभी कहानियों को समझने में सहायता की जरूरत होती है। राय बना	कहानियों/कविताओं को समझने में काफी सहायता की आवश्यकता होती है। केवल कभी-कभी किसी पात्र और स्थिति का मूल्यांकन कर सकता/सकती है।	कहानियों या कविताओं को पढ़ने में अभिरुचि का अभाव दर्शाता/दर्शाती है। बहुत अधिक प्रेरणा की आवश्यकता है।	अपनी ही किसी सामग्री को पढ़ने में बिल्कुल अभिरुचि नहीं रखता/रखती है।

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता		ए+	ए	बी	सी	डी
		घटनाओं का मूल्यांकन कर सकता/सकती है।	सकता/सकती है तथा पात्रों और घटनाओं का मूल्यांकन कर सकता/सकती है।			
	क्रियाकलाप/ परियोजना	उत्साहपूर्वक क्रिया-कलापों/परियोजनाओं में भाग लेता/लेती है।	अधिकांशतः क्रिया-कलापों/परियोजनाओं में उत्साहपूर्वक भाग लेता/लेती है।	सक्रिया भागीदारी के लिए अध्यापक द्वारा प्रत्यायन की आवश्यकता है।	समनुदेशित क्रिया-कलापों/परियोजनाओं में कभी-कभी भाग लेता/लेती है।	बिल्कुल भाग नहीं लेता/ लेती है।

ख. गणित

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता		ए+	ए	बी	सी	डी
	संकल्पना	उच्च संकल्पनाओं की ओर अग्रसर होने से ठीक पहले संकल्पनाओं को समझता/समझती है।	संकल्पनाओं को समझने में कुछ समय लेता/ लेती है।	नई संकल्पनाओं को समझने में कुछ समय लेता/लेती है।	संकल्पनाओं को समझता/समझती है, परंतु अधिकांशतः सहायता की आवश्यकता होती है।	संकल्पनाओं को समझ नहीं सकता।
	क्रियाकलाप	विभिन्न क्रियाकलापों में तीव्र अभिरुचि रखता/रखती है, जो	अधिकांशतः रुचि लेता/लेती है, परंतु अधिक नियमित/	कभी-कभी गणितीय क्रियाकलापों में रुचि लेता/लेती है।	केवल तब समनुदेशित क्रिया-कलापों में रुचि	बहुत आलसी और अरुचिकर।

परीक्षण क्षेत्र/ कौशल क्षमता		ए+	ए	बी	सी	डी
		उद्देश्य को सहजता से प्राप्त करने में उसकी मदद करती है।	क्रमबद्ध/संगठित होने की आवश्यकता है।		लेता/लेती है, जब उसे प्रेरित किया जाए।	
	पहाड़े	संख्याओं के समूहन की संकल्पना को समझ लिया है और पहाड़े कंठस्थ जानता/जानती है। युक्ति पहाड़ों को कर सकता/सकती है।	पहाड़ों को जानता/जानती है, परंतु युक्ति पहाड़ों में थोड़ा सा अटक जाता/जाती है।	पहाड़ों को जानता/जानती है, परंतु उच्च संख्या के पहाड़ों में गलती करता/करती है। युक्ति पहाड़ों में अटकता/अटकती है।	पहाड़ों की संकल्पना को समझ नहीं पाया/पाई है। गलतियां करता/करती है।	पहाड़ों की संकल्पना को नहीं सीखा/सीखी है। युक्ति पहाड़ों को बिल्कुल ही नहीं कर सकता/सकती। बहुत गलतियां करता/करती है।
	मानसिक योग्यता	गणितीय समस्याओं को मानसिक रूप से हल करने में अत्यधिक प्रसन्नता महसूस करता/करती है।	मानसिक रूप से सवालों की संगणना करने में निपुण, परंतु कई बार लापरवाही-पूर्वक गलतियां करता/करती है।	मानसिक संगणनाएं कर सकता/सकती है परंतु यदा-कदा अटकता/अटकती है।	कमज़ोर संकल्पनाएं रखता/रखती है। इसलिए धीमत गति पर सवालों को हल कर सकता/सकती है।	मानसिक रूप से सवालों को हल करने में धीमा/धीमी है।

ख. गणित (कक्षा III से V)

	ए+	ए	बी	सी	डी
संकल्पना	तर्क विचार और अच्छी बुद्धि कौशल के साथ संकल्पनाओं को	संकल्पनाओं को पूरी तरह समझता/समझती है।	संकल्पनाओं को समझता/समझती है और उनमें से अधिकांश को सही ढंग से	नई संकल्पनाओं को समझने में अधिक समय लेता/लेती है और बारंबार	अधिकांशतः संकल्पनाओं को समझने में तथा तर्कसंगत रूप से उन्हें

	ए+	ए	बी	सी	डी
	समझता/समझती है।		अनुप्रयुक्त करने में योग्य है। यदा-कदा सहायता की आवश्यकता होती है।	सहायता की अपेक्षा करता/करती है।	अनुप्रयुक्त करने में सहायता की आवश्यकता होती है।
क्रियाकलाप	समूह क्रियाकलापों में बहुत आत्मविश्वासी, मौलिक और सृजनात्मक। मिलकर कार्य करने की तीव्र भावना रखता/रखती है।	विभिन्न क्रियाकलापों को करने में तथा वास्तविक जीवन की अवस्थाओं में संकल्पनाओं को लागू करने में गहरी अभिरुचि रखता/रखती है।	बिल्कुल सृजनात्मक परंतु अधिक नवाचारी तथा मौलिक होने की आवश्यकता है।	दिलचस्पी लेता/लेती है, परंतु अधिक क्रमबद्ध तथा संगठित होने की आवश्यकता है।	पहले करने का अभाव है तथा समूहन क्रियाकलाप में अरुचिकर।
पहाड़े	संख्या समूहन की संकल्पना को समझ लिया है और पहाड़े कंठस्थ हैं। युक्ति पहाड़ों को कर सकता/सकती है।	पहाड़े जानता/जानती है, परंतु युक्ति पहाड़ों में थोड़ा-सा अटकता/अटकती है।	पहाड़ों को जानता/जानती है, परंतु उच्च संख्या के पहाड़ों में गलती करता/करती है। युक्ति पहाड़ों में अटकता/अटकती है।	पहाड़ों की संकल्पनाओं को नहीं समझ पाया/पाई है। युक्ति पहाड़ों में गलतियां करता/करती है।	पहाड़े याद नहीं किए हैं। युक्ति पहाड़ों को बिल्कुल ही नहीं कर सकता/सकती है।
मानसिक योग्यता	गणितीय समस्याओं को मानसिक रूप से हल करने में अति प्रसन्नता होती है।	अच्छी संख्या का भाव रखता/रखती है। मानसिक रूप से समस्याओं को हल करने में तेज़।	मानसिक सवालों को आराम से हल करता/करती है, परंतु कई बार जल्दी में गलतियां कर देता/देती है।	मानसिक संगणनाओं का निष्पादनकर सकता/सकती है, परंतु यदा-कदा अटकता/अटकती है।	सवालों को मानसिक रूप से हल करने में धीमा/धीमी।
लिखित कार्य	कार्य स्वच्छ है और क्रमबद्ध है। प्रस्तुति अन्य व्यक्तियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।	स्वच्छ और क्रमबद्ध कार्य।	स्वच्छ और नियमित कार्य, परंतु वाक्य संतोषजनक नहीं हैं।	प्रायः कार्य अस्त-व्यस्त होता है और आंकड़े कम दिखाए जाते हैं।	अस्त-व्यस्त कार्य। समनुदेशनों को प्रस्तुत करने में विलंब होता है।

घ. पर्यावरणीय विज्ञान (कक्षा I और II)

	ए+	ए	बी	सी	डी
पर्यावरणीय संवेदनशीलता	इच्छुक है, सचेत है तथा संप्रेक्षक तथा आस-पड़ोस की अधिक जानकारी की बहुत अधिक आवश्यकता है।	आस-पड़ोस के बारे में सजग रहने की आवश्यकता है।	बिल्कुल जानकारी रखता/रखती है, परंतु उत्साह का अभावा है।	जानकारी का अभाव अधिक जिज्ञासु और सचेत रहने की आवश्यकता है।	जानकारी का अभाव।
क्रियाकलाप/परियोजना	कतरनों/चिपकनों, चित्रकला, कालेज कार्य, साधारण कविताओं को कम्पोज करने के माध्यम से सृजनात्मकता और मौलिकता को संप्रदर्शित करता/करती है।	कुछ सहायता से प्रयास करता/करती है।	कतरन, पेस्टिंग, चित्रकला और कालेज कार्य कर सकता/सकती है। कई बार सृजनात्मक और मौलिकता दर्शाता/दर्शाती है।	मौलिकता का अभाव है तथा अध्यापक मार्गदर्शन का अनुपात बच्चे के दृष्टिकोण और रुचि के समानुपात में बढ़ता है।	अध्यापक शाश्वत मार्गदर्शक है।
समूह चर्चा	पृच्छा की भावना रखता/रखती है और अपने विचार रखने में आग्रही है।	साधारण प्रश्न पूछे जा सकते हैं, परंतु कई बार यदा-कदा प्रेरणा की आवश्यकता है।	अपने विचारों को आगे नहीं रख सकता, परंतु कई बार प्रेरणा के साथ।	अपने विचारों को आगे नहीं रख सकता/सकती है, परंतु निरंतर फुसलाने की आवश्यकता होती है।	समूह चर्चा में भाग नहीं लेता/लेती है और मूकदर्शक है।

पर्यावरण विज्ञान (कक्षा III, IV और V)

	ए+	ए	बी	सी	डी
पर्यावरणीय संवेदनशीलता	तर्क-वितर्क करने की योग्यता रखता/रखती	कुछ स्वतंत्र विचारधारा रखता है और बिल्कुल	तर्क और संप्रेक्षण पर आधारित साधारण प्रश्नों	तर्क-वितर्क करने और संप्रेक्षण करने में कठिनाई	साधारण प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तत्परता

	ए+	ए	बी	सी	डी
	है, स्वतंत्र विचारधारा रखता/रखती है, सत्य और सौंदर्यपरक, संवेदनशील/संप्रेक्षण के लिए मूल्य विषयक मूल्यांकन रखता/रखती है।	संप्रेक्षी है जिसमें यदा-कदा मूल्यांकन की अभिव्यक्ति भी है।	का उत्तर देने का प्रयास करता/करती है।	होती है। साधारण प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास कर सकता/सकती है।	की आवश्यकता है।
क्रियाकलाप परियोजना	बहुत नवाचारी है, जानकारी एकत्रित करता है/करती है, कार्य को स्वेच्छापूर्ण प्रस्तुत करने में योग्य है, संदर्भ कार्य करता/करती है।	अधिकांशतः कार्य सूचनात्मक और स्वच्छ होता है।	कार्य सूचनात्मक तथा कम और अधिक स्वच्छ है, अवलंब और सहायता लेने की प्रवृत्ति होती है।	प्रस्तुति में सुधार की आवश्यकता है, कम सूचनात्मक	कार्य अस्त-व्यस्त है और फाइलें ठीक ढंग से नहीं रखी जाती हैं तथा कार्य कम से कम सूचनात्मक है।
समूह चर्चा	दूसरों के विचार को सुनता/सुनती है और उनमें कुछ कहने में समर्थ है, संप्रेक्षण को रुचिकर बनाता/बनाती है, विचारों का एक अच्छा संगठन है।	दूसरों के विचारों को सुनता/सुनती है और उत्तर देने में हिचकता/हिचकती है।	निष्क्रिय रूप से सुनता/सुनती है और कोई विचार प्रकट नहीं करता/करती। उत्तर देने में हिचकता/हिचकती है, विचार प्रकट करने के लिए यदा-कदा सहायता की आवश्यकता होती है।	अनुदेशों को समझने में कुछ कठिनाई होती है। उत्तर देने के लिए प्रेरित करना पड़ता है।	ध्यान देने और अनुदेशों को समझने में कठिनाई होती है; अधिकांशतः सरलीकरण की आवश्यकता होती है।
लिखित कार्य		दिए गए लिखित कार्य को स्वतंत्र रूप से कर	सौंपे गए लिखित कार्य को कर सकता/सकती है,	सौंपे गए सरल कार्य को कर सकता/सकती है	अध्यापक के लगातार मार्गदर्शन से लिखित

	ए+	ए	बी	सी	डी
		सकता/सकती है। कार्य स्वच्छता के साथ करता/करती है।	लेकिन, कभी-कभार गलती कर देता/देती है।	और वह भी अध्यापक के मार्गदर्शन से।	कार्य कर सकता/सकती है।

विज्ञान (कक्षा III से V)

संकल्पना	समझने, पूर्ण रूप से समझने, स्मरण करने, परिभाषित करने और तर्क देने में उत्कृष्ट योग्यता। बड़ी आसानी से पाठ्य सामग्री को समझता/समझती है और उसमें अंतर करता/करती है। सुसंगत जानकारी को अनुप्रयुक्त करने में तथा तथ्यों को सारणीबद्ध करने में समर्थ है। पाठ, रेखांचित्र तथा वेब चार्ट को शीघ्र पढ़ और समझ समझ लेता/लेती है।	समझने, पूर्ण रूप से समझने, स्मरण करने, परिभाषित करने और तर्क देने में अच्छी योग्यता। बड़ी आसानी से पाठ्य सामग्री को समझ लेता है। सुसंगत जानकारी और तथ्य सारणी को अनुप्रयुक्त करता/करती है। पाठ, रेखाचित्र और वेब चार्ट को पढ़ लेता/लेती है और उसे समझ लेता/लेती है।	पाठ्य सामग्री को समझ सकता/सकती है और उसका स्मरण कर सकता/सकती है। सुसंगत जानकारी और सारणीबद्ध तथ्यों को अनुप्रयुक्त करने में समर्थ है, रेखाचित्रों और वेब चार्टों को पढ़ सकता/सकती है और समझ सकता/सकती है।	समझ सकता/सकती है, पूर्ण रूप से समझ सकता/सकती है, परिभाषित कर सकता/सकती है तथा तर्क दे सकता/सकती है। अध्यापक की सहायता से पाठ्य सामग्री को समझता/समझती है, तथ्यों को ठीक प्रकार से सारणीबद्ध करने में योग्य है। पाठ, रेखाचित्र और वेब चार्ट को पढ़ने में कठिनाई आती है।	समझने में निरंतर मार्गदर्शक की आवश्यकता है। पाठ को पढ़ने तथा समझने में कठिनाई पाता है।
क्रियाकलाप/परियोजना	सभी क्रियाकलापों में स्वेच्छा से भाग लेता/	अधिकांश क्रियाकलापों में भाग लेता/लेती है	कुछ क्रियाकलापों में भाग लेता/लेती है और कुछ	बहुत कम क्रियाकलापों में भाग लेता/लेती है	क्रियाकलापों या प्रयोग करने में भाग लेने के

	ए+	ए	बी	सी	डी
	लेती है और प्रयोगों का आनंद उठाता/उठाती है। अत्यंत प्रशंसनीय, सृजनात्मक तथा प्रस्तुतीकरण में मौलिक अन्वेषी, नवाचारी है तथा प्रयोग करने के पश्चात् परिणाम को समझता/समझती है।	और रुचि के साथ प्रयोग करता/करती है। उत्कृष्ट सृजनात्मक परियोजना प्रस्तुतीकरण। प्रयोग करने में अन्वेषी तथा नवाचारी, संदर्भ कार्य करता है।	प्रयोग करता/करती है। कम सृजनात्मकता वाला अच्छी परियोजना प्रस्तुतीकरण। प्रयोग करने में अन्वेषी है, कभी-कभी संदर्भ कार्य करता/करती है।	और मुश्किल से कोई प्रयोग करता/करती है। संतोषजनक परियोजना प्रस्तुतीकरण, बहुत सृजनात्मक नहीं है। मुश्किल से कोई पुस्तक पढ़ता है।	लिए बहुत अधिक प्रोत्साहन की आवश्यकता है। परियोजना सृजनात्मक और क्रमबद्ध नहीं है। अतिरिक्त पठन में हितबद्ध नहीं है।
वैज्ञानिक कौशल	बहुत तीव्र संप्रेक्षण, जिज्ञासात्मक दृष्टिकोण रखता/रखती है, क्रमबद्ध तरीके से प्रयोग करना पसंद करता/करती है और सही रेखाचित्र खींचता/खींचती है तथा सूचना सही, सावधानी-पूर्वक और क्रमबद्ध रूप से अभिलिखित करता/करती है। विश्लेषण करने, निष्कर्ष निकालने और सूचना अनुप्रयुक्त करने में समर्थ	तीव्र संप्रेक्षण रखता है, जिज्ञासु है, क्रमबद्ध कार्य करता/करती है और स्पष्ट रेखाचित्रों को खींचता/खींचती है, सूचना को सही, सावधानीपूर्वक और क्रमबद्ध रूप से अभिलिखित करता/करती है। विश्लेषण करने में, निष्कर्ष निकालने तथा जानकारी अनुप्रयुक्त करने में समर्थ है।	कभी-कभी संकल्पनाओं के बारे में पूछता/पूछती है। प्रायः क्रमबद्ध तरीके से प्रयोग करता/करती है तथा रेखाचित्र सही खींचता/खींचती है, जानकारी अभिलिखित करता/करती है, निष्कर्ष निकालने और कुछ कठिनाई के साथ सूचना अनुप्रयुक्त करने में समर्थ।	मुश्किल से जिज्ञासु, बनाए जाने पर प्रयोग करता है। बहुत क्रमबद्ध कार्य नहीं, अस्त-व्यस्त कार्य रेखाचित्र। निष्कर्ष निकालने और सूचना अनुप्रयुक्त करने में समर्थ नहीं है।	प्रयोग करने, अभिलेख या निष्कर्ष निकालने में हितबद्ध नहीं है। अपने कार्य में बहुत ठीक-ठाक तथा संगठित नहीं है। सामान्यतः अहितबद्ध रहता है।

	ए+	ए	बी	सी	डी
समूह चर्चा	सभी समूह चर्चाओं में सक्रिय भाग लेता/लेती है और प्रायः उनका नेतृतव करता/करती है। बहुधा रुचिकर संप्रेक्षण करता है और दिए गए मुद्दों का आगे बढ़ना/बढ़ाते है। मुद्दों का विवेचनात्मक रूप से विशेलषण और नये विचार उत्पन्न कर सकता/सकती है	सक्रिय रूप से भाग लेता/लेती है। अन्य सदस्यों के साथ अच्छे संबंध रखता/रखती है। प्रायः रुचिकर संप्रेक्षण करता/करती है, कुछ मुद्दों का विवेचनात्मक रूप से विशेलषण कर सकता/सकती है	कभी-कभी भाग लेता है। अन्य सदस्यों के साथ संतोषजनक संबंध रखता/रखती है। कभी-कभी रुचिकर संप्रेक्षण करता/करती है। कुछ मुद्दों का विशलेषण कर सकता है।	समूह चर्चा में भाग लेने में हिचकिचाता/हिचकिचाती है। अन्य सदस्यों के साथ थोड़ा संबंध। मुश्किल से याद करता/करती है।	एक निष्क्रिय भागीदार। संप्रेक्षण कभी नहीं करता/करती है, मुद्दों का विश्लेषण करने में असमर्थ।

घ. कंप्यूटर शिक्षा (कक्षा III-V)

कौशल	ग्राफिक कौशल, शब्द प्रसंस्करण कौशल और प्रचालन कौशल का प्रयोग करने में बहुत विश्वास।	प्रचालन और शब्द प्रसंस्करण कौशल में कुशल।	प्रचालन कौशलों में उत्कृष्ट समन्वय दर्शाता/दर्शाती है।	कक्षा में पढ़ाए गए विभिन्न विषयों पर अपने ज्ञान में वृद्धि के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग करता/करती है/ कम्प्यूटर को औजार के रूप में प्रयोग करता/करती है।	अपने समनुदेशनों को पूरा करने के लिए अनुदेशक से सहायता की आवश्यकता।
अभिरुचि	विभिन्न रंगों का चयन करने, उनका प्रयोग करने, चित्रों को सृजित करने और मल्टी मीडिया के कार्य की रचना, प्रस्तुतीकरण में भिन्न-भिन्न विशेषताओं की पहचान करने में उत्कृष्ट।	आकृतियों तथा रेखाओं को सृजित करने, औज़ारों का प्रयोग करने में विशेष अभिरुचि दर्शाता/दर्शाती है।	विश्वास के साथ कार्य करता/करती है और सक्षमता से 'माउस' का प्रयोग करता/करती है।	अध्यापक की सहायता से पाठ्य और आलेखों को संयोजित करने में समर्थ।	'की बोर्ड' पर अक्षर को खोजने में समय लेता/लेती है।

खेल (कक्षा IñV)

पहलू	ए+	ए	बी	सी	डी
उत्साह	पूरी अंतर्भूत प्रेरणा से खेलता/खेलती है।	अधिकांशतः पूरी अंर्तभूत प्रेरणा से खेलता/खेलती है।	उत्साहपूर्वक परंतु अपनी इच्छा के खेलों को खेलता/खेलती है।	खेलता/खेलती है, पर केवल आज्ञा (कमांड) किए जाने पर ही।	सदैव बहाने लगाता/लगाती है।
अनुशासन	स्वेच्छा से सभी कक्षाओं में अनुशासन का पालन करता/करती है और खेल के सभी नियमों का पालन करके खेलता/खेलती है।	अधिकांशतः स्वेच्छा से सभी कक्षाओं में अनुशासन का पालन करता/करती है तथा खेल के सभी नियमों का पालन करके खेलता/खेलती है।	आज्ञा (कमांड) किए जाने पर कक्षा अनुशासन का पालन करता/करती है और अपने फ़ायदे के अनुकूल ही नियमों का पालन करता/करती है।	दंड दिए जाने के भय की वजह से पालन करता/करती है। नाराज़गी से 'कमांड' किए जाने पर नियमों का पालन करता/करती है।	अनुशासन की कमी।
मिलकर कार्य करने की भावना	मिलकर कार्य करने की भावना रखता/रखती है और जीतने के लिए खेलता/खेलती है।	मिलकर कार्य करने की भावना रखता/रखती है और अधिकांशतः जीतने के लिए खेलता/खेलती है।	व्यक्तिगत रूप से अपने प्रयास करता/करती है।	कभी-कभी मिलकर सद्‌भावना रखने को दर्शाता/दर्शाती है।	टीम खिलाड़ी नहीं है।
प्रतिभा (बल, साहस और गति)	कौशल का उत्कृष्ट विकास और अधिक निष्पादन का प्रदर्शन करता/करती है।	कौशल का उत्कृष्ट विकास और अधिकांशतः अधिक निष्पादन का प्रदर्शन करता/करती है।	बहुत अच्छा कौशल विकास, परंतु यदा-कदा प्रदर्शन करता/करती है।	औसत कौशल विकास।	धीमा कौशल विकास।

कला/शिल्प (कक्षा IñV)

पहलू	ए+	ए	बी	सी	डी
रुचि	चित्रकला और चित्रकारी के लिए अधिक हर्षोल्लास तथा अभिरुचि के महत्त्व को समझता/समझती है।	चित्रकला और चित्रकारी के लिए अधिक हर्षोल्लास तथा अभिरुचि अधिकांशतः कला के महत्त्व को समझता/ समझती है।	चित्रकला और चित्रकारी का आनंद उठाता/उठाती है। कभी-कभी कल्पना को दर्शाता/दर्शाती है।	अपनी ही कल्पना का प्रयोग करने की अपेक्षा मार्गदर्शित होना पसंद करता/करती है।	वही दोहराना पसंद करता/करती है, जो देखा है। बार-बार अनुदेशों की आवश्यकता है।
सृजनात्मकता	कृति में मूल चित्रकला और नवाचार रखता/ रखती है। अपनी कृति में अधिक भावना अभिव्यक्ति को दर्शाता/दर्शाती है।	कृति में मूल चित्रकला और नवाचार रखता/ रखती है। अधिकांशतः अपनी कृति में अधिक भावना तथा अभिव्यक्ति को दर्शाता/दर्शाती है।	दोहराने में निपुण भावनाओं और मनोभावों को दर्शाता/ दर्शाती है।	प्रभाव और अपील के अनुसार विचारों को व्यक्त कर सकता/ सकती है।	सृजनात्मकता का अभाव तथा अध्यापक से विचारों और अनुदेशों की आशा करता/करती है।
कौशल	कौशल तथा उच्च प्रदर्शन का उत्कृष्ट विकास।	अधिकांशतः कौशल तथा उच्च प्रदर्शन का उत्कृष्ट विकास।	कौशल विकास उपलब्ध है, परंतु यदा-कदा प्रदर्शन करता/करती है।	बहुत धीमा कौशल विकास।	कोई कौशल नहीं।

संगीत/नृत्य (कक्षा IñV)

पहलू	ए+	ए	बी	सी	डी
रुचि	सदैव सीखने का/की बहुत इच्छुक होता/होती है तथा दिए गए	अधिकांशतः सीखने का/ की बहुत इच्छुक होता/ होती है तथा दिए गए	सीखने तथा आरंभ होने के लिए थोड़ी सी प्रेरणा की आवश्यकता है।	कभी-कभी रुचि दर्शाता/ दर्शाती है।	अधिक रुचि नहीं दर्शाता/ दर्शाती है।

पहलू	ए+	ए	बी	सी	डी
	अनुदेशों का पालन करता/करती है।	अनुदेशों का पालन करता/करती है।			
ताल	बच्चे में लय की एक अच्छी समझ होती है और ताल के साथ सामंजस्य रखता/रखती है।	बच्चे में लय की एक अच्छी समझ होती है और कभी-कभी ताल के साथ सामंजस्य बनाने में अटकता/अटकती है।	कभी-कभी ताल के साथ सामंजस्य खो बैठता/बैठती है।	कभी-कभी ताल को चला देता/देती है और इसकी भरपाई नहीं कर सकता/सकती।	ताल की समझ नहीं रखता/रखती है।
स्वर माधुर्य	बच्चे में धुन की एक अच्छी समझ होती है।	बच्चे में धुन की एक अच्छी समझ होती है और यदा-कदा मुख्य गति को खो बैठता/बैठती है।	बच्चा मुख्य गति खो बैठता है, कभी-कभी समय पर वापस आ जाता है।	बच्चे में समय आभास हो जाता है परंतु उच्च अटक से कुंजी के साथ सामंजस्य खो बैठता/बैठती है।	बच्चे में संगीत का भाव अधिक नहीं होता।

व्यक्तित्व विकास

पहलू	ए+	ए	बी	सी	डी
शिष्टाचार	शुभकामनाएं देने में, क्षमा कीजिए, आपका धन्यवाद तथा माफ़ कीजिए में बहुत सावधान और सदैव सम्मान देने के लिए खड़ा होता है/खड़ी होती है।	अधिकांशतः दूसरों को शुभकामनाएं देता/देती है, क्षमा कीजिए, आपका धन्यवाद, माफ कीजिए कहता/कहती है। सम्मान देने के लिए खड़ा होता	कई बार दूसरों को शुभकामनाएं देता/देती है, क्षमा कीजिए, आपका धन्यवाद और माफ कीजिए कहता/कहती है।	कभी-कभी शुभकामनाएं देने से क्षमा कीजिए, आपका धन्यवाद और माफ कीजिए कहने से बचता/बचती है। कभी-कभी विनम्रता से बोलता/	शुभकामनाएं देने से, क्षमा करना, धन्यवाद, माफ कीजिए कहने से बचता/बचती है। आक्रामक और अनम्र।

पहलू	ए+	ए	बी	सी	डी
		है/खड़ी होता है। विनम्रता से बोलता/बोलती है। बीच में व्यवधान नहीं डालता/डालती है।		बोलती है। बीच में व्यवधान डालता/डालती है।	
विश्वास	विभिन्न क्रियाकलापों को करने में सदैव बहुत आत्मविश्वास रखता/रखती है।	अधिकांशतः विभिन्न क्रियाकलापों को करने में बहुत आत्मविश्वास रखता/रखती है।	अधिकांश क्रियाकलापों को करने में आत्मविश्वास।	बिल्कुल आत्मविश्वास, परंतु अपने विचारों के साथ उपस्थित होने की आवश्यकता है।	आत्मविश्वास को उत्पन्न करने की आवश्यकता है।
समान का ध्यान रखना	सामान का सदैव सम्मान करता/करती है और उनका ध्यान रखता/रखती है।	अधिकांशतः स्वयं तथा दूसरों की संपत्ति का ध्यान रखता/रखती है।	अधिकांशतः सामान का ध्यान रखता/रखती है।	ध्यान रखता/रखती है, परंतु दूसरों के बारे में परेशान नहीं होता/होती है।	स्वये के बारे में तथा अन्य की संपत्ति के बारे में लापरवाह।
स्वच्छता	सदैव उचित और स्वच्छ वर्दी पहनता/पहनती है। वैयक्तिक स्वच्छता के बारे में बहुत सावधान रहता/रहती है।	उचित तथा स्वच्छ वर्दी पहनता/पहनती है। कभी-कभी नाखून/बाल/दांत साफ़ नहीं होते हैं।	अधिकांशतः उचित तथा स्वच्छ वर्दी पहनता/पहनती है।	अधिकांशतः अनुचित वर्दी में होता/होती है। प्रायः स्वच्छता के बारे में सावधान नहीं रहता/रहती है।	प्रायः अस्त-व्यस्त वर्दी पहने होता/होती है। अस्त-व्यस्त वैयक्तिक स्वच्छता।
नियमितता और समय की पाबंदी	स्कूल/कक्षा-कक्ष में नियमित तथा समय पाबंद रहने के बारे में बहुत ध्यान देता/देती है। समनुदेशनों और	स्कूल/कक्षा-कक्ष में नियमित तथा समयपाबंद रहने के बारे में प्रायः ध्यान देता/देती है। समनुदेशनों और	नियमित और समयपाबंद रहने के बारे में कभी-कभी ध्यान देता/देती है। समनुदेशनों को प्रस्तुत करने में कभी-कभी विलंब करता/	स्कूल/कक्षा-कक्ष में कभी-कभी अनियमित और समय का पाबंद नहीं रहता/रहती है। समनुदेशनों को प्रस्तुत करने में कभी-	स्कूल/कक्षा-कक्ष में कभी-कभी अनियमित रहता/रहती है तथा देर से आता/आती है। समनुदेशनों और

पहलू	ए+	ए	बी	सी	डी
	परियोजनाओं को करने तथा उन्हें प्रस्तुत करने में सदैव नियमित रहता/रहती है	परियोजनाओं को करने में तथा उनको प्रस्तुत करने में प्रायः नियमित रहता/रहती है।	करती है।	कभी विलंब करता/करती है।	परियोजनाओं को समय पर शायद ही प्रस्तुत करता/करती हो।
नवाचारी	चीज़ों को स्वतंत्र रूप से करने का प्रयास करता/करती है। मौखिक संगोष्ठी/पाठ्येतर गतिविधियों में सदैव भाग लेने के लिए तैयार रहता/रहती है।	अधिकांशतः चीज़ों को स्वतंत्र रूप से करने का प्रयास करता/करती है। प्रायः मौखिक संगोष्ठी/पाठ्येतर क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए तैयार रहता/रहती है।	प्रायः चीजों को स्वतंत्र रूप से करने का प्रयास करता/करती है। प्रायः मौखिक संगोष्ठी/पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने के लिए तैयार रहता/रहती है।	कभी-कभी चीज़ों को स्वतंत्र रूप से करने का प्रयास करता/करती है। कभी-कभी मौखिक संगोष्ठी/पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने के लिए तैयार रहता/रहती है।	चीज़ों को कभी भी स्वतंत्र रूप से नहीं करता/करती। मौखिक/पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने से बचता/बचती है।
सेवा की भावना	सामाजिक कार्य के लिए सभी क्रियाकलापों के मामले के लिए सदैव इच्छा रखता/रखती है। दूसरों की सहायता करने के लिए सदैव तैयार रहता/रहती है।	अधिकांशतः सभी गतिविधियों में भाग लेने के लिए सदैव इच्छा रखता/रखती है। दूसरों की मदद करने के लिए सदैव तैयार रहता/रहती है।	सामाजिक कार्य के लिए क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए सदैव इच्छा रखता/रखती है। दूसरों की सहायता करता/करती है।	सामाजिक कार्य के लिए क्रियाकलापों में भाग लेने की कभी-कभी इच्छा रखता/रखती है। कभी-कभी दूसरों की सहायता करता/करती है।	सामाजिक कार्य के लिए गतिविधियों में मुश्किल से भाग लेता/लेती है। दूसरों की सहायता करने के लिए कभी परेशान नहीं होता/होती।
दूसरे की संपत्ति का सम्मान	सदैव नियमों और विनियमों का पालन करता/करती है। संपत्ति का अच्छा ध्यान रखता/	अधिकांशतः नियमों और विनियमों का पालन करता/करती है। संपत्ति का ध्यान रखता/रखती है	प्रायः नियमों और विनियमों का पालन करता/करती है। संपत्ति का ध्यान रखता/रखती है और प्रायः	कभी-कभी नियमों और विनियमों का पालन करता/करती है। दूसरों की संपत्ति के बारे में	नियमों और विनियमों का पालन नहीं करता/करती है। दूसरों की संपत्ति के बारे में संवेदनशील नहीं

पहलू	ए+	ए	बी	सी	डी
	रखती है और सचेत रूप से पर्यावरण को स्वच्छ रखने की चेष्टा करता/करती है।	और सचेत रूप से पर्यावरण को स्वच्छ रखता/रखती है।	पर्यावरण को स्वच्छ रखने का प्रयास करता/करती है।	चिंतित होता/होती है। कभी-कभी अपने इर्द-गिर्द कूड़ा फैलाता/फैलाती है।	है। प्रायः अपने इर्द-गिर्द कूड़ा फैलाता/फैलाती है।
आत्म नियंत्रण	कक्षा कक्ष/कॉरिडोर/सीढ़ियों में सु-अनुशासित रहता/रहती है। क्रीड़ा-स्थल/विश्रांतिकाल में न कभी दुर्व्यवहार करता/करती है और न ही किसी से लड़ता/लड़ती है। भावुकता से संतुलित बच्चा है।	अधिकांशतः कक्षा-कक्ष/कॉरिडोर/सीढ़ियों में अनुशासित रहता/रहती है। क्रीड़ास्थल/विश्रांतिकाल में कभी दुर्व्यवहार नहीं करता/करती या नहीं लड़ता/लड़ती है।	अधिकांशतः कक्षा कक्ष/कॉरिडोर/सीढ़ियों में अनुशासित रहता/रहती है। यदा-कदा क्रीड़ास्थल/विश्रांतिकाल में दुर्व्यवहार करता/करती है या लड़ता/लड़ती है।	कक्षा कक्ष में अनुशासित रहता/रहती है, परंतु कॉरिडोर/सीढ़ियों में नहीं। प्रायः क्रीड़ास्थल/विश्रांतिकाल में दुर्व्यवहार करता/करती है या लड़ता/लड़ती है/शरारत करता/करती है।	कक्षा कक्ष/कॉरिडोर/सीढ़ियों में अनुशासित रहता/रहती है। अधिकतर क्रीड़ास्थल/विश्रांतिकाल में दुर्व्यवहार करता/करती है, लड़ता/लड़ती है/शरारत करता/करती है।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

2, सामुदायिक केंद्र, प्रीत विहार, दिल्ली-110092

एसी/पी/06 दिनांक 31 जनवरी, 2006

परिपत्र सं. 02/06

सेवा में,

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध संस्थानों के
सभी प्रमुख

प्रिय प्रधानाचार्य

विषयः माध्यमिक स्कूल स्तर पर सात सूत्रीय ग्रेडिंग प्रणाली का शुभारंभ।

जैसा कि आपको विदित है कि बोर्ड स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार की पहलें करता रहा है। इन पहलों के उद्देश्यों में निम्नलिखित सम्मिलित हैंः

- आनंदमयी तथा तनावमुक्त शिक्षा को सुकर बनाना
- समर्थकारी समग्र शिक्षा
- अध्यापक और विद्यार्थी के बीच अन्योन्यक्रिया की गुणवत्ता को सुधारना
- सकारात्मक निवेशों (इनपुटों) के माध्यम से अवलंबकारी उपलब्धियां
- निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

उपरोक्त पहलों के एक भाग के रूप में, बोर्ड ने पहले ही निम्नलिखित उपाय किए हैंः

- उपलब्धि अभिलेख (कक्षा I से V तक)
- प्राथमिक कक्षाओं के लिए निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से निर्धारण
- विभिन्न सक्षमताओं का ब्योरा देकर पांच सूत्री रेटिंग पैमानों का स्पष्टीकरण।

उपरोक्त पहलों की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, बोर्ड ने आगे यह विनिश्चय किया है कि निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन की स्कीम आगामी शैक्षिक वर्ष (2006-07) से ही माध्यमिक स्कूल स्तर पर (कक्षा 6 से 8 तक) आरंभ की जाएगी। विनिर्देशों के साथ सी.सी.ई. का प्रपत्र वेबसाइट तथा प्रिंट प्रपत्र दोनों के माध्यम से स्कूलों को शीघ्र ही उपलब्ध करा दिया जाएगा। यह स्कीम इसके साथ सभी शैक्षिक विषयों के लिए स्कूलों में आरंभ किए जाने वाली सात सूत्रीय ग्रेडिंग प्रणाली लेकर आएगी।

कच्चे प्राप्तांक (प्रतिशत में) सात सूत्रीय तथा उनके समतुल्य निष्पादन निम्नानुसार होगाः

ए+	90 और उससे अधिक
ए	81 से 89
बी+	70 से 79
बी	60 से 69
सी	45 से 59
डी	33 से 44
ई	33 प्रतिशत से कम

स्कूलों को उनके विद्यार्थियों के मूल्यांकन के उपरोक्त पैमानों को आरंभ करने की सलाह दी जाती है। यह प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक मूल्यांकन पैटर्न में तथा संबद्ध स्कूलों की मूलभूत एकरूपता को सुनिश्चित करने में भी सार्थक निरंतरता को बनाए रखने में समर्थ बनाएगी।

स्कूलों को यह और सलाह दी जाती है कि ये परिवर्तन स्कूल समुदाय में सभी पणधारियों की जानकारी में लाने चाहिए ताकि स्कीम का उद्देश्य तथा भावना को ठीक प्रकार समझा जा सके।

भवदीय,

(विनीत जोशी)
सचिव